१९६५ से प्रकाशित

अंक - चइत-जेठ

अंक-२९

भोजपुरी वार्ता

चइत-प्रतिपदा
२०८३

मूल्य ₹ 30

तिमाही - (अप्रैल-जून २०२६) • तिमाही - (चइत-जेठ २०२६)

(प्रगतिशील भोजपुरी समाज क सांस्कृतिक आ आर्थिक पुनर्जागरण क मुखपत्र)

प्रगतिशील भोजपुरी समाज का चाहत बा?

1. समान आर्थिक समस्या, समान आर्थिक सम्पदा, समान सांस्कृतिक विरासत की आधार पर भोजपुरी क्षेत्र के विशेष सामाजिक, आर्थिक इकाई के रूप में गठन।
2. भोजपुरी क्षेत्र के भोजपुरी भाषा, संस्कृति समेत सामाजिक आ आर्थिक विकास।
3. भोजपुरी भाषा के संवैधानिक मान्यता।
4. कृषि के उद्योग कऽ दर्जा।
5. अलग भोजपुर राज्य कऽ गठन।
6. अश्लील गीत-संगीत, विज्ञापन आ शराब पर प्रतिबन्ध।
7. भोजपुरी रेजीमेन्ट कऽ स्थापना।
8. प्रगतिशील भोजपुरी समाज भोजपुरी क्षेत्र के भौतिक, आधिभौतिक आ आध्यात्मिक सम्पदा कऽ अधिक से अधिक उपयोग आ विवेकपूर्ण ढंग से वितरण क के रोटी, कपड़ा, मकान, दवाई आ शिक्षा का गारंटी दिहल चाहता।
9. प्रवासी भोजपुरी क्षेत्र के मजदूरन के मौत पर राज्य आ केन्द्र सरकार द्वारा 10-10 लाख रूपया कऽ मुआवजा।
10. 100% रोजगार के सृजन के साथ आर्थिक लोकतंत्र क स्थापना।
11. निःशुल्क अउर एक समान शिक्षा आ चिकित्सा के व्यवस्था।
12. आयकर के खात्मा।

प्रगतिशील भोजपुरी समाज क सदस्यता लेके ए आन्दोलन से जुड़ी सभे।

भोजपुरी वार्ता

अप्रैल-जून २०२६
चैत प्रतिपदा
विक्रम संवत् २०८३, अंक - २९
(भोजपुरी के सामाजिक, सांस्कृतिक आ आर्थिक पुनर्जागरण कऽ मुख-पत्र)

प्रधान कार्यालय

प्रगतिशील भोजपुरी समाज
लेन नं०-३/१४, भक्ती नगर कालोनी,
पाण्डेयपुर, वाराणसी (उ.प्र.) २२१००२
मो० - ८८६३९६९८८८

ई-मेल :

bhojpuriwarta@gmail.com,
bhojpurivarta@rediffmail.com

संस्थापक संपादक

आचार्य प्रतापादित्य

संपादक

रवीन्द्र नाथ यादव
मो०- ७०८१११०९९०, ९४५०७७४२४१

सह संपादक

विकास तिवारी ''विक्की''
मो०- ७९०३९६५३८६

वितरण व्यवस्था

उत्तम कुमार

संचालन, संपादन

अवैतनिक आ अव्यवसायिक
दिल्ली ब्यूरो कार्यालय
ओम प्रकाश नारायण, ए-१८४/1
द्वितीय तल, टेलीफोन एक्सजेंच लेन
महिपालपुर, एक्सटेंसन, नई दिल्ली- ११००३७

क्षेत्रीय कार्यालय

धर्मेन्द्र यादव
ग्राम - डकीनगंज, पोस्ट - एकइल, जिला- बलिया (उ० प्र०) २२१७११
मो०-७०८१११०९९०

मुद्रक

मेगा प्रेस एण्ड ग्राफिक्स
बशारतपुर, गोरखपुर
मो0 7800333751
संजय कुमार शर्मा
ग्राफिक्स एवं डिजाइन
प्रकाशक - प्रोग्रेसिव फेडरेशन ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली

सहयोग राशि -
एक प्रति - 30/-
बैंक - प्रगतिशील भोजपुरी समाज
खाता नं. **360501010230476**
IFSC - UBIN - 0536059

एह अंक में प्रकाशित लेख आदि में व्यक्त विचार लेखक कऽ आपन मत हऽ। संपादक मण्डल कऽ ओसे सहमति भईल जरुरी नईखे। विवादके भइला पऽ सगरो विवाद कऽ निपटारा वाराणसी न्यायालय के अनतर्गत होई। -संपादक

भोजपुरी वार्ता – चैत शुक्ल प्रतिपदा (उन्तीसवां अंक)

एह अंक में

क्र.	सूची	लेखक/कवि	पृष्ठ संख्या
1.	सम्पादकीय– पागलपन पूँजीवाद के : विकल्प प्रउत के	रवीन्द्र नाथ यादव	3
2.	इतिहास के आइना में गोरखपुर	श्री प्रभात रंजन सरकार	4–6
3.	बिंदिया : पितृसत्ता बनाम नारी अस्मिता	जीतेन्द्र कुमार	7–10
4.	गीत नया गाई लें	जगत नारायण वर्मा	10
5.	इरान–इजराइल संघर्ष के बीच विश्व सरकार के आहट	विजय बहादुर यादव	11–12
6.	परजातंत्र क आन्ही	जे. एन. वर्मा	12
7.	चनवा	अवध विहारी मितवा	13–15
8.	जोंक	जे. एन. वर्मा	15
9.	तिलकहरू साला आयो रे	भगवती प्रसाद द्विवेदी	16–18
10.	मानव–धरम लापता	जगत नारायण	18
11.	The origin and development of Bhojpuri	नबीन कुमार	19–20
12.	भोजपुरी गजल	शंकर मुनि राय गड़बड़	20
13.	जीउतिया : (बलिदानी जीमूतवाहन के इयाद के परब)	शशी रंजन मिश्र	21–24
14.	सब कुछ बाटे अपने गउवाँ में	विकास तिवारी	24
15.	अखिल भोजपुरी साहित्य सम्मेलन	राहुल सांकृत्यायन	25–26
16.	भोजपुरी नॉव के महाभारत काल से जुड़ाव	पुरूषोत्तम दास मोदी	27–28
17.	आदमी लापता	जे. एन. वर्मा	28
18.	पेरेटो (सिद्धांत 80/20 के सिद्धांत) आ भोजपुरी	नवीन कुमार	29
19.	डोली	कृष्ण देव घायल	30–31
20.	समय बड़ा बलवान रे मनवा	श्वेता राय	31
21.	इतिहास के आइना में केसरिया स्पूत	राकेश कुमार रत्न	32
22.	प्रतिरोध	गिरिजा शंकर राय गिरजेश	33–36
23.	कथा गइल बन में	बलभद्र	37–40
24.	भोजपुरी गीत/आज के दर्पण (गजल)	योगेन्द्र पाण्डेय/ जौहर शफियावादी	40
25.	अंधविश्वास क समाजीकरण	आचार्य प्रतापादित्य	41–42
26.	आजादी क चीर	जगत नारायण	42
27.	भोजपुरी भाषा : उपेक्षा, संवैधानिक मान्यता आउर अमृत काल में अपेक्षा	नरसिंह	43–45
28.	भाषा : भोजपुरी	रामबहादुर राय	46–50
29.	परिणाम	जगत नारायण वर्मा	50
30.	'ई कइसन ठाट बनवले बाड़, ए मोती	डा. देवेन्द्र	51–53
31.	समाचार ' प्रउत जन–जन तक'		54
32.	समाचार – शत प्रतिशत रोजगार आ आर्थिक समानता के ले के प्रांउटिस्ट सर्व समाज क धरना		55
33.	समाचार – उपभोग सभ्यता के थका देला, उपयोग गरिमा देला		56

सम्पादकीय

पागलपन पूँजीवाद के : विकल्प प्रउत के

– रवीन्द्र नाथ यादव

आज के समय में दुनिया अजीब दौर से गुजर रहल बा। एक तरफ युद्ध, आर्थिक मंदी, महँगाई, जलवायु संकट, बेरोजगारी आ तकनीकी असंतुलन त दुसरी तरफ आम जनमानस के रोजमर्रा के जिनगी में बढ़त दुश्वारी। रोटी,कपड़ा,मकान से लेके शिक्षा, स्वास्थ्य आ सम्मानजनक रोजगार तक, हर चीज अब संघर्ष बन गइल बा। वैश्विक पूँजीवादी व्यवस्था मुनाफा के पीछे अंधा होके भाग रहल बा, आ नुकसान सीधा आम आदमी के माथे पड़ रहल बा। भारत के संदर्भ में देखल जाए त स्थिति अउरी संवेदनशील बा। अपार संसाधन, युवा जनसंख्या आ सांस्कृतिक विरासत के बावजूद असमानता बढ़ रहल बा। कुछ गिने–चुने हाथन में पूँजी के केंद्रीकरण, किसान के बदहाली, मध्यम वर्ग के दबाव आ गरीब तबका के अस्तित्व संकट ई सब बतावत बा कि मौजूदा आर्थिक–सामाजिक ढांचा संतुलित समाधान देवे में नाकाम बा।

एह हालात में सवाल उठत बा कि दुनिया आ भारत खातिर कवनो वैकल्पिक राह बा? जवाब प्रउत (PROUT) प्रोग्रेसिव यूटिलाइजेशन थ्योरी, व्यवस्था में दिखे लागत बा। प्रउत व्यवस्था उपभोग के नाहीं, उपयोग के दर्शन पर टिकल बा। जहाँ संसाधन के प्रगतिशील आ न्यायसंगत उपयोग होखे, न कि कुछ लोगन के ऐश खातिर बहुसंख्यक के शोषण। प्रउत कहेला कि हर आदमी के न्यूनतम आवश्यकता, भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा आ स्वास्थ्य, राज्य आ समाज के साझा जिम्मेदारी होखे के चाहीं। एह से आमजन के दुश्वारी सीधे कम हो सकेला। राजनीतिक इच्छाशक्ति के सवाल सबसे अहम बा। आज के नेता लोग अक्सर चुनाव, सत्ता आ कॉरपोरेट दबाव में फँस के दीर्घकालिक समाधान से कतराता। भारत में अगर सच में संतुलित विकास चाहत बानी त प्रउत के दिशा में ठोस कदम उठावे के होई, जइसे स्थानीय आर्थिक इकाई के मजबूत बनावल, सहकारी व्यवस्था के बढ़ावा, कृषि आ लघु उद्योग के संरक्षण आ नैतिक नेतृत्व के निर्माण।

प्रउत साफ कहेला कि अर्थव्यवस्था आदमी खातिर होखे, आदमी अर्थव्यवस्था खातिर ना। जब तक नीति निर्धारण में नैतिकता, करुणा आ विवेक ना आई, तब तक कानून आ योजना कागज पर ही सिमट के रह जाई। भारत के परंपरा में "वसुधैव कुटुम्बकम्" के भावना बा प्रउत ओही भावना के आधुनिक, वैज्ञानिक आ व्यावहारिक रूप देला। आज दुनिया के चैलेंज चाहे जलवायु संकट होखे, सामाजिक तनाव होखे या आर्थिक अस्थिरता, सब के जड़ असंतुलन में बा। प्रउत व्यवस्था संतुलन के बात करेला व्यक्ति आ समाज के बीच, उत्पादन आ वितरण के बीच, भौतिक उन्नति आ नैतिक विकास के बीच। अब जरूरत बा कि भारत के राजनेता आ नीति निर्माता संकीर्ण सोच से ऊपर उठ के साहसिक निर्णय लें। आमजन भी जागरूक बने, विकल्प पर सोचे आ सवाल पूछे। अगर इच्छाशक्ति मजबूत होई त प्रउत के निर्देशन में भारत ना सिर्फ अपना संकट से उबरी, बल्कि दुनिया खातिर भी एगो नई राह दिखा सकेला।

(इतिहास)

इतिहास के आइना में गोरखपुर

नाथ पंथ, बौद्ध मत आ शैव मत के मिश्रण ह। एकर प्रवर्तक मछेन्दर नाथ बंगाली राजकुमार रहलन । गोरखनाथ के जन्म स्थान अभी ले प्रमाणित नइखे । लेकिन इ प्रसिद्ध बा कि ऊ भोजपुरी भाषी क्षेत्र में ही कहीं पैदा भइल रहलन। इ बाति निर्विवाद रूप से सत्य बा । आमतौर पर इ विश्वास कइल गइल बा कि गोरखनाथ शिव के अवतार रहलन। इ शैव मत के प्रभाव के बतावत बा ।

आदि शंकराचार्य के बाद पौराणिक धर्ममत प्रचलित भइल। तब शिव, पौराणिक देवता के रूप में स्वीकृत भइल रहलें । गोरखपुर के आस–पास भोजपुरी आ संस्कृत दूनू भासा में तांत्रिक साहित्य मिल सकत बा। नाथ योगी लोगन द्वारा पुरान भोजपुरी ताड़ पत्र पर लिखल तांत्रिक साहित्य अभियो एह क्षेत्र में मिल सकत बा। नाथ योगी जनगीत आ कहाउत पुरान भोजपुरी में गावत रहें ।

नाथ मठन के पुरोहित लोगन के जाति पहचान पौराणिक प्रभाव पर निर्भर रहे। जहाँ–जहाँ पौराणिक मत के प्रबलता रहे उहाँ के पुरोहित ब्राहमण होत रहें। लेकिन जहाँ इ प्रभावी ना रहे उहाँ कवनो जाति के कवनो आदमी पुरोहित हो सकत रहे ।जोशी लोग बौद्ध पुरोहित रहे। बाद में उनके ब्राह्मण के दरजा दिहल गइल। जोशी लोग गोरा रंग आ औसत ऊँचाई के होत रहें। नाथ पंथ बौद्ध मत से रुपान्तरित होके ओकर उप अंग बनि के आगे बढ़ल एकरा अलावा गोरखनाथ, मछेन्द्रनाथ के बीच वैचारिक विरोधो रहे। मछेन्द्रनाथ नेपाल में नाथ पन्थ के प्रचार कइलें आ बाद में कामरूप चलि गइले। गोरखनाथ नेपाल गइले आ उहाँ रहे वाला भारत–तिब्बती जनजातिन के बीच एगो नया गोरखपन्थी समुदाय तयार कइले । काशी से लेके असम तक के बड़हन क्षेत्र पर नाथ पन्थ के केन्द्र फइलल रहलन स। बिहार के भागलपुर में नाथनगर कसबा नाथपन्थ के सबसे शक्तिशाली केन्द्रन में से एगो रहे। नाथ प्रत्यय से जुड़ल बहुत से गाँव एह क्षेत्र में मिल सकत बाड़े। एह धर्ममत के अनुयायी नाथ या देवनाथ पदवी अपनवले रहें। हालाकि कुछ नाथ सम्प्रदायी सामाजिक रूप से बहिस्कार के शिकार भइल रहे। काशीराज में जाति चेतना ओतना शक्तिशाली ना रहे। कायस्थन के बीच मुंशी पदवी वाला लोग नाथ समर्थक रहलें आ अखौरी पदवी वाला लोग शैव समर्थक।

भरथरी (भतृहरि) एगो शक्तिशाली राजा रहलें आ महाननाथ योगी। उ भोजपुरी में बहुत से गीतन के रचना कइले रहलन। 800 से 900 वरिंस पहिले के एह भोजपुरी गीतन से बनल समृद्ध भोजपुरी साहित्य के नाथ पन्थ की भवन से प्राप्त पत्रन से भी एकत्रित कइल जा सकत बा। गोरखनाथ आ भतृहरि के दोहा आ उक्ति भोजपुरी साहित्य के मूल्यवान स्रोत ह। इनके बटोर के छपाये के चाही। इहे पर्याप्त प्रमाण होई कि भोजपुरी एगो पूरा विकसित भासा ह खाली बोली नाहीं । भोजपुरी भासा लगभग 1200 साल या ओइसे अधिका साल पुरान ह।

भोजपुरी एगो अत्यन्त विकसित भासा ह। एकर–चार गो बोली बाड़ी स–खड़ी, चम्पारणी,

डुमरावी, आ कासिका । डुमरावी बोली के मानक भोजपुरी के रूप में स्वीकृत होखे के चाहीं।

गोरखपुर जब काशीराज में शामिल भइल तब भोजदेव एकर सबसे प्रसिद्ध राजा में से एगो रहलन। ऊ ब्राह्मण रहलन आ बहुते बड़ विद्वान । ऊ सांख्य दर्शन पर जवन टीका लिखले रहे उ उनकर पाण्डित्य के प्रमाण स्वरूप व्यापक रूप से स्वीकृत भइल। एइसे कुछ ब्राह्मण लोग एतना इर्ष्या करे लगलन कि उनका खिलाफ आन्दोलन शुरू क दिहले जवना कारण दूगो समूह उभर के सामने आइल–कट्टर समर्थक आकट्टर विरोधी । जे लोग भोज के समर्थन कइल ओह लोगन के उनकी जाति से बाहर क दियाइल । उ लोग राई पदवी अपना लिहल ।'राई' संस्कृत शब्द ''राजा'' से व्युत्पन्न ह । मागधी प्राकृत में इ 'राय' हो गइल तथा अर्ध मागधी प्राकृत में इ राई हो गइल। कुछ लोग 'राई' कहेलें जइसे रघुराई में बा ।

'राई' भूमिहारन की एगो समूह के पदवियो ह ।2000 साल पहिले केहू भूमिहार लोग ना रहे। लेकिन आज ऊ सब लोग सगरे ब्राहमण पदवी जइसे पाण्डेय, दूबे, तिवारी आदि के प्रयोग कइले । राजा भोज के पत्नी भानुमती एगो तांत्रिक रहली। ऊ एक तरह के जादू, जादूगरी या बाजीगरी शुरु कइले रहली। बाजीगर पहिले एगो संस्कृत शब्द रहे जवन बाजीकर शब्द से विकसित भइल ।कार एगो फारसी प्रत्यय ह जइसे कि कारखाना, कारीगर आं बेकार शब्दन में प्रयुक्त भइल बा । भोजवाजी आ ''भानुमती के पिटारा''जइसन शब्द भोजपुर के प्रसिद्ध रानी भानुमती के कारण चर्चित भइल ।

बाद में राजा भोज कासी त्याग करके बिहार के भोजपुर जिला में भोजपुर नामक जगह पर खुद के सुव्यवस्थित कइलें । ऊ काशी जइसन प्रसिद्ध आंध्यात्मिक सांस्कृतिक स्थान से आपन रजधानी हटावे के निर्णय लिहलन काहे कि काशी में बहुत से लोग दूर–दूर से हमेशा आवत रहे।

1200 साल पहिले प्रयाग में ब्राहमणन के एगो सभा भइल। एह सम्मेलन में ब्राहमणन के दू गो वर्ग उभर के सामने आइल–एगो काशी से दूसर कौशल से, एह दूनू वर्गन से मिला के एगो तीसर वर्ग भी बनल जेकरा के कान्यकुब्ज वर्ग से जानल गइल। एह सम्मेलन में गौड़ीय ब्राह्मण के (उत्तर भारतीय) पांच गो भाग स्वीकृत भइल–

1. कश्मीर आ पंजाब के सारस्वत बाहमण
2. पंश्चिमी आ पूर्वी उत्तर प्रदेश के कान्यकुब्ज ब्राह्मण
3. राजस्थान आ दक्षिण पंजाब के गौड़ ब्राह्मण
4. मिथिला के मैथिल ब्राह्मण
5. गुजरात के नागर ब्राह्मण (नागर लिपि के अविस्कारक)

द्रविड ब्राह्मणन के पाँच गो भाग रहे। हालांकि ब्राहमणन की इ उत्तरी आ दक्षिणी वर्गन के बीच विवाह निसिद्ध रहे, फिर भी, इहे दस गो वर्ग ही स्वीकृत ब्राहमणन के मानल गइल। बुद्ध के समय एह तरह के कवनो बंटवारा ना रहे। ओह समय बुआ के बच्चन के बीच शादी स्वीकृत रहे। सिद्धार्थ के पत्नी यशोधरा उनकर ममेरी बहन रहे ।एह तरह के विवाह प्रयाग सम्मेलन से निषिद्ध भइल ।

तथ्यात्मक वर्णन या सामान्य इतिहास से 'इतिहास' बहुत भिन्न ह। 'इतिहास' शिक्षाप्रद होला ''इति हसति इत्यर्थे इतिहासः'' इतिहास–चर्चा करेला कि कवनो विशेष घटना काहें घटित भइल । आ ओकरा परिणाम के भी चर्चा करेला अर्थात सामाजिक इतिहास । प्रयाग जइसन सम्मेलन इतिहास के ज्वलन्त उराहरण बा काहे कि इ प्राचीन परम्परा के दर्शावेला जेकर परिणाम व्यापक होला । इतिहास के अध्ययन जनता के बीच चेतना पैदा करेला। तब उनकर इतिहास उनकी गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत के प्रति जानकार बनावेला । काशीराज के सांस्कृति विरासत बहुते गौरवशाली रहे। काशीराज में गोरखपुर चाहे अउर कहीं सांस्कृतिक पुरातात्विक संग्रहालय के स्थापना होखे के चाहीं।

राजा प्रसेनजीत के समय काशी आ कोसल पृथक राज्य ना रहे । भारत में इस्लाम के लोक प्रचार के बाद हिन्दू आ मुसलमान के संस्कृति आ परम्परा एक दूसरा के बहुत निकट हो गइल जइसे यह दूनू समुदायन के औरत रंगीन चूड़ी पहिनेली तथा इ देखावे खातिर कि उ विवाहित बाड़ी

सिर पर सिन्दूर के प्रयोग करेली ।राजस्थान के अलवर रियासत में कुछ राजपूत परिवार जे आपन धरम बदलि के मुसलमान बन गइल रहे उ 'मेयो राजपूत' के पदवी अपना ले ले रहें। मेयो राजपूत शब्द मियाँ राजपूत से बनल ह। एकरा अलावा ऊ लोग अपना नाम की साथ उपाधि की रूप में सिंह शब्द के व्यवहार करेला। उदाहरण की तौर पर इकबाल सिंह, अलीबक्स सिंह आदि।मेयो राजपूत लोग हिन्दू विवाह विधि के मानेलें।एह विवाह विधि के बाद उनकर निकाह मौलवी के द्वारा मुस्लिम रीति से विधिवत होला।उ लोग आपन वैवाहिक रिस्ता खाली मेयो तक ही सीमित राखेलें। हिन्दू आ मुसलमान में भाषाइयो सम्बंध बहुते घनिष्ट ह। भारतीय मुसलमान आ हिन्दू के मातृभाषा उर्दू आ हिन्दी ना रहे काहें कि दूनू ही समुदाय के लोग अपना–अपना क्षेत्र में भोजपुरी, अवधी, पंजाबी, अंगिका आदि बोलेलें । भारत में इस्लाम क प्रसार के बाद सांस्कृतिक समिश्रण आ परिवर्तन भइल लेकिन बाद में हिन्दू आ मुसलमान के बीच सांस्कृतिक सम्बंध मजबूती से बढ़त गइल।एकरा अलावा जाति व्यवस्था छूआछूत जइसन सामाजिक बुराई हिन्दू लोगन के बीच फइल गइल आ मुसलमानो सामाजिक असहिष्णुता से ग्रसित भइल ।ब्रिटिश साम्राज्यवाद भारत में हिन्दू आ मुसलमान के बीच 'फूट डालऽ आ राज करऽ' के नीति अपना ले ले रहे। अपना साम्राज्यवाद के आगे बढ़ावे खातिर ही अंग्रेजन द्वारा साम्प्रदायिकता से लाभ उठावल गइल। जातिगत रूप से हिन्दू आ मुसलमान में एक जइसन रंग–रूप ह आ उनकर शारीरिक बनावटो एक जइसन ह।उदाहरण खातिर गुजरात में हिन्दू ब्राहमण, वैष्णव आ जैन तथा मुसलमान खोजा, शिया, सुन्नी लोगन के शारीरिक बनावट एकही जइसन ह। उ लोग पान की पत्तई जइसन चेहरा आ गोल सिर वाला आर्य लोग ह। शिया लोग फारस से आके भारत में बसल रहे। उनकर भाषा उर्दू ह ।भोजपुरी क्षेत्र के सुन्नी लोग भोजपुरी बोलेले भारत में सगरी समूहन के बीच समानता आ सजातीयता के आधार पर सगरी देश के एगो बड़हन पर्यवेक्षण भिन्न–भिन्न स्थान पर जातियन के व्यापक समिश्रण प्रकट करी। अगर भारतीय इतिहासकार हमरी भारतीय प्राचीन संस्कृति के विकास के प्रभावित करे वाला सगरो तत्वन के समझ ले ले रहिते तऽ दूंगो राष्ट्र के सिद्धान्त कबो स्वीकृत ना भइल रहित हालाकि इहाँ के इतिहास, परम्परा आ संस्कृति हिन्दू आ मुसलमानन के बीच निकट सम्बंध दर्शावे ला। तबो एह समुदायन के भीतर आ बीच के विभिन्नता भी मौजूद भारत में समृद्ध संस्कृति क विरासत ह। उदाहरण के तौर पर, एकही समुदाय में धार्मिक कर्मकाण्ड आ उच्चारण में भिन्नता बा ।काशी के बहुत से ब्राहमण लोग ऋगवेदी ह, जबकि कोशल के ब्राहमण यजुर्वेदीय। उनके पूजा पाठ के मुद्रा आमंत्र पाठ के विधि भी एक दूसरा से भिन्न बा ।राढ़ आ पश्चिम बंगाल के ब्राहमण भी दू समूह –''सामवेदी आ बारेन्द्री'' से सम्बंध राखेला ।का पात्र भिन्नता के कारण ही उनके और भी जाति, उप–जाति में बँटे के चाही? सांस्कृतिक अभिव्यक्ति में भिन्नता लोगन के विभाजित कइला की अपेक्षा उनके मजबूती से संगठित करेले। भारत की इतिहास के उचित समझ आ मजबूत एकीकृत सांस्कृतिक विरासत लोगन के सिखाई कि एह समुदायन के बीच आ अन्दर के भिन्नता खाली पृष्ठीय ह। अन्तः भूमि के एकता भारतीय लोगन के एक साथ बान्हेले ।

भारतीय सभ्यता के इतिहास संश्लेषण आ सांस्कृतिक समिश्रण से विशिष्ट गुणयुक्त हो जात ह। भारत अभी ले बनल बा काहे कि इ आदान–प्रदान के सिद्धान्त के अनुसार विकसित भइल ह ।कम से कम पिछला 5000 साल से मानवता के अर्न्तभूमिक प्रवाह के व्यक्त करत बहुते परिवर्तन की साथ जी चुकल बा। लचीलापन के बिना भारत एतना दिन तक जी ना पाइत आ मिश्र तथा दोसर पुरान सभ्यतन की तरह मिट गइल रहित।

– श्री प्रभात रंजन सरकार

गोरखपुर, 29 जनवरी 1984

(समीक्षा)

बिंदिया : पितृसत्ता बनाम नारी अस्मिता

''बिंदिया'' भोजपुरी भाषा के पहिला उपन्यास ह जवन आजादी के नौ बरिस बाद 1956 ई. में प्रकाशित भइल। एकर रचनाकार रामनाथ पाण्डेय हिंदी आ भोजपुरी दूनों भासा में प्रचुर लिखने बानीं। भोजपुरी साहित्य में ''बिंदिया'' उपन्यास के ऐतिहासिक महत्व बा काहे कि ई भोजपुरी भासा के पहिला मौलिक उपन्यास ह।एकर दोसर महत्व उपन्यास के आधुनिकतावादी कथावस्तु के कारण बा जेकर कथा–नायिका ग्राम्य–परिवेश के होखलो पर पितृसत्ता के इच्छा के विपरीत मनपसंद युवक विआह खातिर स्वीकार करत बिया। तीसर महत्व बा कि धर्म–सत्ता के प्रतिनिधि उपरोहित के धार्मिक ठगी के भरपूर उपहास आ परदाफाश बा। एह सबसे उपन्यासकार रामनाथ पाण्डेय के कथा–दृष्टि उल्लेखनीय बा काहे कि आजादी के बाद भारतीय ग्राम्य–समाज के माइंड सेट भारतीय संविधान के अधिगृहित भइलो पर वर्णाश्रयी मोड़ में संचरित रहे। उपन्यास के कथा–नायिका किसान पुत्री बिंदिया नारी–अस्मिता आ विवेकशील बुद्धि के प्रतीक बिया। बिंदिया के पिता कोदई कवनों जमाना में गाँव–जवार के मातबर किसान रहन। एगो बड़का दहार में उनकर घर–मकान दह–बह गइल, घरनीयो मरि गइली। अब परिवार में बेमार कोदई आ उनकर सेयान कुंआर बेटी बिंदिया बाँचल बिया। बेमार कोदई वर्णाश्रयी बेवस्था के पोषक आ पितृसत्ता के प्रतीक बाड़न।

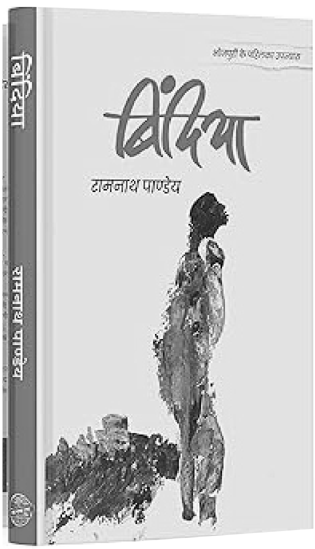

कथा–नायिका बिंदिया के सिरजना उपन्यासकार रामनाथ पाण्डेय आधुनिक कथा –दृष्टि से कइले बानीं। उपन्यास बिंदिया के पढ़ाई–लिखाई के बारे में मउन बा। गाँव–जवार में कवनो विद्यालय–महाविद्यालय के उल्लेख नइखे उपन्यास में जहाँ कथा–नायिका बिंदिया शिक्षा ग्रहण करत होखे। ऊ स्त्री–स्वत्वाधिकार खाती संघर्षरत कवनों नारीवादी आंदोलन से नइखे जुड़ल। विआह के प्रसंग में बिंदिया द्वारा पितृसत्ता के इच्छा आदेश के अवमानना परिस्थितिजन्य बा। जवना परिस्थिति में ऊ बेमार पिता कोदई के आदेश के पालन करे से मना करतिया, ओकरा अवहेलना के समर्थन में पाठक के संवेदना बा। कवनों अक्षम अशक्त बाप समझदार–गुनवान सुन्नर बेटी के विआह जदी कवनों आवारा लुहेंड़ा से तय क देला त समाजो ओकरा के गरिआवला। आवारा झमना के वर रूप में स्वीकारे खातिर कथा–नायिका सुभेख–सुन्नरी तइयार नइखे। पितृसत्ता के प्रतीक कोदई के बौखलाहट दृष्टव्य बाः 'जमाना केतना बदल गइल बा। हमनी के जवना घरी विआह भइल ओ घरी केकरो से ई मामला में मुँह खोले के हियाव ना करत रहे। .... जबान से केकरो ई कहे के हिआब ना रहे कि हम फलाना से विआह ना करब, चिलाना से करब। बाकिर आज त बेटा के के कहो, बेटियो कहतिया। राते बिंदिया साफे कह देलस, हम झमना से विआह ना करब..... सुनत रहनी ह सहरे के लइकी सभ आपन बिआह अपना मन से करतारीस, बाकिर रात त ऊ बात हमरे घरे सुनाई पर गइल'' कोदई के

मुँह से इ सुनके, 'सुनत रहनी ह सहरे के लइकी सभ आपन विआह अपना मन से करतारीस', उत्तरप्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री सुचेता कृपलानी के विआह के पहिले सुचेता मजूमदार रहली आ बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में संवैधानिक इतिहास के प्रवक्ता रहली। ऊ अट्ठाइस बरिस के उमिर में अड़तालीस वर्षीय प्रोफेसर जे.बी. कृपलानी से 1936 में प्रेम विआह क लेली। महात्मा गाँधी एह बिआह के खिलाफ रहले। ई सुखद संजोग बा जे उपन्यासकार रामनाथ पाण्डेय जी बनारस में भारतीय रेल विभाग में पदस्थापित रहलीं। एह प्रसंग में विजयलक्ष्मी पंडित आ भूतपूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के प्रेम बिआह के इयाद कइल जा सकता। पितृसत्ता के प्रतीक कोदई के सहर के घटनन के बारे में जानकारी बा। ऊ ओह आधुनिक हवा के गांव में ना बहे दिहें। कथाकार के संवेदना पितृसत्ता के खिलाफ बा। ऊहाँ के 'आपन बात' में कथा–नायिका बिंदिया के प्रति अपना संवेदना के इजहार कइले बानीं: ''का समाज का हाल ईहे रही? बिंदिया जुग जुग से असहीं घर से भागल करी? ओकरी पर अकलंक लागते रही? अपना सभ्यता पर गुमान करे वाला समाज जब से होस सम्हरले बा तब से आज ले 'बिंदिया' जस के तस छपिटा रहल बिया।''

रामनाथ पाण्डेय जी बहुत कम कथा–पात्रन के सहारे 'बिंदिया' उपन्यास के कथानक गढ़ले बानीं। मुख्य कथा पात्र बाड़न किसान कोदई, बिंदिया, बुधराम, पदारथ भगत, झमना, पं. बुझावन तिवारी, मँगरा, रघूआ, रमेस। मात्र नौ गो पात्र के सहारे उपन्यास के सिरिजना खड़ा बा। एगो स्त्री पात्र बिंदिया। परिवार सब न्यूक्लीयर। कोदई के परिवार में बाप–बेटी, पदारथ भगत के परिवार में बाप–बेटा। उपोरोहित पंडित बुझावन तिवारी के पंडिताइन अलोत बाड़ी। मँगरा बुधराम परिवार में अकेले। कोदई, बिंदिया, मँगरा के अंतरंग चित्रण से ओकनी के एगो चरित्र पाठक के सामने उभरता।

पहिला अध्याय में अतीत दीप्ति में कोदई के संक्षिप्त जीवन–वृत्तांत लउकता। उनकर जवानी के वर्णन बा। ऊ अपना सुन्नर तिरिया के बहुते पेयार करत रहस। सावन भादो में अलकतरा अइसन कुचकुच अन्हरिया में, जब अकास में बदरी के लमहर लमहर झुण्ड जूझत रहे, हाथी खानी चिघड़त रहे, बिजली तड़क तड़क के करेजा डोलावत रहे तबो ऊ अपना खेत में डटले रहस। उनकर मेहर खेत के ओह पार से माथा पर उनकर खाये के गठरी ले जात रही। कोदई के अपना पत्नी से खूब पेयार बा। कोदई इहो इयाद करत बाड़न कि जब उनकर बिआह ना भइल रहे तब गाँव के मुनिया से उनकर रोमांस चलत रहे। मुनिया खातिर कोदई गाँव के राजा बाबू से लड़ गइल रहन। ऊ मुनिया भरले जवानी में मरि गइल। ऊहे कोदई बुढ़ारी में सड़क के किनारे फूस के एगो झोंपड़ी के सोझा बँसखट पर ओठंगल बाड़न। रामनाथ पाण्डेय जी कोदई के जीवन–वृत्तांत से किसानी जीवन के जियतार चित्रण नीमन गद्य में कइले बानीं।

बिंदिया के मूल–कथा बा कि कोदई जवानी में गाँव–जवार के एगो मेहनती मतबर किसान रहलन। भयंकर बाढ़–दहार में उनकर घर–दुआर, पेयारी तिरिया खतम हो गइली। बेटी बिंदिया आ ऊ बाँच गइलन। किसान के निष्ठुर प्रकृति के कतना झेले के पड़ेला। कोदई दोसर बिआह ना कइलन। बलुक दमा के रोगी हो गइलन। आँख के रोशनी कमजोर हो गइल। बिंदिया सेयान हो गइल। खेती बारी बिंदिया के कान्हा पर आ गइल। जवानी के दिन के मजूर बुधराम के सहयोग–साथ बा, बाकी ऊहो बुढ़ा गइल बाड़न। गाँव के लोगन के धेयान कोदई के खेत–खरिहान पर बा। पदारथ भगत के आवारा बेटा झमना साजिश से बिंदिया से बिआह क के कोदई के धन हड़पल चाहता। ऊ राह–रास्ता में बिंदिया से छेड़खानी करता। ऊ गाँव में बिंदिया के चाल–चलन के शिकाइत करत बा। ऊ बाप कोदईयों से बिंदिया के चरित्र हनन करता। पूरा उपन्यास संवादपूर्ण आ नाटकीय शिल्प में बा। लेखकीय हस्तक्षेप बहुत कम बा। छोट–छोट संवाद से कथानक के विकास होता।

अस्मिताबोधी बिंदिया बेवहार कुशल युवती बिया। रामनाथ पाण्डेय जी बिंदिया के रूप में पुरुष सत्ता से स्वतंत्र समर्थ नारी–चरित्र के सिरिजन कइले बाड़े। स्त्री के मानसिक क्षमता पुरुष से तनिको कम ना होला। उपन्यास के कथ आ कथानक अपना

समय के अतिक्रमण करता, एही से एकर जादे महत्व बा।कोदई बिंदिया से पूछत बाड़न कि ''फसल बचाव के कवन उपाय कइले बाड़े?'', बुधराम काका खेत में सुतीहन। घर के देखरेख मंगरा करी। ओकरा में दायित्वबोध बा, सामाजिक चेतना बा। ऊ बाबू के गाँव के यथार्थ से अवगत करावत बिया, गाँव भर के आँख अपने खेत पर लागल बा। कवन ठेकान कब केकरा मन में चोर बस जाये आ पाके के पहिलहीं काट ले।..... दुनिया के इहे दस्तूर बा, कमजोर पा के सब सतावला ।

रामनाथ पाण्डेय बिंदिया के रूप में एगो अइसन नारी–चरित्र सिरिजले बाड़न जवना में समय–चेतना लबालब भरल बा।ऊ भारतीय गाँवन के द्वंदात्मक यथार्थ से परिचित बिया – काका, सभे गाँव के पहिले सरग बूझत रहल ह। ओ में रहे वाला देवता समझत रहल ह, ऊहे गाँव अब नरको के कान कटले बा।बिंदिया नारीवादी चेतना से आगे के नारी ह।ओकरा में सामाजिक ऐतिहासिक चेतना बा।

आधुनिक समाज बिआह के व्यक्तिगत मामला माने खातिर तइयार हो रहल बा, बाकी पुरुष वर्चस्ववादी पितृसत्तावादी मानसिकता ग्रामीण सत्ता से ले के राष्ट्रीय सत्ता पर हावी बा। पितृसत्ता प्रेम विआह के एकदम खिलाफ बा।प्रेमी–युगल के ऑनर किलींग हो रहल बा। रामनाथ पाण्डेय जी के प्रश्न बा कि 'बिंदिया' जुग जुग ले असहीं भागल करी?'' (बिंदिया) उपन्यास के धुरी एही सामाजिक–सांस्कृतिक प्रश्न पर टिकल बा। बिंदिया स्वतंत्र – चेता नारी के प्रतीक बिया। बिआह के मूल्य पर ऊ पिता से संबंध विच्छेद नइखे कइल चाहत। बेमार पिता के सेवा–सुसुरसा के दायित्व से भी मुक्त भइल नइखे चाहत। ऊ बिआह के मामला में पिता के एकाधिकारवादी रवइया के समालोचक बिया।पिता तर्क देताड़न कि ''आँख के सोझा राखे खातिर तोहार बिआह झमना से करतानीं।'' बिंदिया पितृसत्ता के आदेश खारिज क देतिया, ''हम झमना से बिआह ना करब।'' ओकरा में अतना नैतिक बल बाकि ऊई बात गाँव के सोझा कह सकली: ''हम त ई गाँव भर के सोझा कहब'' मंगरा कोदई एके जात के बा। ऊ आन गाँव के ह। झमना गाँव में प्रवाद फयलवले बा कि बिंदिया मंगरा से फंसल बिया। कोदई बिंदिया के बिआह मंगरे से काहे नइखन कइल चाहत? उपन्यास एह प्रश्न के जवाब नइखे देत। शायद एह से कि आपन जात होइलो पर मंगरा कोदई के बनिहार ह।

बिंदिया में प्रत्युत्पन्नमतित्व बा। संकट में परल जिनिगी से अपना के उबार लेवे के क्षमता बा। रात बीतते कोदई ओकरा के आवारा झमना के सउंप दिहें। जिनिगी भारी लफड़ा में परी जाई। बिंदिया सटीक निरनय लेतिया कि अब मंगरा साथे गाँव–घर छोड़ि के भागहीं परी।

'बिंदिया' के कथानक में प्रेम–कथा से जादे ओह सामाजिक संरचना के वर्णन बा जवना में बिंदिया जइसन स्वतंत्र चेता अदमी के जीये मरे के बा। आजादी के बाद बनल संविधान में एग्गो जनतांत्रिक समाज बनावे के संकल्प रहे, बाकी गाँव–समाज के माइंड सेट अतीतवादी बा।एह तथ्य के उपन्यासकार रामनाथ पाण्डेय जी 'बिंदिया' में रेखांकित कइले बानीं। जब बिंदिया खेत में से मटर के ढेंढ़ी बाबू (कोदई) के देतिया त ऊ कहत बाड़े, जो एमे थोड़का उपरोहित जी के दे आव। खेत के नया अन्न पहिले बाभन के मुँह में पड़े के चाहीं एक दिन उपरोहित बुझावन तिवारी पदारथ भगत के प्रेरणा से कोदई लगे आवताड़न। बेमार कोदई खटिया पर से उपरोहित के सम्मान में उठ नइखन पावत। कोदई पाप–बोध से ग्रस्त हो के कहत बाड़े: ''ले बाभन बिसुन के सोझा खटिया पर ना बइठनी। आज ऊहाँ के घरो में अइला पर हम पड़ल बानीं

'बिंदिया' में रामनाथ पाण्डेय जी उपरोहित बुझावन तिवारी के धुरतई, ''षडयंत्रकारी लालची सोभाव के नीके तरी परदाफाश कइले बानीं। उपरोहित झमना के बिआह बिंदिया के करावे के साजिश में शामिल हो जाताड़न। बिना कुंडली मिलवले कोदई के मूर्ख बनावत बाड़न: '' ...अठारहो पुरान से अठारे बेरी गननी हं, बाकिर वाह रे लगन, हर बेरी एकेगो न उचरता ''कथाकार पाण्डेय जी उपरोहित बुझावन तिवारी के अंतरंग के झलक देखले बानीं।कोदई से बिंदिया–झमना के बिआह के सहमति मिल गइल बा। बुझावन तिवारी के निजी

सवारथ देखीं, ऊहां के चाहे लगनी जेतना जल्दी होखित धउड़ के भगत के आपन जीत के खबर सुना अइतीं। कहतीं– देख तू नू कहत रहल ह, चउधरी ना मनिहें। आरे जवना काम में पंडित बुझावन तिवारी के हाथ लाग जाई, ओकरा के होखे से भगवानों ना रोक सकतारन।'' ऊ कोदईयो के मरदानगी क अइसन बखान कइलन कि आपन फीस पचीस से पचास करा लेलन आ पंडिताईन खातिर एक थान गहना गच्छवा लेलन।

उपन्यास में गरीब आ अमीर के गवाही पर सामाजिक न्याय के आलोचना रामनाथ पाण्डेय जी कइले बानीं। बिंदिया के पाक चरित्र के बारे में बुधराम काका के कवनों भ्रांति नइखे। ऊ रात–दिन ओकरा संगे रहले। उनकर आँख धोखा ना खा सके। बाकिर कोदई के कथन बा, ''साँच बोले वाला गरीब रोज लतिआवल जालन स। तोहार बात के केहू साँच ना मानी। गरीब के झोपड़ी से साँच बोलेवाला केतना मू गइलन बाकिर साँच बोले में नावं भइल त जुधिष्ठरे के। काहे से कि ऊ राजा रहस।'' कथाकार के जुधिष्ठिर के सत्यवादिता पर संदेह नइखे। बाकी जुधिष्ठिरे एगो सत्यवादी न रहन, उनुका अलावे कई गो गरीब लोग भी बुधराम लेखा सत्यवादी बाड़न। बाकी इतिहास–पुरान उनकर जिक्र ना करे। रचनाकार के संवेदना स्पष्टत: गरीब मेहनतकश आदमी के प्रति बा: समतावादी वेवस्था के प्रति बा। रामनाथ पाण्डेय के कथा–दृष्टि पितृसत्ता बनाम नारी अस्मिता के द्वंद्व में नारी के स्वतंत्रता–चेतना के प्रति बा।

– जितेन्द्र कुमार

गीत नया गाई लें

हम गीत नया गाई लें।
जब पीर पिघलेली मन क
ओके सहि नाहीं पाई लें
हम गीत नया गाई लें।
जब सम्मान मिलेला झूठा के,
सच्चा के मुँह पर ताला होखे।
ममता के कैद में राखल जा,
समता के देश निकाला होखे
ई देखि के जब मन अकुलाता
हम आपन फर्ज निभाई लें। हम.....जब
कपट छल–बल हावी होके,
सच्चाई के नाच नचावे लें।
अच्छाई क होला तिरस्कार,
पाखण्डी, ढोंगी इज्जत पावें लें।
तब अपनी दुखित कलम के हम
कुछ लिखि के धीर धराई लें। हम.....जे
भरल बाटे सगरी अवगुन से,
ऊ सबके गुन क सीख सिखावे लें।
जब जुगनू उड़–उड़ सूरज के,
चमकला क कला सिखावे लें।
मन, क्षोभ, ग्लानि से भरि जाला
मनही मन बहुत पछताई लें। हम.....
जब सबल सतावें लें निर्बल के,
जेकरी खातिर कवनो न चारा बा।
जे सगरी जगह ठुकरावल बाटे,
उनके केहू क कवनो न सहारा बा।
अईसन देखि दुखित मन में
करुणा क अथाह भाव गुहराई लें। हम......
जब प्रेम क अमृत कहि करके,
जहर क प्याला सामने धरेला।
आसा मान–मर्यादा आ निष्ठा के,
केहू भी, केहू क जब घायल करेला।
तब छन्द आ गीत क संजीवनी लेके,
घायल हृदय पर मलहम लगाई लें। हम....

– जगत नाराण वर्मा

(आवरण कथा)

इरान - इजराइल संघर्ष के बीच विश्व सरकार के आहट

आज के समय में ईरान आ इजराइल के बीच बढ़त तनाव खाली दू देश के मामला ना रहल, बल्कि ई पूरा दुनिया के अस्थिरता के संकेत बन गइल बा। जइसे आदमी के व्यक्तित्व पर प्रकृति, परिस्थिति आ परिवेश के गहरा असर पड़ेला, ओइसहीं देशन के नीति आ व्यवहार पर भी ऐतिहासिक, आर्थिक आ सांस्कृतिक कारकन के प्रभाव साफ झलकेला।

आज के दौर में सवाल उठत बा – जब दुनिया में संसाधन के कमी नइखे, त संघर्ष काहे? जवाब साफ बा – मानसिक दिवालियापन आ वर्चस्व के लालसा।

संघर्ष के जड़ : वर्चस्व आ पूंजीवादी मानसिकता

दुनिया के ताकतवर देश, खासकर संयुक्त राज्य अमेरिका, लंबा समय से वैश्विक राजनीति में अपना प्रभुत्व बनवले रखे के कोशिश करत आइल बा। हथियार उद्योग, रणनीतिक हित आ आर्थिक वर्चस्व – ई सब मिल के एक तरह के "युद्ध–उद्योग तंत्र" बना देले बा।

ई तंत्र के भीतर : • युद्ध के माहौल बनावल जाला • हथियार के आपूर्ति बढ़ावल जाला • आ फेर "शांति दूत" बनके हस्तक्षेप कइल जाला। एह प्रक्रिया में मानवता कहीं खो जाला।

वैश्विक घटनाक्रम के परस्पर प्रभाव – आज के दुनिया में अलग–थलग कुछो ना रह गइल बा। अगर कहीं जंग छिड़ेला, त ओकर असर तेल के दाम से लेके आम आदमी के रोजी–रोटी तक पड़ेला।

ई बात साबित हो चुकल बा कि – ''अगर एक देश में पत्ता गिरेला, त ओकर आवाज दुनिया भर में गूंजेला।"

षड्यंत्र, समय आ सवाल – कई लोग ई भी मानत बा कि कुछ वैश्विक घटनाक्रम – चाहे ऊ राजनीतिक होखे या सामाजिक – के समय (Timing) हमेशा संदेह के घेरे में रहेला। जइसे कि जेफ्री एप्सटीन से जुड़ल विवाद के बाद अचानक बढ़त अंतरराष्ट्रीय तनाव पर भी सवाल उठावल जा रहल बा। हालांकि, ई मुद्दा अभी बहस के विषय बा, लेकिन एक बात साफ बा ।

☞ "सत्ता आ प्रभाव के खेल में सच्चाई अक्सर धुंधला जाला।"

विश्व युद्ध के आशंका– ईरान – इजराइल संघर्ष अगर बढ़ल, त ई केवल क्षेत्रीय युद्ध ना रह जाई, बल्कि तीसरा विश्व युद्ध के रूप ले सकेला। आज के परमाणु हथियार से लैस दुनिया में ई स्थिति बेहद खतरनाक बा।

प्रउत के समाधान,एगो नया रास्ता – एह अंधकार में प्रउत एगो उजाला के किरण बनके उभरता।

प्रभात रंजन सरकार द्वारा प्रतिपादित प्रउत के मुख्य सिद्धांत कहेला –

1 **आर्थिक विकेन्द्रीकरण +शक्ति के नैतिक**

नियंत्रण
- संसाधन के समान वितरण
- स्थानीय अर्थव्यवस्था के मजबूती

2. विश्व सरकार के अवधारणा –
- सीमित राष्ट्रीय स्वार्थ से ऊपर उठके
- एक नैतिक, मानवीय वैश्विक प्रशासन

3. मानवता केंद्रित विकास
- ना कि मुनाफा केंद्रित
- बल्कि जरूरत आधारित अर्थव्यवस्था

विश्व सरकार – कल्पना ना, आवश्यकता

आज जब हर देश अपना स्वार्थ में अंधा हो रहल बा, तब एक नैतिक विश्व सरकार के जरूरत महसूस हो रहल बा।

ई सरकार –
- युद्ध के रोके
- संसाधन के संतुलित उपयोग सुनिश्चित करे
- आ वैश्विक न्याय स्थापित करे

निष्कर्ष नया सवेरा संभव बा

ईरान – इजराइल संघर्ष आज के दुनिया के एगो आईना ह। ई बतावत बा कि हमनी के पुरान सोच अब काम ना कर रहल बा।

जरूरत बा –
- नई सोच
- नई व्यवस्था
- आ नव्य मानवता के केंद्र में रखे वाला दर्शन

प्रउत एही दिशा में एगो मजबूत विकल्प पेश करेला।

☞ अगर दुनिया के बचावे के बा, त सोच बदले के पड़ी व्यवस्था बदले के पड़ी।"

"संघर्ष से समाधान तक – प्रउत के राहे दुनिया के नया सवेरा"

– विजय बहादुर यादव

❀❀❀

परजातंत्र क आन्ही

परजातंत्र क आन्ही
परजातंत्र क बुढ़िया
आन्ही आइलि बा।
जवन कुछऊ भी जहवाँ बा
जहाँ क तहाँ
गिरत–परत भहराईल बा।
उधियाईल बा वातावरण
में–हलचल आ
अफरा–तफरी मचलि बा।
आपन–आपन डफली बाजे
जवने में न ताल–मेल बा
आपन–आपन राग अलापे,
ऊहो बे मेल बा।
सब लोगवा खेलत
आपन खेल बा।
जहवाँ देखऽ उहवाँ
मचल रेल–पेल बा।
नियति में खोट लिहले
सच्चाई क ओट।
जवने से–अपनी सोंच की
चलते अपनी समाज आ
देश क नईया मझधार में
अटकलि बा राजनीति में
कूटनीति, धरम में अधरम,
समाज में कुकरम की भँवर
में फँसलि बा। नइखे देखात
किनारा निकम्मा, कामचोर
हरामखोर, बलजोर ।

– जे. एन. वर्मा

लोरिकायन कथा

(इतिहास आ परम्परा)

चनवा

– अवधविहारी मितवा

गतांक से आगे...

चनवा के एक मात्र मिशन रहे कि सुहवल के चढ़ाई के तइयारी मुकम्मल होखे। जोह–टोह लेबे की इरादा से गउरागढ़ की जदुबंशी टोला गईल। लोरिक की माई देवी खोइलन से भेंट हो गइल। चनवा हाथ जोड़ के अभिवादन कइलसि। माई खोइलन अगरा के स्वागत कइली। कहली – "ए राजकुंवरी चनवा ,तोहार बहुत नेकी बा हमरी पर" ।

ऊ का ? चनवा पुछ्लसि ।" लोग कहत ह कि तोहरे ललकार पर लोरिक जोश में आयल। इ अच्छा भयल ।ए बछिया, हमरी लोरिक के उत्साह बढ़ावत रहिह ।" ढेर खाने दुआ देत दुध –मलाई–मिश्री खिया के आदर कइली आ बतवली कि कुल पुरोहित दुबरी पंडित की अनुसार रामनवमी के पुरी खाके तीसरा दिने बरियात सुहवल गढ़ खातिर पयान करी ।माई खोइलन चनवा के नेवता आ हिदायत दिहली कि सबेर किरिन फूटते परछावन होई।

चनवा के सवंरू, लोरिक की महतारी के सनेह भरल बतिकही निमन लागल ।ओही बीच लम्मे से माई– माई पकुरत लोरिक आ गइल आ चनवा के देख के सकपका गइल। माई खोइलन सूचना दिहली – "ए बेटा लोरिक, सुनात ह कि रामनवमी के पहिले ही महराज संत सुखदर्शन भगवती ब्रहमाइन मंदिर की धर्मशाला आ जइहें। दर्शन क के बतिया लीहऽ।हमहूँ आ तोहार बाबूजी जाइब जा ।फिर माई चनवा की ओर मुखातिब भइली – ''ए बछिया राजकुंवरी, तूं त संत जी की इहाँ जरूरे जइबू। तूहू एह बारे में बतिया लीहऽ।'' चनवा हुँकारी परलस।चनवा लोरिक की ओर देखि के मुस्कराइल आ चलि दिहलस ।लोरिक एक नजर देखि के माई से बतियावे लागल ।तबले चौधरी थयचन्द पहुँच गइलन। माई टोकलसि – "का हो तोहरा घूमला से कब फुरसत मिली।कौनो चिन्ता हऽ ? "का बाघिन लेखा दहाड़े लागे लू।पहिले बात त सुनऽ, ''थयचन्द कहलन ।'' लोरिक माई के समझवलसि कि बाबजूी सगरो तैयारी में आगे रहल बाड़न ।देर ले नोक–झोंक भइल आ तइयारी के समीक्षा भईल। नवमी की शाम से ही दुर–दराज के नौहा – नौजवान बीरन के जुटान गउरागढ़ मे होखे लागल । जनता की दबाव पर राजा महर राय सहदेव बरतिहन के खान–पान, रख–रखाव के इंतजाम अपना जिमें ले लेले रहलन ।मैदान, बाग आ सभागारन में जुटान होखे लागल। गउरागढ़ में चहल–पहल बढ़ि गइल ।

वीर लोरिक भृगु मंदिर पर जुटेवाला बरतिहन के व्यवस्था देखे खातिर घोड़ा सेआवत जात रहे। चौधरी थयचन्द गोप राजा सहदेव राय पर दवाब देके कहि देले रहलन कि सवंरु की परछावन खातिर राजमहल के चार घोड़ा वाला रथ के भेजेके परी। राजा के एतना बेवत ना रहेकि इनकार क देसु, काहे से कि सामन्त कुमार रुपचन्द की हमला पर वीर

लोरिक राजा की इज्जत के रक्षा कइलेरहे।

आखिर बारात की रवानगी के समय आ ही गइल। चैत्र शुक्ल द्वादसी के सुबह चौधरी थयचन्द्र की दुवार पर भाँति भाँति के बाजा बाजे लागल । स्त्री–समाज निमन–निमन धराऊँ कपड़ा पहिरि के मंगल गीत गावत रहे। भीड़ में चनवा सबसे आगे लउकत रहे। आज चनवा साधारन सिंगार कइले रहे लेकिन केहु के नजर ओही पर पड़े। चनवा की परिधान में कौनो राजसी ठाठ बाट ना रहे। चनवा के चेहरा–चुहुलगर रहे। चनवा के नजर भी केहू के जोहत रहे। लोरिक के छोड़ि के दुसर के होई? लोरिक अपनी भइया संवरु के दुलहा भेस में साज के शाही रथ पर बइठवलस।लोरिक चनवा के नजर मिलल।

लोरिक के गंभीर मुस्कान देखि के चनवा अघा गइल। चनवा के कल्पना आ मिशन के पहिली कड़ी पुरा होखे जात रहे। वीर लोरिक के सहबाला रूप में सजल–सँवरल देख के चनवा मोहित हो गइल, मन करे टकटकी लगाके लगातार देखतेरहे।

बारात दुआर से चलि दिहलस ।आगे आगे दुलहा के शाही रथ आ पीछे–पीछे माई खोइलन की साथ मेहरारून के टीम गीत गावत परछावन खातीर चलत रहे। रथ भगवती ब्रहमाइन देवी की मंदिर पर रुकल। माई खोइलन परछावन कइली आ अचँरा ओढ़ा के सवंरू के दुध पियावे के भाव कऽके आशीर्वाद दिहली कि कुशल कुशल लोहा जीति के दुलहिन ले आवऽ जा। फिर अउर मेहरारू भी परछावन कइलीस। अबले चनवा मस्त विभोर परछावन होत देखत रहे। माई खोइलन हुकुम दिहली – 'ए बेटी राजकुमारी चनवा तूहूँ परीछि दऽ आ जीत के दुआ देदऽ" चनवा बिहसि के परछावन कइलसि आ दुलहा की लगे ठाढ़ लोरिक की गाल पर दही लगा दिहलस । लोरिक लजा गइल आ माई का ओर तकलस, माई बिहसि के कहली"बाघिन बेटी गउरा के माई जेकर कुंवर चनैनी नाम" माहौल खुश मिजाज हो गइल। देवी की चौरा पर माथा नवा के बारात चलि दिहलसि । छोरी– छैल– छबीली की अलावा भी कुछ अउर खास रहे। राज कुमारी चनवा अपनी पिता राजा महर राय सहदेव से कहि के गुप्तचर सैनिकन के सिद्ध टीम बारात के सँगे लगा देले रहे।

ई टीम गुप्तचरी अउर भीड़, संतुलन के काम करी। लोरिक आ चनवा के बीच बारात–कम–सेना अऊर भीड़ समंजन का विषय में विस्तृत चर्चा भइल रहे। लोरिक आ अजयी एक हजार रन बाँकुरा महा बीरन की अगवुाई में पचास–पचास गो जोद्धा बीरन के टोली बना के बारात में शामिल कइले रहलन जा । रथ, बैलगाड़ी आ डोली हजारन की गिनती में चलत रहली स जौना में भाँति भाँति के हथियार साजल रखल रहे। अजई सुहवल की रास्ता के जानकार नौजवानन की जिम्मे रथ आ बैल गाड़िन लगवले रहे। खान–पान के रसद सामग्री बारात के साथ, कावर में कहाँर लेके चलत रहलन स ।बारात के लश्कर भृगु आश्रम पहुँचल,जहां टिकल सुरूमा सब शामिल भइल। लोरिक ऊँच स्थान से बरातियन के सम्बोधित करत कहलस– "हमार प्रिय नौजवान साथी लोगन, रउवा सभके मालुम बा कि बारात सुहवल गढ़ किला जात बा जहाँके बदमिजाज राजा बामरी आ ओकरे बड़, बेटा गजभीमल के दम्भ और अहंकार तथा जिद्द के चलते ओह नगर के राजकुमारी सत्या मदैनी सहित तमाम जुवतियन के शादी रोकि दिहल गइल बा ।जुवराज गजभीमल के अटपट आ बेतकु परन कि – जे शाही पोखरा के पानी झुरुवा देई, आ ओमे गड़ल लोहेकी लाट के उखाड़ी देई। जे गजभीमल के लोहा में जीति के मड़ंवा में मुण्ड के कलशा, टांग (पैर) के हरिश धड़ के पीढ़ा आ लहूसे चौका पुरवाई तब सत्या मदैनी के बियाह रचाई।

फिर दुसर जवुतियन के शादी के रास्ता खुली ।एह बात में ओकरे अंधा घमण्ड के पता चलत बा । ऊ अपना बल के अहंकार में चूर बा। एसे सामाजिक व्यवस्था गड़बड़ा रहल बा। एह कारन ओकरे दम्भ के तुरल जरूरी हो गइल बा। आ हम जानत बानी कि ओकर घमण्ड एगो ठोकर में चकनाचुर हो जाई।ई होखही के बा।' भीड़ का ओर से जबरदस्त जय घोष भइल –दरदर मुनी की जय, भृगु बाबा की जय, राजा बली की जय अऊर बीर लोरिक जिंदाबाद। भीड़ में जोश रहे आ रंग बिरंगा झंडा लहराए लगलनस ।बारात कूच क दिहलस। माझी सरदार के पहिले से आगाह कइल रहे जेसे ऊ गगां जी में नावन के जोरी के पुल बना देले रहे। बारात पारा–पारी आसानी से पार उतरि गइल । बारात आगे बढ़े लागल ।बारह कोस पहुँचला का

बाद पता चलल कि नाऊ के लापरवाही से बर का पानी वाला कलशा घर ही छूट गइल बा ।अब का होई ? लोरिक तइयार भइल कि बारात आगे बढ़ हम वापस गौउरागढ़, जाके लेआवत बानी । लोरिक वापस मुड़ि गइल आ बारात मंजिल का ओर चलि दिहलस ।लोरिक के तेजी करेके परी कि जल्दी से जल्दी गौरा जाके आ बर के पानी अऊर लावा लेके वापस बारात के सँग धइ लेव।

चनवा राह में मटर गश्ती करत रहे कि लोरिक के भागत–धउरत आवत देखि के चिहा गइलि आ सोच में परि गइल। बात का ह? तबले लोरिक नगिचा पहुँच गइल ।चनवा के रुख समझि के लोरिक बतवलस, "भइया सवंरु सहित बारह सौ एक दुलहन के बर के पानी अऊर लावा नाई की भुल से छूटि गइल रहल ह, ओही के आने खातीर लवटलीं हं। हम बारात के संग पैदल जात रहलीं ह आ घुड़सवारन के टोली आगे निकल गइल रहलि ह, एसे पैदले धावे के परल ह। जात बानी देर उचित नइखे।" लोरिक तुरन्त घर का ओर भागल ।

चनवा गहिर साँस लिहलस ।ओके लोरिक के बल पौरुष आ साहस पर पुरा भरोसा रहे। पहिले की अपेक्षा लोरिक अऊर ताकतवर हो गइल रहे, काहे से कि संत सुख दर्शन लोरिक के 'अपरबल विद्या सिद्ध करा देले रहलन। सतं जी बतवले रहले कि अपरबल सिद्धी के ही नाँव 'बला अति बला' विद्या ह जवना के विश्वामित्र मुनी बगसर में रामजी के बतवले सिखवले रहलें।एह विद्या के सिद्ध कइला का बाद ,लोहा– लड़ाई में भुख–पियास आ थकान ना लागी। सतं जी हिदायत भी कइले रहलन कि सिखावेवाला के नाँव ना बतावे के होई। सिखल आ सिद्ध विद्या के नांव भी नइखे बतावे के। मोट में दुर्गा –साधना कहि देबेके होई। गौरागढ़ से वापस चलि के लोरिक जब तीस कोस पर पहुँचले त साँझ होत रहे। कैमुर परबत–माला के पहाड़ी आ जंगल शुरू हो गइल रहे। ऊँहा से दू ठे रास्ता रहे, समझ में ना आवे कौना ओर के डहर से बारात गइल बा ।केहू बतावे वाला भी नइखे। निर्जन बीहड़ पहाड़ी जंगल में लोरिक के कुछ समझ में ना आवे। सोचत विचारत में ही किरिन बुड़ि गइल आ घनघोर अन्हार छावे लागल ।लोरिक के उहंवे रात बितावल मजबुरी हो गइल। जंगली जानवरन अऊर चिरइन के भकसावन आ डरावन आवाज से माहौल उदास होखे लागल। लोरिक सोचे लागल कि बिना गोसयाँ के आपन लोग कहाँ आ कौना हालत में होई। कुछ घरी बाद चनरमा उगे लगलन आ धीरे–धीरे अजोरिया जंगल में खेले लागल ।लोरिक सतं सुख दर्शन के धियान कइलस आ दुर्गा जी के गोहरावत आराम करे लागल ।सबेर भइल त तीन ठे आदिवासी मनई दखिन से रास्ता धइले आवत रहलन स। ऊ बतवलन स कि कौनो भीड़ ओ राह से नइखे गुजरल आ दुसरकी राह नगिनिया खोह की ओर जाले जेवन बहुत खतरनाक ह, जे गइल उ लौटल ना। लोरिक चिन्ता में पड़ि गइल।

(क्रमशः अगिला अंक में)

❀❀❀

जोंक

दुष्ट निर्लज्ज कहाँ की
तोके नइखे मालूम
हम के हँई?
बड़का मठ क महन्त
हम भगवान क भक्त
अनगिनत लोग हमार भक्त
मेवा मिलल राबड़ी क जलपान
शुद्ध घी की पकवान क
भगवान के भोग लगा के पाई लें
तब ई अइसन देहियाँ
थल–थल करत झलकति बा,
तू हमार खून चूसत रहली ह,
खबरदार !
धूर्त, बेधरमी, धोखेबाज,
तोसे लाख गुना हम अच्छा बानी,
हम आ हमार जाति–
अपनी जाति क खून नाही चूँसी लें।
पोखरा में मनई या जानवर
आवें लें उनके खून चूसी लें।
तूँ आ तोर जाति त
अपनी जाति क ही खून चूसे ले।

– जगत नाराण वर्मा

(व्यंग)

तिलकहरू साला आयो रे !

शादी–बियाह के लगन शुरू होते तिलकहरू लोग मंडराए लागेला. का गांव, का कस्बा आ का शहर! जेकरा–जेकरा घरे शादी–बियाह जोग नवही रहेलन, उहवां तिलकहरू के इंतजार होखे लागेला. जवना घर में गूर होई, उहवां त चिउंटा लगबे करिहन स. कहल जाला–वर–कन्या अनेक जग माहीं!

इहो कहाला कि वर आ कनिया के जोड़ी ऊपरे से बनिके आवेला. बाकिर केहू–ना–केहू मिलावेवाला त चाहीं. ओइसे एगो लोकोक्तिओ कहाला–राम मिलवलन जोड़ी,एगो आन्हर, एगो कोढ़ी! जब बियाह जोग लइका का दुआर पर कवनो तिलकहरू आवेला, त अइसन लागेला जइसे कवनो कंगाल के भागि खुलि गइल होखे आ लाटरी के टिकट पर इनाम मिले वाला होखे.तिलकहरू के आगम से अइसन जनाला जइसे कवनो किसान के फसिल के उचित मोल लगावेवाला महाजन आ गइल होखे. ओइसे तिलकहरू आ नसीब के कवनो ठेकान ना होला कि कब आके टपकि परे आ बाट जोहत बबुआ के माथे मउरि चढ़ि जाउ,हाड़े हरदी लागि जाउ!

तिलकहरू जब बेटहा के दुआर पर जाला त ओकर भेसभूषा देखते बनेला. भलहीं घर में भूंजी भांग ना होखे, बाकिर ठाट–बाट बनाके ऊ लइका देखे जाई.कहलो जाला कि भेखे भीख मिलेला, ए से भाड़ा के गाड़ी होखे भा किराया के कपड़ा–लत्ता, कवनो हाल में बेटहा के दिल जीतल ओकर मकसद होला.काम परेला त गदहो के बाप कहहीं के परेला. इहां त बेटहा से किछु सांच आ किछु झूठ बोलिके आपन बेटी देबे के बा,कनियादान करे के बा.जंग आ परेम में सभे किछु जायज होला नू? बाकिर तिलकहरू लइका खोजे अकेले ना जाला. ओकरा संगें एगो बिचवानो होला, जवना के अगुवा कहल जाला.अगुवा नांव के जीव लइकीवाला आ लइकावाला–दूनों से कवनो–ना–कवनो किसिम से जुड़ल होला.दूनों पच्छ के अंदरूनी हालात से ऊ बखूबी वाकिफ होला.खूबी आ खामी–दूनों के चीन्हिके ऊ मोलभाव करेला.दरअसल अगुवा अइसन तरजूई होला, जवना के एगो पलड़ा पर बेटिहा आ दोसरा प बेटहा जोखाला.अगुवे दूनों पलड़ा के संतुलित करे में अगहर भूमिका निबाहेला. हालांकि आगा चलिके दूनों पच्छ रिश्ता में आइल कवनो झोल खातिर अगुवे के दोषी ठहरावेला आ आखिरकार ओकर हाल सांप–छुछूंदर के हो जाला–ना घोंटते बनेला,ना उगिलते. मियां–बीवी राजी,त का करिहें काजी! जब हीत–नात नीमन मिलि जाला त ओकर श्रेय तिलकहरू लोग खुद के देला आ जदी कनिया के ससुरा में सांसत भा दुख–तकलीफ झेले के परेला त अगुवा के कोसे, गारी–फजीहत देबे–करे के अंतहीन सिलसिला शुरू हो जाला.ओने बेटहो हर फरमाइस पूरा ना भइला पर अगुवे के दोषी ठहरावेला.तिलक का दिनहीं गीत गावेवाली मेहरारुन के सुर फूटेला–

सोना के जेवर करार कियो रे अगुवा बैमान,
पीतर के जेवर चढ़ा दियो रे अगुवा बैमान!
ठग लियो लड़का हमारा रे अगुवा बैमान!

तिलक चढ़ावे खातिर पहुंचल तिलकहरुओ के कहां छोड़ल जाला! अइसन लागेला जइसे ऊ बेबोलवले

अचके धमकि परे वाला मेहमान होखे.गीतगवनी लोग फरमावेला–

अइसन आन्हीं धुक्कड़ में
तिलकहरू साला आयो रे!

तिलक चढ़ावे गइल लरिकी पच्छ के मए लोग तिलकहरू कहाला आ तिलक का दिने ओह लोग के खूब खातिरदारी होला. कहां उठाई, कहां बइठाई! जलखई से लेके खानपान ले बढ़ि–चढ़िके आवभगत होला. हीत–नात आ गांव–जवार के लोगो खातिरदारी में इचिको कोताही ना बरते. तड़क–भड़क आ झूठ–सांच देखाके बेटिहा पच्छ से अधिका से अधिका रस निचोड़े के दियानत जे रहेला! दुधारि गाय के दूगो लातो भला!

पहिले जब तिलकहरू लोग तिलक चढ़ावे पहुंचे त नगद आ दहेज के तय रकम ओही दिने चढ़ावल जात रहे.कई बेर लइकी के बाप वादा कइल रकम से कम रकम के जोगाड़ बइठा पावत रहे आ ओइसना हाल में कमे तिलक चढ़ा देत रहे,तबो बीच–बचाव कऽके ममिला सलटि जात रहे आ दूनों के गणमान्य लोग के समुझावल–बुझावल बात बेटहा मानि जात रहे.किछु देरी ले रंग में भंग भलहीं होत रहे,बाकिर आखिरकार हंसी–खुशी से तिलकहरू लोग के विदाई होत रहे.अंत भला तऽ सब भला!

बाकिर जब से तिलक–दहेज के खिलाफ सख्त कानून बनल,तिलकहरू लोग के मुसीबत अउर बढ़ि गइल आ बेटहा के अउर आसानी हो गइल.अब लइका–लइकी के बियाह तय होत कहीं कि मुकम्मल तय तिलक–दहेज के रकम अगवढ़े गिना लिहल जाता.चेक–ड्राफ्ट का जगहा एकदम नगद.तूं डाढ़–डाढ़, त हम पात–पात! जदी अइसे ना,त लइकिएवाला होटल बुक करे, बैंड – बाजा , गहना–गुरिया, जनवासा, सजावट, केटरिंग, स्वागत –सतकार, कपड़ा–लत्ता से लेके आवागमन, नाश्ता–भोजन सहित पंडित–पवनी के खरच–बरच ले,ए से जेड–तमाम इंतजाम करे.वर पच्छ ठाट से बरियात लेके जाई,पिकनिक मनाई, ना हाथ मइल ना गोड़ मइल, बस रोआब झारत रही.बेटीवाला लरिकी जनमाके जब अपराध कइले बा तऽ ओकर खामियाजा के भोगी? हालांकि बेटी–बेटा सभका बा,बाकिर बेटा के बाप ई बात भुला जाला कि ऊहो कबो बेटी के बियाह के बखत सांसत झेलले रहे आ ए से ऊ बेटीवाला के पीरा के एहसास करो.उलुटे ऊ बदला लिहल चाहेला आ जतना खरच कइले रहे,ओसे कई–कई गुना वसूलेला.मोका मोका के बात ह.कबो गाड़ी नाव पर, त कबो नाव गाड़ी पर! आजुकाल्ह जब नेह–नाता बैपार हो गइल बा,त वर–कनिया के रिश्ता जोड़हूं खातिर किसिम–किसिम के बैपार खूब फरत–फूलत बा शगुन के विचार करेवाला कम्प्यूटरीकृत जोतिसी से लेके मैरेज ब्यूरो नियर दलाल,मैरेज हॉल, मंडप,केटरर वगैरह जवन किछु चाहीं,घर बइठल

हाजिर बा.बस,पइसा फेंकऽ,तमासा देखऽ!
अब तिलकहरू के भला का जरूरत बा.
लइका–लइकी 'आइ लव यू' के राग उचरले,

डेटिंग कइले आ चट मंगनी पट शादी हो गइल.हर्रे लागल ना फिटिकिरी आ रंगो चोखा हो गइल.बाकिर अइसन कई गो बियाह बियाधि बनि जाता आ चार दिन के चाननी साबित होता.लइकी के मनमाफिक चाह जब पूरा नइखे होत, त तनी–तनी बात के लेके ममिला पुलिस थाना आ कचहरी में चलि जात बा आ लइका का संगें ओकर बाप – महतारी,समूचा परिवार गहूं का संगें घुन लेखा पिसात बा.जिनिगी नरक बनि जात बा आ एक–दोसरा से पिंड छोड़ावे खातिर खूब मोलभाव होत बा.तबे बियाह के मजा ओह मथुरा के पेड़ा नियर आवता, जेकरा के खइलो प पछतावा आ ना खइलो प पछतावा. आजु के नेह–नाता के बैपारी पारम्परिक बियाह आ तिलकहरू के मरम का बुझिहें! गांव में आजुओ तिलकहरू के महातम बा. जेकर बबुआ पढ़ि–लिखिके बढ़िया रोजी–रोजगार में लागल बाड़न, उन्हुका इहां तिलकहरुन के तांता लागल बा आ जेकर लइका बेरोजगार बा, ओकर उमिर ढललो पर तिलकहरू के नजर ओने नइखे जात।

आजुओ तिलकहरू बेटहा किहां जाके नीमन–नीमन मिठाई चाभऽ तारन, लइका के राशि के नांव लेके पंडीजी से लरिका–लरिकी के गनना मिलवावत बाड़न, जानल चाहत बाड़न कि कतना

गुन गनना बनत बा, गोत्र आ नाड़ी मिलत त नइखे? कई बेर गनना त छत्तीसो गुन मिलता,बाकिर मन ना मिलला से निरासा हाथे लागत बा.आखिर कब ले शादी–बियाह में माल–गोरू लेखा कीने–बेचे के आ एक–दोसरा के ठगे के सिलसिला चलत रही आ वर–कनिया कोट–कचहरी के चक्कर में अपना–अपना जिनिगी के सोनहुला समय–सपना बरबाद करत रहिहन? समझौतावादी नजरिया अपना के एक–दोसरा के समुझे आ बिसवास जीतिके सुखमय जिनिगी जीए के सबक तिलकहरुओ देलन,अगुवो देलन आ कोटो–कचहरी के मध्यस्थो देलन, बाकिर वरे–कनिया एह दिसाई गठजोड़ाव के अटल आ अटूट बना सकेलन. बहरहाल, फेरु कतने जवान नर–नारी के शगुन चरचरा रहल बा, तिलकहरू लोग के धूम मचल बा, सगाई, तिलक,बरियात, बैंड बाजा आ शहनाई के मीठ सुर में माहौल खुशनुमा हो उठल बा.रउओं एह सरसता में डुबकी लगाईं आ गीत–संगीत के आनंद लेत नेग देबे–लेबे में शामिल होत मुबारकबाद आ शुभकामना दिहीं–लिहीं।

– भगवती प्रसाद द्विवेदी

मानव - धरम लापता

साँच भईल झूठ,
झूठ भईल साँच,
साँच पर आँच।
पादरी, मुल्ला–मौलवी
मठ क महंथ,
मन्दिर क पुजारी,
पंडित अऊरी पंडा,
अंधविश्वास की बिरवा के
मनभावे वाली बात क
खाद देत बानें आ
पानी से सिंचत बाने
जवना से–
अंधविश्वास क अमरबेलि,
असल धरम बनि के
लहलहाति मनई की–
बुद्धि आ सोच की ऊपर
भीतरे–भीतर छपले बा।
जवने से चारों ओर,
अंधकार फइलल बा।
बेशरम आ पोंगापंथी
धरम क ठिकेदार बनल बाने।
कुकरम करत बाने।
अधरम के धरम बना के,
अपनी स्वारथ क
धरम क साधना करत बाने।
जवने से मानव धरम,
लापता हो गईल बा।
दुनिया क केहू भी
ई सपना देखत होखे
चाहे समझत होखे
हम दूसरे धरम क
समूल विनास कके
अपनी धरम क विकास कके,
विजय पा जाईब
ई सपना सपने रहि जाई।
एकर नतीजा का होई,
हर जगह चारों ओर,
खलबली मचि जाई।
हो जाई अलगाव
एक धरम क न होखे
दूसरे धरम से दुराव।
'सर्व धर्म समभाव'
सगरी धरम आपन
आ हमार हउवें।
अईसन विचार क भाव अपनाई
तब समता–एकता भईला से
आपन आ मानव–जाति क
विकास गति पाई।
अईसन धरम अपनवला से,
तबऊ विश्व–धरम कहलाई।
ऊ अनन्त आ निर्बाध होई
ई धरम अईसन होई–
न हिन्दू न मुसलमान होई
न बौद्ध, न जैन न ईसाई।
बल्कि सबकी मिलन
आ सामन्जस्य से पैदा
होई ऊ मानव–धरम कहलाई ।।

– जे. एन. वर्मा

(विचार प्रवाह)

The Origin and Development of Bhojpuri

Inspired by the advice of Professor Suniti Kumar Chatterjee, Udai Narain Tiwari produced the valuable treatise entitled 'A Dialect of Bhojpuri. ' This work was the outcome of Tiwari's well acquaintance with the various specimens of Bhojpuri dialect- He gathered knowledge of this language after touring extensive part of the Bhojpuri area- It is due to the initiative of Professor S.K. Chatterjee that the book in a modified form with the title of 'The Origin and Development of Bhojpuri', was published by the Asiatic Society in 1960. The book having critical and scientific analysis of Bhojpuri is in great demand to the teachers and students of Linguistics- For a few years the book is out of stock but because of the non & stopped demand for this book from persons of different parts of our country] we are glad to announce the republication of Tiwari's labored creation, "The Asiatic Society'.

ग्रियर्सन के सबसे शुरुवाती आ बेहतर काम रहे भोजपुरी के ।अइसन नइखे कि भोजपुरी प काम करे वाला पहिला व्यक्ति रहले ग्रियर्सन, काहें कि भोजपुरी व्याकरण प पहिला काम 11वी –12 शताब्दी में तनी मनी भइल रहे ।असल में संस्कृत व्याकरण प काशी में काम होत रहे ओहि में भोजपुरी के व्याकरण के चर्चा भइल बा स्थानीय भाषा के नाव प भोजपुरी शब्द लिखे के प्रमाण 17वी –18वीं शताब्दी मिलेला आ भोजपुरी प शुरुवाती काम करे वाला लोग अंग्रेज अधिकारी रहे जवना में बीम्स , हार्न्ले , ग्रियर्सन, आर्चर आदि लोग मिलेला ।जदि एह में ग्रियर्सन के छोड़ दिहल जाउ त बाकी लोगन के भाषा काम शौखिया रहे भा बहुत सिमीत क्षेत्र के रहे । हम ग्रियर्सन के बात एह से करत बानी काहें कि ग्रियर्सन के विरोध में डॉ0 उदय नारायण तिवारी के भोजपुरी प काम करे के चेष्टा शुरु भइल रहे ।आ ओहि क्रम में उदय जी आज से 70–80 साल पहिले भोजपुरी के मय इलाका सीमावर्ती जिला आ गांवन में जा के प्रायोगिक तौर प भाषा के बोले के नमूना लेहले आ फेरु भोजपुरी भाषा के इतिहास आ व्याकरण के लिखले ।एगो सवाल अक्सर लोग उठावेला कि भाषा आ बोली का ह ?

असल में भाषा शब्द संस्कृत के भाष् शब्द से बनल बा जबकि बोली शब्द प्राकृत के बोल्ल्इ शब्द से बनल बा ।यानि कि अंग्रेजी में Mother Tongue हिंदी के मातृभाषा हो जाला ।लिपि जवन लिखे के तरिका ह, यानि कि जवन रउवा बोलत बानी उ भाषा ह रउवा अंग्रेजी हिंदी बंगाली भोजपुरी अरबी उर्दू मय के बोल सकेनी, बाकिर एकनी के लिखे खातिर रउवा कैथी, रोमन, देवनागरी, ब्राम्ही , तिरहुता, नस्तालिक आदि लिपि के प्रयोग करे के परी ।रउवा बोले खातिर लिपि के जरुरत ना परेला । एकर माने का भइल कि रउवा विश्व के कवनो भाषा के लिख सकेनी आ ओह के बोल सकेनी ।एह बात के अउरी बुझे के जरुरत बा त ध्यान दिहीं कि अंग्रेजी में काहें Mother Tongue होला बाकिर Mother Language काहें ना होला ?(पिछला कुछ समय से Mother Language कहाए लागल बा) काहें बेटा–बेटी जनमते बोलेला ।बोल्ल्इ ।ध्यान इहो देबे के जरुरत बा कि हिंदी में कवनो मातृबोली लेखा

शब्द नइखे , बस कुछ हिंदी के साहित्यकार लोग Mother Tongue के सोझ माने मातृबोली बना देले बा बाकिर मूल प्रयोजन मातृभाषा से बा ।

संगे संगे इहो बात ध्यान राखे के जरुरत बा कि , मातृलिपि लेखा कवनो शब्द हिंदी में नइखे आ ना Mother Script जइसन शब्द अंग्रेजी में बा । एह के माने इ भइल कि स्क्रिप्ट जवना के हमनी के लिपि कहेनी जा उ भौगोलिक आधार प ना हो के ओह क्षेत्र के बुद्धिजीवी लोगन के एगो भाषा के लिखे खातिर Developed तरिका ह ।कैथी एगो नीमन उदाहरण बिआ जवना के एगो वर्ग यानि कि कायस्थ (लाला/श्रीवास्तव/सिन्हा/गुप्ता) लोग अपना हिसाब किताब जोड़–घटाव खातिर विकसीत कइल लो जवन लिपि के रुप ले लेहलस ।भारत के अधिकतर लिपि के विकास ब्राम्ही लिपि से भइल बा भा प्रभावित बाड़ी स ।

शुरुवात में जवन अंग्रेजी में लिखल बा उ डॉ उदय नारायण तिवारी जी के भोजपुरी भाषा के विश्व पटल प ले जाए के प्रयास के देखावल गइल बा । तिवारी जी अंग्रेजी आ हिंदी में भोजपुरी के किताब लिखले बानी ।इहें के प्रयास से भोजपुरी के पहिला कहानी संग्रह (जेहल के सनदि) आइल रहे आ इहें के प्रयास से भोजपुरी के अदभुत आ संभवतः पहिला महाकाव्य 'बौद्धायन' सिरजित भइल रहे ।राहुल सांकृत्यायन , बाबा नागार्जुन , अवध बिहारी सुमन ' दण्डीस्वामी' आ उदय नारायण तिवारी , एह चारो लोगन के चौकड़ी इलाहाबाद में खुब जमत रहे ।तीन गो भोजपुरिया आ एगो मैथिल ।असल में तिवारिये जी के संगत ह कि भोजपुरी में गद्य के कमी के देखत 'जेहल के सनदि' आइल आ एह से पहिले राहुल सांकृत्यायन जी के 5 नाटक आ फेरु 3 नाटक , कुल्ह 8 गो नाटक आइल । तिवारी जी के उसुकावला के बादे, अवधबिहारी सुमन जी , दण्डीस्वामी बनला के बाद 'बौद्धायन' महाकाव्य के सिरजना कइनी ।

इतिहास में बहुत कुछ बा, भाषा के निर्माण अंगुरी प गिन के नइखे भइल।सदियन, सदियन से फेंड, खुंट, जीउ, जनावर के अजब गजब आवाज से बुनियाद धराइल बा शब्दन के। भाषा के बोले के इतिहास 70 हजार साल के बा, बाकिर भाषा के लिखे के इतिहास मात्र 4 हजार साल के बा। भाषा मात्र सम्प्रेषण ना ह। भाषा इतिहास ह, वर्तमान ह, भविष्य ह ।

– नबीन कुमार (विचार)

❀❀❀

भोजपुरी गजल

जिनिगी जंजाल जीयत जंगल निकल गईल।
ठोकर ना कबहूं लागल अपने फिसल गईल।।

सोचल रहे जे बात कि कबहूं ना हम कहब।
घुंघटा में उनके देखके झट् से निकल गईल।।

तकिया–कपार सेवत जिनिगी पिछड़ गईल।
अंगुरी दबाके केहू आगे निकल गईल।।

सुर साधके ना गवनीं कबहू बधार में ।
घुंघरू बजाके केहू महफिल में छा गईल।।

झिंगुर के गीत सुनके कोइलर लजा गईल।
गिरगिट पहिरके टोपी थपड़ी बजा गईल।।

सोजहग संवरके आंख में आइल ना जे कबो।
सपना में आके (गड़बड़) दिल में उतर गईल।।

– शंकर मुनि राय (गड़बड)
शासकीय दिग्विजय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय राजनांदगांव–छत्तीसगढ़

परम्परा

जीउतिया :

(बलिदानी जीमूतवाहन के इयाद के परब)

ए अरियार ! का बरियार !!
बैठे के दे देबो सिंहासन पीठ
राम जी से कहि हे
फलनवा के माई भुखल बाड़ी जिउतिया...

इहे कह के पीढ़ा के जवना पे जीउत महाराज बिराजेलें पाँच बार उठावल बइठावल जाला ।ई कवनों बेद पुराण के मंतर ना ह।लोक संस्कृति में मुंहे मुंहे फैलल लबेद ह। जवना में कवनों विशेष लिखित विध ना होखे ।बरत त्योहार के विध के एक पीढ़ी से दोसर पीढ़ी तक, एक समाज से दोसर समाज तक देखादेखी आ मुंह से कहल बातन से ही आगे बढ़ेला ।हरेक परब के अलग विध, व्यवहार आ मान्यता आ सभे अलिखित। चिल्हो–सियारो के कथा, बहुला के कथा आ नाजने केतना लोक कथा । आज के वैज्ञानिक जुग में एह तरह के हरेक परब के बुद्धिजीवी लोग नकार दिही। बाकी कवनों निर्णय लेवे से पहिले लोक परब आ ओकर पाछे के छुपल गूढ रहस्य के जानल बहुत जरूरी बा । काहे एह परब के लोक व्यवहार में एतना प्रचलित करल गइल ? काहे लोगन के धरम के भय देखा के एह परब के मनावे खाति बाध्य कर दिहल गइल ।अयीसने कुछ पहलू के छुवत एह लेख के माध्यम से पढ़ीं जीउतिया जईसन लोक परब के बारे में ।

हमनी के सामाजिकता के मजबूत करे में लोक व्यवहार, संस्कार, संस्कृति आ परब–त्यौहार के विशेष महत्व बा ।सभे परब–त्यौहार के पाछे पुरखन के वैज्ञानिक सोच जेहमें शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य के बढ़ावे के, पारिवारिक आ सामाजिक ढांचा के मजबूत करे के गूढ आ गहीर बात छुपल बा । अईसन परब–त्यौहार में तीज आ जीउतिया के नाम सबसे ऊपर बा ।जीउतिया भा जीवित्पुत्रिका व्रत के माने ह कि संतान के उमीर–अर्दोआय बढ़ावे खाति कइल जाला ।जेकर संतान ना होखे उहो मेहरारू लोग एह बरत के करेली ।जीउतिया आश्विन महिना के अनहरिया (कृष्णपक्ष) के अष्टमी के मुख्य रूप से भोजपुरी बहुल इलाका पूर्वी उत्तरप्रदेश, बिहार आ मिथिलांचल में मनावल जाला ।

जीउतिया के कथा जीउतिया के प्रचलित कथा लोग एह बरत के दिन पढे ला ।कथा में राजा जीमूतवाहन के आपन प्रजा के प्राणरक्षा में आपन प्राण के आहुती देवे के आ फेर प्राण हरेवाला से लमहर उमीर के आशीर्वाद पावे के चर्चा बा ।कथा शंकर जी के माध्यम से पार्वती जी के सुनावल जाता ।हिमालय क्षेत्र में एगो गंधर्व के राज्य रहे ।राजा जीमूतकेतु बहुते दयालु रहलें हमेशा धरम करम में लागल रहस , एहसे जनता स्वछंद हो गइल रहे आ एक दिन महल के घेर लेलस ।राजा आपन राज आपन गोत्र के लोग के सौंप के आपन बेटा जीमूतवाहन के साथे मलय पहाड़ पे चल गइले ।एक एक रोज जीमूतवाहन घुमत रहले त एगो पहाड़ के चोटी पे हड्डी के ढेर देखाई पड़ल ।पुछला से मालूम पड़ल की ई सब गरुड़ के करामात ह ।आगे बढ़ले त एगो बूढ़ी रोवत रहली ।पुछलें त उ कहली–

‘हम नागलोक के रहेवाला हई ।ई जेतना हड्डी देखत बाड़े उ सब नाग के हड्डी ह ।गरुड़ से करार बा कि रोज एगो नाग उनकर भोजन बनी ।आ जेह दिन गरुड़ के भोजन ना मिली उ सभ नाग के एके बेर खतम कर दी ।आज हमार बेटा शंखचूड़ के बारी बा ।एही से रोवत बानी , एहिजा गरुड़ से गोहार लगावे खाति आइल बानी ।’ जीमूतवाहन ओह बुढ़िया के समझवले– ‘हम तहार बेटा के जगह पे जाईब ।’ आ लाल कपड़ा में अपना के लपेट के बलि स्थान पे सुत गइले ।गरुड़ आइले आ लाल कपड़ा में लपेटाइल जीमूतवाहन के पंजा में दबा के उड़ गइले

आ पहाड़ पे ले जाके बईठ गइले ।गरुड़ के आश्चर्य भइल कि पंजा में दबोचला के बादो तनिको आह–उह के आवाज ना आइल ।उ लाल कपड़ा हटा के देखले त जीमूतवाहन रहलें । उनकर परिचय पुछले त जीमूतवाहन सब किस्सा सुना दिहले । गरुड़ उनकर बहादुरी अवरू दोसरा के प्राण–रक्षा खाति आपन बलिदान देवे के हिम्मत से बहुत प्रभावित भइले ।खुश होके आशीर्वाद में जीवन दान दिहले आ आगे से नाग के बलि लेवे से मुक्त कइले । जीमूतवाहन के अनुरोध पे जेतना नाग मरल रहले सब के जीवन वापस मंगले ।गरुड़ प्रसन्न भइले, सभ नागन के प्राण लवटवले । जीमूतवाहन के राजपाट वापस आवे के आशीर्वाद दिहले ।एह तरी जीमूतवाहन के प्रयास से नाग–वंश के रक्षा भइल आ तबे से बेटा के रक्षा खाति जीमूतवाहन के पूजा के चलन शुरू हो गइल।

जीमूतवाहन : जातक कथा के नायक से कुलदेवता बने तक बौद्ध धर्म में भगवान बुद्ध के आदेश बा – 'चरथ भिक्खवे चारिकं बहुजन हिताय बहुजन सुखाय'।भारतीय समाज में बहुजन के अर्थ होला सामान्य वर्ग चाहे उ गांव के रहेवाला होखे भा शहर के ।एह सामान्य वर्ग में आपन बात आ उपदेश के पहुंचावे खाति लोक कथा आ उपमा के सहारा लिहल गइल ।आ इ सब लोक कथा के माध्यम से लोग आपन भाषा (सकाय निरुत्तिया) में उपदेश के इयाद राखे एकर छूट रहे ।बौद्ध धर्म के एह शैली के कारण बौद्ध साहित्य में अनेक कथा के समावेश भइल ।भगवान बुद्ध से लेके बाद के चौरासी सिद्ध लोग तक अनेकानेक पात्र के रचना भइल आ ओसे जुडल छोट–बड़ कथा विकसित भइल ।एह सब कथा के जातक कथा कहल जाला ।आ एह जातक कथा से लगभग हर परंपरा आ धर्म प्रभावित भइल । जातक कथा के अलग अलग रूप स्थान आ समय के अनुसार परिवर्तित आ विकसित भइल ।संस्कृत ग्रंथ बृहत्कथा में बैताल पच्चीसी के कथा (16वीं कहानी) आइल बा।बृहत्कथा के रचना 495 ई0 पूर्व में राजा सातवाहन के मंत्री गुणाढ्य कइले रहन । बुद्ध के समय इहे 563 ई0 पूर्व से लेके 483 ई0 पूर्व तक के मानल जाला ।एह से बृहत्कथा में जातक कथा के समावेश बा ।बृहत्कथा के भाषा प्रातः रहे आउर एह किताब में लगभग सात लाख छंद रहे । कश्मीर के कवि सोमदेव भट्ट एह किताब के संस्कृत में अनुवाद कइले आ नाम दिहले 'कथासरित्सागर' ।'वेताल पन्चविन्शति' माने बेताल पच्चीसी 'कथा सरित सागर' के भाग ह ।बेताल पच्चीसी के कथा के बहुत भाषा में अनुवाद भइल ।ई कहानी खाली दिल बहलाव खाति ना रहे, एकर जातक कथा में जीवन के सार्थक करे के अनेक गहीर बात कहल गइल रहे ।

सोलहवीं कहानी में जीमूतवाहन के कथा बा ।कथा में जीमूतवाहन के महान आत्मा, महापुरुष बनावल गइल ।एह पात्र के महानता से प्रभावित मगध, मिथिला, बंगाल, उड़ीसा तक के लोग अपना के एह पात्र से जोड़ लिहले ।जीमूतवाहन एक जगह के ना रह गइले ।जातक कथा से निकल के धर्म आडंबर रहित लोकधर्म आ लोकपरब के देवता बन गइले ।समाज के उच्च वर्ग से लेके दलित वर्ग तक ले पुजल गइले । सामाजिक समन्वय के जवन स्थापना जीमूतवाहन से भइल उ कवनों आउर कथा आ पात्र में ना लउके ।मगध के महादलित जाति 'भुईयाँ' अपना के जीमूतवाहन से अधिका जोड़लस ।सामाजिक रूप से दलित आ बहिस्कृत एह समाज के छूआछूत के बंधन में बान्ह के परब त्योहार, रीत–रिवाजो में कवनों स्थान ना दिहल गइल रहे । महादलित एह जाति के जीमूतवाहन में एगो उद्धारकर्ता आ एगो अईसन देवता के रूप लउकल जेकरा के अपनावे में कवनों रोक ना रहे ।भुईयाँ जाति जीमूतवाहन के आपन कुलदेव बना लेले । जीमूतवाहन के आपन प्राण के आहुती देवे के पुण्यतिथि के आपन कुलपर्व घोसीत कइलस ।आ जीमूतवाहन के पुनर्जीवित भइला के खुशी में लगभग एक हफ्ता तक उत्सव मनावे के विधान कइलस । अब दलित जातियन के उत्सव पूजा पाठ के कवनों जानकारी त रहे ना, त लोक श्रुति के आधार पे आपन विध बना लिहले ।

बरत करे के लोकाचार बरत से पहिले नेहाय खाय के विधि लगभग हरेक लोक परब में बा ।

सांसारिक करम से अपना के मुक्त करके शरीर आ आत्मा के साफ सफाई के दिन ताकि बरत में शुद्धि रह सके ।बेटा बेटी से खानदान भरल रहे एह सोच के नेहान खाय के दिन अयीसने चीज खाये के विध बनावल गइल ।मडुआ (रागी) के आटा के रोटी, सतपुतिया के तरकारी आ नोनी के साग ।मडुआ के आटा खूब पसरेला, नोनी के साग आ सतपुतिया के लत्तरो के साथे इहे बात बा, एगो लत्तर मय खेत के छाप लेवेला ।खेतिहर उच्चवर्ग त शाक भाजी से शाकाहार कर ली बाकी दलित पिछड़ल वर्ग जेकरा भीरी एको धूर जमीन ना उ का खाई ? कुछ प्रदेश में मछली के शाकाहार मानल जाला ।मछली के भेद ह सिधरी आ पोठीया ।छोट मछरी जवन खूब अंडा देवेले आ आपन संख्या विस्तार करेले ।कुछ जगह झींगा मछरीयो के लोग एही क्रम में मानेला ।त बरत के दू दिन पहिले से मय गबड़ा– गड़ही, नहर–पोखर ऊबिछ के मछरी मरायी आ नेहाय खाय के दिन एकरे सेवन होला ।नेहाय खाय के दिन चूल्हा चौकी पबितर करके ओठगन (आटा के ठेकुआ जे लगभग एक हथेली के बराबर होला) बनी। जेतना लईका – लईकी, ओतने ओठगन। ई ओठगन तनी कडक होला, मानिता बा की एह ओठगन के खइला से एकरे लेखा देह बरियार होई ।

होत पराते, किरीन फूटे से बहुत पहिले मय मेहरारू लोग उठी आ इहे ओठगन से सरगही करी । सरगहीयों के विधान बा ।दू टूकी ओठगन चिल्हो आ सियारो के नाम पे घर के छान्ह छत पे फेंकाई की उहो लोग खा लेस ।अब चील आ सियार एह बरत में कैसे अइलें एकर कवनों प्रमाण नईखे ।सरगही के बाद पूरा 24 घंटा खाति निर्जला बरत शुरू होला ।बरत के दिन साँझ के मय मेहरारू लोग एक जगहा एकट्ठा होके पुजा करी ।एह लोक परब आ जातक कथा के बढ़त प्रभाव रहे कि बाद में जीवितपुत्रिका व्रत कथा गढ़ दिहल गइल ।शंकर भगवान आ पार्वती माई के बीच संवाद करा दिहल गइल कि जिउतिया के दिन जीमूतवाहन के पुजा करे के चाहीं ।दान धरम के बाकी एह पूजा में से लोक संस्कृति आ विधि के अलग ना करल जा सकल ।पीढ़ा पे माटी के चिल्हो सियारो बना के सिंदूर चढ़ावल, नेनुआ (तुरयी) के पत्ता पे जीउतिया के स्थापन कर के पीढ़ा के उठावल–बईठावल कवनों वेद में लिखल ना मिली । लोक संस्कृति के परब ह , दू–चार गीत गंगा मायी के, दू–चार गीत ब्रह्म बाबा के आ हो गइल पूजा । पुजा के बाद लोग जीउतिया के आपन बेटा बेटी के पहिराई ।जीउतिया बनवावहुं में सामाजिक विषमता रहे ।सम्पन्न लोग बेटा खाति सोना के आ बेटी खाति चांदी के जीउतिया बनवावत रहे ।बाकी जे निर्धन रहे उ एगो धागवो से काम चला लेत रहे ।बरत के दोसरा दिन पारन कइल जाला बरत के तूड़े खाति । एह दिन बूँट के अंकुरी, मडुआ के दाना आ नोनी के कच्चा साग लिलल जाला ।बूँट लगभग हर जगहा मिलेला एह से बरत के दुसरका दिन बूँट आ बेसन के विशेष कढ़ीनुमा व्यंजन बनेला । भोजपुर क्षेत्र में एकरा के टोरा कहल जाला ।टोरा आ भात खाके बरत तुड़ल जाला ।

खान–पान के वैज्ञानिक पहलू मडुआ के परयोग लोग प्रोटीन के स्रोत के रूप में करेला, एकर पानी सोखेवाला विशेष गुण के कारण पेचिश ग्रस्त रोगी के खिलावल जाला ।मलशुद्धि करे में आ आंत के ताकत पहुंचावे में मडुआ के जोड़ नईखे ।बाजार में रागी माल्ट के नाम से इहे मडुआ के सत्तू खूब बेचात बा ।नोनी आ सतपुतिया रेशेदार आ सुपाच्य सब्जी ह ।मडुआ, सतपुतिया से आंत के शोधन हो जाये आ बरत करके शरीर के आंतरिक पाचन क्रिया के तनिक आराम पहुंचावल आ फेर बूँट जईसन अनाज के खाना में शामिल करल पुरखन के वैज्ञानिक सोंच के परिणाम बुझात बा । ओठगन आटा, खांड़ भा गुड़ के मिलाके गाय के घीव में बनावल जाला ।आयुर्वेद में किरीन फूटे से पहिले एह तरह के पकवान (हलुआ, पुआ भा ठेकूआ) खाये के कहल बा ।एह परयोग से पित्त के शांति होला आ शरीर में अधकपारी जईसन रोग बाधा ना आवे । आगे के 24 घंटा भूखे के बा त खाली पेट में पित्त के प्रकोप हो सकेला, एकरा के सामित करे के उपाय में सरगही खाये के कर दियाइल ।पित्त के उत्पात बढ़े से पहिलहीं पित्त ना बढ़े एकर उपाय कर दिहल गइल

।लोक परब लोग खाति बनावल बा ।वैज्ञानिकता के धरम के आड़ देके जन मानुष मे प्रचलित कइल । लोगन के रहन सहन के सुधारल आ साथे–साथे संस्कृति के रक्षो लोकपरब के उद्देश्य होला । जीउतिया जईसन परब जवना में उंच–नीच, अमीर–गरीब के भेव भुला के माई आ संतान के परब बना दिहल गइल ।धरम आ देवता के परे करके राजा जीमूतवाहन के गुण गावल गइल ।एह दिन मेहरारू लोग बस इहे प्रार्थना करेला कि– हे जीउत ! जैसे तोहार बलिदान के बदला में तहरा जीवन के अर्दोआय बढ़ल ।ओइसहिन हमरो लईका–लईकी के अर्दोआय बढ़ाव ।

संदर्भ:

1. जीवित्पुत्रिका व्रत कथा, ठाकुर प्रसाद बुक सेलर्स, वाराणसी
2. मगध की रहस्यावृत साधना संस्कृति – डॉ. रवीन्द्र कुमार पाठक
3. बेताल बेताल पच्चीसी, विकिसोर्स
4. बुद्ध, भारतकोश

– शशी रंजन मिश्र

सब कुछ बाटे अपने गउवाँ में

डॉ. मोहन पाण्डेय 'भ्रमर' भोजपुरी के संवेदनशील कवि हई। कुशीनगर (उत्तर प्रदेश) में संस्कृत विद्यालय में इहाँ के शिक्षक बानी। समकालीन भोजपुरी साहित्य के एगो सशक्त रचनाकार। इहाँ के लेखनी में प्रकृति, समाज, राष्ट्रीय भावना आ नैतिक चिंतन के अनूठा मेल देखे के मिलेला। भोजपुरी माटी में जनमल 'भ्रमर' जी के रचना में लोक संस्कृति आ भोजपुरी भाषा के जियतार रंग दिखाई देला। उहाँ के भोजपुरी में खूब लिखले, रचले बानी। बाकिर भोजपुरी साहित्य इतिहासकार, आलोचक लोग के नजरी से लगभग इ अलोता ही रहल बा। आजु गैरखेमाबाज कवियन के शृंखला के 30वीं कड़ी में 'भ्रमर' जी के एगो कविता 'जिनगी के गीत' पऽ चर्चा होई। एह के केंद्र में गँवई जिनगी बा। मानवीय मूल्य, सामाजिक–आर्थिक परिवेश अउर समकालीन यथार्थ के एह कविता के माध्यम से उकेरल गइल बा। इ कविता, भोजपुरी लोक के माटी से उपजल बिया। नतीजतन एकरे में भोजपुरी के समरसता अउर भाव के गहराई एक साथे संनादित बा ।फिलहाल रउआ गीत देखीं।

'काहे तू भरमल बाड़ऽ, सहरे के दाँव में
सब कुछ बाटे अपने गउवाँ गिराँव में ।।

देस दुनिया के लोग, अइहें न कामें,
मतलब निकलिहें, होइहें अपने बेगाने
ठोकर लगी उहवाँ, काँटा गड़ी पाँव में,
सब कुछ बाटे अपने गउवाँ गिराँव में ।। 1 ।।
काहें...

बाटे सुख चैन इहाँ, सुख–दुख जानें,
गाढ़े समइया लोग भाई अस माने।
नवका विकास खाली किच–किच काँव में,
सब कुछ बाटे अपने गउवाँ गिराँव में ।। 2 ।।
काहें...

मिलेला सुकून देवी–देवता के पावें,
आँतर न होला, नित माथा टिकावें
सरगे से नीक बाटे, माटी अपने गाँव में,
सब कुछ बाटे अपने गउवाँ गिराँव में ।। 3 ।।
काहें..

'जिनगी के गीतश मिली बरगद के छाँव में,
नाहीं ललचिहऽ बबुआ तरकुल के ठाँव में।
मोहन के बतिया मनिहऽ जितिहऽ जहान में,
सब कुछ बाटे अपने गउवाँ गिराँव में ।। 4 ।।
काहें...

'भ्रमर' जी के एह 'जिनगी क'

– विकास तिवार

इतिहास - आवाह्न

अखिल भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

(दिसम्बर - 1947 में गोपालगंज में राहुल सांकृत्यायन जी के भाषण)

भाई बहिन लोगिन सरसुती माई के दरबार में जे अपने सब एतना मान हमरा के देहलीं ह ओकरा खातिर हम अपना के धन– धन समझतानी। अबहीन हमनी के इ मतारी भाखा के केहू ना पूछत आछत बा लेकिन कतेक दिनवा हो, कतेक दिनवा हमनी के देस के दिन लउटी आउर उहो दिनवा आई जब हमनी के भाखा सिरताज बनी। एक करोड से बेसी बीर बंका जेकर पूत, उ भाखा केतना दिन ले भिखमंगीन बनल रही।

हिनुई हमनी के बडकी माई ह आ ओकरा से नेह तूरे के काम नइखे आज हिनुतान में लोग के राज भइल. हमनी के राजा रानी के राज ना चाहीं इ लोग के राज तबे निमन चली जब लोग हुसियार होई. आ उ बूझे कि दुनिया जहान में का हो रहल बा। अपना देस में केहू बेपढल ना रहे एकर कवन रहता बा ? जदि हिनुईए में लिखे पढे के होई त हमनी के लइका पचासो बरिस में पढुआ ना बनी आ एने हमनी के दसे बारह बरिस में समूचा मुलुक के पढुआ बनावे के बा. कइसे होई ई कुलि हमरा समझ में एकर एके गो रहता बा. सोझे एक पेडिया रहता जे आपन–आपन बोली में सबके पढावल गुनावल जाये।

जउना मुलुक में सधारण लोग के राज न होला उहां कुलि जगह इहे कइल जाला कि लोग के बुरबक बना के रखल जाला चार दरजा ले लइका लइकिन के अपना बोली में कुल बात आ बिचार कुल पढावल जाये बुढ भा सेयान केहू आपन बोली में पढल लिखल चाहे तो ओकरो खातिर मोसकिल नइखे. फेनु सब लोग ककहरा पढ के अपना अपना बोली में पोथी आ खबर बांचे लागी। समूचा लोग के पढुआ होखे खातिर इ बहुत जरूरी बा, अदमी के पास उ इलिम बा उ कल मसीन बा कि सातो दीन आउर धरती के पेट के पानी उबीछ के बहरा क देओ, एतने से बरहो महिना हमनी के पानी मिल सकेला ओकरा खातिर देव के आगे हाथ जोरलाके काम नइखे हिंदुस्तान के गरीबी दूर होखे के रहता इहे बा कि बेसी से बेसी मील करखाना खुले अ बरहो मास खेत पटवे के पानी आ खादर जुटल रहे। हमनी क बोली छपरा बलिया चौपारण अउर आरा जिले में तो बडले बा बनारस के बोली में बहुत कम फरक बा चम्पारन सारन साहाबाद पलामू आ थोर बहुत रांचीयो में हमनिये के बोली बोलल जाला। ओने बलिया, गाजीपुर आजमगढ गोरखपुर देवरिया समुचा आरा जवनपुर, मिरजापुर के कुछ कुछ हिस्सा इहे भाखा बोलेला हमनी के बोली के एक गो फरका प्रांत बने के चाही एकर कवनो मतलब नइखे कि एके बोली बयवहार वाला लोग दू जगह बनल रहे अंगरेज लोगन के बात अउरी रहे, जइसे जइसे राज दखत होत गइल अपना काम में जेवर सुविस्ता दिखाइल ओइसने उ लोग बटवरा कइलक।

आजकल के जमाना में छिटपुट रहला से काम ना चली हमनी के पछिम के प्रांत में पूरब वाला जिला जइसे बलियां देवरिया वगैरह के पूछार सबसे पाछे होला पहीलहु से एही होत आ रहल बा आउर आगहूं इहे होई अपना फरका प्रांत भइला पर अपना घर के सोरहो आना मालिक मुख्तार हमनिये के होइब. फेनु कुल काम अपने मन मोताबिक होई. हमनी के आपन पंचइती राज प्रजातंत्र कायम करेके चाहीं, अलग राज के नाम अपने सब मल्ल रखीं चाहे कासी रखीं चाहे दुनो जिला मिला के मल्ल कासी रखीं. चाहे भोजपुर राखीं, अपने सब के मन बाकि

इस बात ध्यान रखीं कि गाछ गिनला के काम नइखे, मतलब हवे फल से चाहे कइसहूं होवे, हमनी के एकगो पंचइती राज होवे के चाहीं. इ बनावल अपना सबे के हाथ में हवे। बोटवा त अपनहीं सब के देबे के परी, फिर कइसे नाही आपन पंचइती राज बनी, हमनी के बोली में पोथी ना लिखाइल किछु छोटकी छोटकी पोथी छपइबो कइल त एहे दु चार गो मेला घुमनी। ओइसे जब तब भला होवे रघुवीर बाबू के, मनोरंजन बाबू के जे दु चार गो गीत लिख के समूचा धरती में फइला दिहलें। बिदेसिया, फिरंगिया अजहूं ले हमनी के मन से भोर ना परेला। हमनी के बोली में केतना बढिया कवितई हो सकेला। एके अपने सब सिवान के सभा में बिसराम के बिरहा में देखले होइब जा बिसराम के कविताई अइसन ओइसन कविताई नइखे। हम सभत्तर के कविताई पढले सुनले बानीं बाकि बिसराम अइसन कविताई बहुत कमे देखे में आवेला। परमेसरी बाबू के धनी धनी कहेके चाहीं कि उ बिसराम के 22 गो बिरहा लिख लेहलन। इ मालूम रहित कि एतना हाल दे बिसराम चल दिहें त हमीं उनके साथ एक महिना घुमले होती हमनी के बोली में केतना जोर हवे? केतना तेज बा इ अपने सब भिखारी ठाकुर के नाटक में देखले होइब। नाटक देखे खातिर दस दस पनरह हजार के भीड एही से मालूम हो जाला कि नाटक में पबलिक के रस आवेला जवना चीज में रस आवे, उहे कविताई ह, केहू के जे लमहर नाक होखे आउर उ खाली दोसे सुंघत फिरे तो ओकरा खातिर का कहल जाई। हम ए से कहत बानी कि भिखारी ठाकुर के नाटक में दोस नइखे, अगर दोस बा तो ओकर कारण भिखारी ठाकुर नइखन, ओकर कारण हवें पढुवा लोग, उहे लोग जे अपना बोली से नेह देखाइत भिखारी ठाकुर के नाटक देखित आ ओमे कउनो बात सुझाइत त दोस मिट जाइत। भिखारी ठाकुर हमनी के एगो अनगढ हिरा हवें. उनकर में कुल गुण बा, खाली एने ओने तनी तुन्नी छांटे के काम बा।

हम त कहब कि हमनी के बोली में पतिरिका चाहे अखबार निकले के चाहीं जवना में लोग के दूसरो बात समझावल जाये, अउरी नइकी पुरनकी कवितो छापल जाये। हमनी के भाखा के बारे में डाकटर उदय नारायण तिवारी ढेर काम कइलें एगो बडका पोथी अंगरेजी में ओही के बारे में लिखलें जे पुरान कागज अउरी पोथी मिले त ओकरो के बटोर के छपावे के चाहीं। उ अभागे होई जे आपन जनम धरती अउरी जनम के बोली से पियार ना रखी. पियार के मन में रखला के काम नइखे ओके परगट करेके चाहीं। हमनी के भाई बहीन चारो खूंट में कतहूं जे मिलेला त अपना बोली में बतियावे में तनिको संकोच ना करेला हम देखिलें कि दोसरो दोसरा जगह के लोग अपना बोली बानी छोडि के अरबी फारसी बुके लागेला आ अपन जनम धरती के छुपावेला अब हमनी के तनी पग अउर बढ़ावे के काम बा आ अइसन करेके बा जिनिगिये में आपन प्रजातंत्र मल्ल कासी पंचायती राज कायम हो जाए।

– राहुल सांकृत्यायन

❀❀❀

कवि/लेखक लोगन से निहोरा

(1) रचना मौलिक अ सामयिक होखे के चाही।

(2) रचना के टाइप कई के भोजपुरी वार्ता के ई–मेल में भेजाई।

(3) जातियता, सम्प्रदायिक्ता युक्त रचना के न सकारल जाई।

(4) रचना के साथे आपन पासपोर्ट साइज फोटो भी भेजब।

(5) कवनो रचना सम्पादक मण्डल के स्वीकृति के बादे छापल जाई।

विश्लेषण

भोजपुरी नॉव के महाभारत काल से जुड़ाव

तेग अली तेग, भोजपुरी के पहिला गजलकार हवे आ 1895 के करीब इनिकर पहिला गजल संग्रह (बदमाश दर्पण) प्रकाशित भइल रहे जवन इनिकर 23 गो भोजपुरी गजलन के संग्रह ह। एह किताब के दोबारा प्रकाशन ज्ञानमण्डल (वाराणसी) से पं. शिवप्रसाद मिश्र ''रुद्र कशिकेय) जी एह किताब के ''तेग अली और कशिका'' नाव से प्रकाशित कइनी।बाद में पं. पुरुषोत्तमलाल दवे ऋषि जी एह किताब के '' बदमाश दर्पण'' नाव से प्रकाशित कइनी आ फेरु 2002 में विश्वविद्यालय प्रकाशन से इ किताब ''बदमाश–दर्पण '' प्रकाशित भइल।

इ बात एह किताब के प्रकाशकीय में पुरुषोत्तमदास मोदी जी लिखले बानी। एहि किताब के प्रस्तावना में नारायण दास जी बड़हन प्रस्तावना लिखले बानी।एह प्रस्तावना में उहां के तेग अली तेग जी के परिचय, उहां के गजलन के बारे में बतावत भोजपुरी भाषा के इतिहास आ साहित्य प संछेप में बाकिर जरुरी चर्चा कइले बानी। लगभग 7 पन्ना (14 पेज) में इहां के प्रस्तावना लिखले बानी आ एहि प्रस्तावना में इहां के दू गो जानकारी बड़ा संछेप में लिखले बानी। तेग अली के भाषा एह प्रस्तावना में नारायण दास जी बड़ा सोझ आ सपाट शब्द में लिखले बानी कि तेग अली के मातृभाषा '' भोजपुरी ' रहे।''

भोजपुरी क इतिहास –

एह में नारायणदास जी, प्राचीन संस्कृति भा वैदिक संस्कति के दू हिस्सा में देखावत बानी, एगो लौकिक संस्कृत आ दुसरका प्रात के जनम के बात क रहल बानी। प्रात आ लौकिक संस्कृत के मेल से पाली (प्राकृत के एगो रुप) के जनम भइल आ एह से शौरसेनी, मागधी आइल आ जहँा शौरसेनी आ मागधी के मेल भइल ओह के अर्द्ध–मागधी कहि रहल बानी जवन बिहार आ पुर्वांचल के भाषा ह।एहि में भोजपुरी आवेले। नारायणदास जी एहिजा, ग्रियर्सन के दिहल नाव ''बिहारी भाषा'' के बात करत बिहारी भाषा के हिन्दी के उपभाषा लिखले बानी आ एहि बिहारी भाषा के पश्चिमी बिहारी के भोजपुरी नाव दिहल बा। इहां के लिखत बानी कि एहि क्षेत्र के शाहाबाद के भोजपुर के नाव प ''भोजपुरी'' नाव पड़ल। भोजकट, से भोजपुरी (महाभारत काल से जुड़ाव) नारायण दास जी पौराणिक शब्द कोश, पृ 385, हिन्दी शब्द सागर के रेफरेंस ले के लिखत बानी कि – भोजपुर के नाव पहिले भोजकट रहे जवन रुक्मी के राजधानी रहे। कथा ह कि महाभारत काल में विदर्भ के राजकुमार रुक्मी अपना बहिन रुक्मिणी के वियाह शिशुपाल से करावे खातिर आयोजन कइले रहले। बाकिर रुक्मिणी त वासुदेव कृष्ण से प्रेम करत रहली आ रुक्मिणी के संदेसा पा के भगवान कृष्ण, रुक्मिणी के अपना संगे ले के चल गइले। भगवान कृष्ण के रुक्मी संगे युद्ध भइल जवना में रुक्मी युद्ध हार गइल। एह हार से दुखी हो के उ प्रण कइलस कि जबले उ भगवान कृष्ण के वध ना करी तबले उ विदर्भ के राजधानी कुण्डिनगर में गोड़ ना धरी। चुकि रुक्मी के प्रण पुरा ना भइल एह से उ जरासंध के राज्य के लगे भोजकट नाव के नगर बसा के रहे लागल।

चक्रे भोजकटं नाम निवासाय महत् पुरम्।
अहत्वा दुर्मति कृष्णामप्रत्यूह यवीयसीम्।
कुपिडनं न प्रवेक्ष्यामीत्यक्त्वा तत्रावसद् रुषा॥

(श्रीमद्भागवत, 10–54–52)

शिशुपाल, रुक्मी आ मगधराज जरासंध इ तीनो लो भगवान कृष्ण के विरोधी रहे आ एहि से

रुक्मी आपन नगर जरासंध के छत्रछाया में यानि कि मगध राज्य के एगो हिस्सा में भोजकट नगरी बसवले ।बाद में एहि भोजकट के नाव भोजपुरी पड़ल ।
नारायण दास जी के इ लेख, तेग अली तेग के किताब 'बदमाश दर्पण' के प्रस्तावना में पढे के मिल जाई । पौराणिक आधार के बात करत, महर्षि विश्वामित्र के समयकाल में उनुकर जजमान, भोजा लोगन के नाव आवेला । चुकि महर्षि विश्वामित्र के कर्मस्थली बक्सर के आसपास रहे एह से इहो एगो आधार हो सकेला कि भोजा लोगन के नगर भोजकट भा भोजनगरी भा भोजपुर रहे । बिल्कुल इ कुल्ह प्राचीन आ पौराणिक बात ह, एह कुल्ह के भाषाशास्त्र के हिसाब से भा भाषा विज्ञान के हिसाब से कवनो ठोस सबूत नइखे मिलल आ इतिहास, प्रमाण जोहेला ।तबो, अतना त तय बा कि एह क्षेत्र के भाषा के नाव एह क्षेत्र के नगर से पड़ल होई आ इहो तय बा कि सातवा–आठवा शताब्दी में जब एह भाषा में लिखाए के प्रमाण मिल रहल बा।बौद्ध साधु संत पंथ लोगन के लेखनी में ऋत एह के माने इहे होई कि एह भाषा के बोले वाला आमजन त ओह से पहिले के होइहें ।
कुल्ह मिला के (भोजकट से भोजपुर आ भोजपुरी) हमरा खातिर नया जानकारी रहल ह, त सोचनी ह कि भगवान कृष्ण के समयकाल से जुड़ल एह जानकारी के रउवा सभ संगे शेअर कइल जाउ । एह किताब के जरुर पढीं सभे । एह किताब में तकरीबन 100 गो से बेसी अइसन शब्द भोजपुरी के बड़ुवे जवन अब लगभग विलुप्त हो चुकल बा ।

– पुरुषोत्तमदास मोदी

आदमी लापता

आदमी लापता हो गईल
बार–बार ढूढ़ला पर भी मिल
नइखे पावत, लापता कइसे हो
गईल एकर केहू के पता नइखे।
आदमी लापता हो गईल।
गुम लापता आदमी पूछत–पूछत
आपन पता वापस काहें नइखे
आ जात, अपने पता
ढूढ़ते–ढूढ़त आदमी लापता हो
गईल ।
आदमी के लापता होखते अनेक
चीज लापता हो गइली जेकर
हमके पता नइखे।
बूझा गइलें गाँवन क अलाव
चलि गईल आपस क प्रेम–भाव
हो गईल सैकड़ों मील दूर आपन
पास–पड़ोस भूला गईल
घर–घरेलूपन नाता–रिश्ता सब
टूटि गईल, सगा भाई छूटि
गईल अपने के ढूढ़ते–ढूढ़त
आदमी लापता हो गईल ।
लापता मेहरारु–मरद क चरित्र,
माई क ममता पिता क सन्तान
स्नेह बच्चन क पिता–प्रेम
ए सबकी लापता होते ही
आदमी लापता हो गईल ।
बच्चन की तरह–सम्हारि के
रखला पर भी ईमान, धर्म,
आस्था, विश्वास, नेकी,
प्रेम–भाव, श्रद्धा सबकी लापता
होते ही आदमी लापता हो
गईल।
जेवने गाँव, कस्बा, शहर में हम
सब पूरी आजादी से रहत रहली
हँ सब लापता हो गईल।
लापता आपन राज्य, देश
देशभक्ति आ देश–धर्म जेवने
लोकतंत्र पर हम सब गर्व करत
रहली हँ।
पूरी दुनिया में–सिर उठा के
चलत रहली हँ इहो लापता हो
गईल।
लापता हो गईल राष्ट्रीयता।
बदलत वक्त की हवा में हमार
दिल–दिमाग बदलि गईल बा।
एके सम्हारि के रखला क हमरी
पास कूबत नइखे, अपनी
सोच–विचार क दीया अपने
आप बूझ गईल बा।
या बूझा दिहल गईल बा। मिट
गईल आदमी क वजूद एकर
केहू के पता नइखे आदमी
लापता हो गईल ।

– जगत नारायण

परेटो सिद्धांत (80/20 के सिद्धांत) आ भोजपुरी

विल्फ्रेडो फ्रेडरिको दमासो परेटो, इटली के सामाजिक आ राजनैतिक वैज्ञानिक, दर्शन के जानकार , सिविल इंजिनियर आ अर्थशास्त्री रहले । अइसे त इ बहुत कुछ सिद्धान्त दिहले बाकिर इनिकर एगो सिद्धान्त बड़ा मशहूर भइल जवना के परेटो सिद्धान्त भा 80/20 के सिद्धान्त कहल जाला ।इनिका सिद्धान्त के हिसाब से –

''लगभग 80% जवन परिणाम आवेला ओकरा पाछे मात्र 20% के हाथ में रहेला ।''

1857 के करीब परेटो के इ सिद्धान्तआइल रहे । एहि सिद्धान्त के तनि अउरी विस्तार दिहले अमेरिका के इंजिनियर आ रोमानिया के निवासी जोसीफ एम जुरन ।उ जब परेटो के सिद्धान्त के विस्तार से जब जांच कइले त उनुका मालूम चलल कि इटली के 80% जमीन प लगभग 20% लोगन के मालिकाना हक बा ।एह के अउरी विस्तार देत जुरन इ कहले कि 80% समस्या (Consequences or outcome) के वजह 20 % के वजह से बा जवन कारण (cause) के रुप में देखल गइल ।असल में परेटो के सिद्धान्त मूल रुप से अर्थशास्त्र के आधार प रहे जवना में 20 % के कमाई 80% के बराबर बा आ इ अउरी क्षेत्रन में देसन में देखे के मिलल । एह सिद्धान्त के आगे बढ़ावत अउरी कई गो क्षेत्र में एकर इस्तेमाल भइल । जइसे माइक्रोसाफ्ट एहि सिद्धान्त के आजमावत इ देखलस कि जदि उ आपन टॉप 20% ठनहे के समस्या के समाधान क देत बा त ओकर 80% सिस्टम के रुके भा Crash होखे के समस्या के समाधान मिल जात बा ।

चुकि हम गुणवत्ता विभाग से बानी त इ देखले बानी जा कि जदि कवनो सामान के अंतिम परिणाम में बहुत खराबी रहत बा आ जब आंकड़ा जुटावल जाला त ओह में इहे मिलेला कि जदि 100 गो प्रोडक्ट खराब भइल बा त ओह 100 के खराब

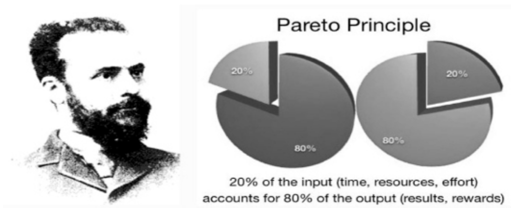

करे में लगभग 20% मशीन ऑपरेटर के हाथ रहेला ।(एह सिद्धान्त के माने इ ना भइल कि 20% लोग 80% प्रोडक्ट दे सकेला ।बलुक कवनो चीज के होखे में 20% लोगन के योगदान बेसी रहेला ।) अब जदि भोजपुरी के बात होखे त भोजपुरी गीत –संगीत के वर्तमान स्थिति (फुहर अश्लील स्त्री विरोधी) तक ले आवे में 20 % लोगन के योगदान बा ।इ 20% लोग के इम्पैक्ट अतना बा कि अइसन लागेला कि भोजपुरी में लगभग 80% अइसने होला ।

ठीक इहे चीज भोजपुरी भाषा के ले के बा । भोजपुरी भाषा के मात्र गीत–गाना वाला चीज साबित करे में मात्र 20% लोगन के हाथ बा बाकिर एह लो के इम्पैक्ट 80% क्षेत्र के प्रभाव में ले लेता ।परेटो के सिद्धान्त के रउवा सभ अपना गांव – जवार – देस आदि प लगा के देख सकेनी ।रउरा गांव में 80% जमीन मात्र 20% लोगन के लगे होई ।ठीक अइसहीं भारत के 80% कमाई प 20% भा एह से कुछ कम लोगन के हाथ बा ।एह के जदि उल्टा क के देखीं, भारत के वर्तमान स्थिति के बनावे में एहि 20% लोगन के हाथ बा ।एह के अउरी बढिया से देखब त मालूम चली कि इहे 20% लोग तइ क रहल बा कि भारत कइसन रही ।सिक्स सिगमा के नाव रउवा सभ सुनले होखब भा टोटल क्वालिटी कंट्रोल के नाव रउवा सभ सुनले होखब ।इ दुनो के आधार परेटो के सिद्धान्त ह ।

– नबीन कुमार

डोली

विकास के बयार अउर बदलत मान्यता का चलते कुछ रीति– रिवाज, संस्कृति–संसाधन जमीन से उधिआ रहल बा।गाँव गिराँव में जिनके घर बीचे गाँव में रहे, उनकर बहुत बड़ासत होखे। लोग कहे फलाने के घर बीच गाँव में हवे। अब ई मान्यता बदल गईल। अब ते केहू के घर बहरे सड़क पर होई त लोग के कहत सुनाला जे फलाने के घर का पूछेके, सड़के पर बिराजता। ओतना घरी बीच गाँव में जाये–पहुँचे खातिर कोली रहे आ सहर बजार में गली कहाव।चार चकिया गाड़ी ना रहे,सम्पन्न बड़कवा लो के लगे तेज रफ्तार चले खातिर घोड़ा के सवारी होखे। कवनो बिआह बरिआत के मोका पर दुलहा के डोली , कोली से निबह जात रहे। डोली में कनियाँ के बिदाई के चलन रहल हवे। सकिस्ता जगह होखे तबो डोली कवनो तरे सभका दुआर पर लाग जात रहे,कवनो अण्डस ना होखे पगडण्डी पातर ठहर से डोली ले जाये में।

रात बिरात,कुबेरा सुबेरा,जब केहू बेमार अजार होखे त डोलिये एगो संसाधन रहे रोगिहा के बैद का ठाँव पहुँचे में।निरधन गरीब लो के डोली के मसूल देवे के समरथाह ना रहे त छोटी चुकी खटिया के जोगाड़ से खटोला बना के कारज निबाह लेत रहे। डोली के सजावट सिङार ,ऊपर के ओहार अउकात का हिसाब से देखते बने। कवनो नामी गिरामी कनियाँ के डोली अपना महत्ता बिसेसता से डोला बोलात रहे। ईजत राखे में, मरयादा ढोवे में डोली अपने आप मरयादा के परयाय बन गइल।

सुकवि (मलिक मोहम्मद जायसी) के रचल ‘पद्मावत’ महाकाव्य में डोली के महत्ता जानि के मन में अदभुत भाव के उपज सहजे भेंटा जाला। डोली ,राजा रतनसेन के जेहलखाना से बाहर करे में जवन भूमिका निभवलस ओकर बखान त अलगे बा,परम सुन्दरी रानी पद्मावती के ईजति नसइले से बाँच

गईल ।इतिहास के, साहित्य के पोथी पढ़ला से देंहि के रोवाँ ठाढ़ हो जाला।

अनेकन साहित्यकार ,काव्यकार लोग अर्थी के डोली के संज्ञा देले बा। ई जगहीं रचना में डोली के परियोग मानव– मन के भावुकता प्रदान करे में भरपूर सहयोगी बा। डोली कहार बिना आ कहार डोली बिना अस्तित्वहीन हवे। इन्हने के अटूट प्रेम सम्बन्ध दुनियाँ में मिसाल कायम कइले बा।डोली कहार के नाम उचारन एके साथे होखेला। डोली के भार त कान्हे पर जवन होखे बाकिर एगो बिसवास–भरोसा के बड़हन भार कपारे प लेहले,कुसलता जोगावत मंजिल तक चहोंपला के चिन्ता के भार कुछ ढेरे बुझात।कहारी करे वालन के नमन करत जीवे नइखीं अघात।

डोली के एगो नाँव पालकी हवे।पालकी के स्वरबोध हिया के आहलादित,प्रकम्पित करे में कवनो कसर ना छोड़े। एगो लमहर कालखण्ड में द्रुतगामी वाहन–संसाधन का अभाव में डोली के असवारी कहि के सम्बोधित कइल जात रहे,से अब नइखे।निरगुनियाँ भजन लिखे–गावे वाले लोग बेर बेर डोली कहार के बात जीवात्मा के प्रस्थान करे के बेरा के बरनन कइले बा। कलम चलते घरी कवि महातम राय (विनोद) जी के रचना मन परल त

जियरा भावुक हो उठल

रचि रचि कइदा सिङार मोरे भउजी,
अइलें दुअरवाँ कहार।

डोली एक ओर अनुराग, लज्जा, कोतूहल के तिजोरी ह, त सत्ती, भरोसा, बिसवास के खजनवों हवे । सजोर– नजोर, सुख –दुख में बराबर के भाव रखे में कुसल साधक का भूमिका में मिली । समतावादी सद्‌गुन से सनाइल तटस्थ तपस्वी का रूप में, परोपकारी बनि के हरदम तइयारे रहे । कनियाँ के बिदाई के बेरा डोली ,बखरी के असल दुआरी पर ओहार सजा के लाग जात रहे । कनियाँ के माई,चाची,फूआ, मौसी,बहिन,भउजी लोग कुछ सिखावन का साथे खोइंछा दे के बइठा देसु। कहार लोग जब डोली कान्हे पर उठा के चले लागे त घर के सगरो सब पूका फारि के रोवे लागे,ओने कनियाँ के रोवाई आ वियोगपना में ओतना दूरी तक चलत रहे जवले हार थाक न जास।

भोजपुरी के पुरोधा कवि धरीक्षण मिश्र जी के एगो हियाछुवत गीत अपना समय के बेजोड़ रचना हव.... ..काहे खातिर डोली में रोवत जाले कनियाँ।जीवात्मा के सम्बन्ध परमेश्वर से जतावत निरगुनियाँ लोग बहुत ढेर लोकगीतन के सृजन कइलें जेहमे डोली कहार के जिकिर भरपूर मिलेला ....डोलिया कहार लेइके अइलें मोर सजनवाँ सजनवाँ हो मोर माङेलन गवनवाँ । डोली कहीं मिलन के उल्लास त कहीं रुखसती के पीरा,कहीं कुरुझत लचारी त कहीं मुदइयो के डर के चोट,समान भाव से अङेजत रहल। नीमन–बाउर, टेढ़–सोझ अनेकन संस्कृतियन के सम्बाहक डोली अब अतिरिछ हो गइल बाकिर साहित्यकार लो के मन–कलम से अब तलक ले भावनात्मक लगाव बनवले बा ।

– कृष्णदेव द्धघायल

समय बड़ा बलवान रे मनवा !

समय बड़ा बलवान रे मनवा!
समय धरावे नाम रे!
समय कहे परसा, परसु, त समय कहे परसुराम रे!

रंक बनेला राजा समझा समय के अइसन चलवा।
कबो देखावे सोझ डहर ही, कबो बिगाड़े तलवा।
समय के आगे केहू न भागे,
समय चले अविराम रे!

समय कहे परसा, परसु त, समय कहे परसुराम रे!
केहू बदे ई समय रुके ना, सुने न कवनो बतिया।
समय से चंदा सूरज आवें, समय से दिनवा रतिया।
जब जेकर ई चाहे ओकर,
कई दे काम तमाम रे!

समय कहे परसा, परसु त, समय कहे परसुराम रे!
समय के सच्चा साथी ऊ बा, जे दी ए के मनवा।
करम करी जे करते जाई छोड़ के सब अभिमनवा।
धारा से तट पर ले आवे

समय ही बहियाँ थाम रे!
समय कहे परसा, परसु त, समय कहे परसुराम रे!
जीयत जिनगी सब जन अपने समय के दीहा मोल।
आजु काल्ह पे काम न टारा, छन सगरो अनमोल।
एक बात ई सीख का साथी,
कईल समय पर काम रे!
समय कहे परसा, परसु, त, समय कहे परसुराम रे!

– श्वेता राय

इतिहास के आईना में केसरिया बौद्ध स्तूप

– राकेश कुमार रत्न

केसरिया बौद्ध स्तूप, जवन बिहार के पूर्वी चंपारण जिला में स्थित बा, ओहिजा के महत्व आ इतिहास के बारे में बहुत चर्चा हो रहल बा। ई स्तूप भगवान बुद्ध के जीवन से जुड़ल बा आ बौद्ध धर्म के अनुयायी लोग खातिर बहुत पवित्र स्थल बा।

केसरिया बौद्ध स्तूप के खुदाई के दौरान कई प्राचीन अवशेष मिलल बा, जवन कि ई स्तूप के महत्व के और भी बढ़ा देले बा। एह स्तूप के संरक्षण आ प्रचार के काम लगातार जारी बा, ताकि एकर महत्व के और भी लोग जान सकें। केसरिया बौद्ध स्तूप के बारे में और जानकारी के लिहाज से, ई बौद्ध धर्म के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थल बा, आ एकर दर्शन करे खातिर लोग दूर–दूर से आवेला। केसरिया बौद्ध स्तूप पर पर्यटक लोग के आवाजाही बढ़ल बा। ई स्तूप भगवान बुद्ध के जीवन से जुड़ल बा आ बौद्ध धर्म के अनुयायी लोग खातिर बहुत पवित्र स्थल बा। पर्यटक लोग एहिजा भगवान बुद्ध के शांति आ ज्ञान के संदेश से जुड़ाव महसूस करेला। केसरिया बौद्ध स्तूप के महत्व के बारे में जानकारी देत घूमेवाला, पर्यटक लोग एकर सुंदरता आ ऐतिहासिक महत्व के अनुभव करेला। एहिजा के शांत वातावरण आ प्राकृतिक सौंदर्य पर्यटक लोग के आकर्षित करेला।

केसरिया बौद्ध स्तूप पर पर्यटक लोग के आवाजाही से स्थानीय अर्थव्यवस्था में भी बढ़ावा हो रहल बा। महात्मा बुद्ध सेवा संस्थान के अध्यक्ष सीताराम यादव कहेलन की केसरिया बौद्ध स्तूप के विकास बहुत जरूरी बा।सबसे पहिले बौद्ध सर्क्रीट से जोड़े के मांग करत बानी,केसरिया बौद्ध डेवलपमेंट सेन्टर के अध्यक्ष के के जायसवाल कहत बारे की बौद्ध स्तूप के उत्थान ला हमरे संगठन लगातार माननीय लोगन के पास पत्राचार करत बा।

- राकेश कुमार रत्न
पत्रकार व सचिव भोजपुरी विकास मंच

❁❁❁

खेती के उद्योग बनावऽ !
गॉव–गॉव खुशहाली लावऽ ।

बहटिअवला से कबहूं
भोजपुरी के विकास ना होई
हंकड़ के बोलऽ निज भाषा
के अनदेखी बर्दास ना होई

प्रतिरोध

हेमा चेहरा पर आइल पसीना पोछली। मुँह पर आइल बार ठीक क के जुड़ा नीयर लपेट दिहली। बालकोनी से नीचे देखली सून सड़क दूर तक गइल रहे। स्ट्रीट लाइट झिलमिलात रहली स। एक्का – दुक्का कार सन् सनात निकल जास स त पाछे क लाल बत्ती दूर तक झिलमिलात रहे। रात का सन्नाटा में पूरा शहर सुतल रहे, जइसे दिन भर काम कइला का बाद आराम करत होखे, थकइनी मिटावत होखे। का से का हो गइल, का सोच के आइल रहली का हो गइल। विधाता के लेख अजीब होला। केहू पढ़ ना पावेला कि आगे का होई। होनी अपने खींच के ले आवेले बाकिर ई त होनी ना अनहोनी रहलि ह जवन आज भइल ह। हेमा क जिनगी सून सड़क हो जाई। सड़क पर पसरल कोलतार जइसे करिया बनवले बा, ठीक ओही तरे उनका जिनगी पर लागल कोलतार कुल्हि निकाई लील जाई। केहू ना मानी कि उनकर गलती ना रहल। अम्मा जी त सोझे कहि दीहें थपरी एके हाथे थोरे बाजी। आज का बाद हमे का कहल जाई हम खुदे नइखीं बता सकत। बाकिए का करीं केवनो चारा ना रहल ह। उनकरा मजबूरी के मानी ?

हेमा का सोझा एगो बड़हन सवाल कइल गइल जवना में ऊ विचार का आन्ही में उधियाये लगली। गावें ऊ बड़ा खुस रहली। सास–ससुर के नेह छोह भरपूर मिले। मरद कमात रहे। नितीन माई–बाबू क अकेल लइका रहले। घरे खेतियो बारी रहे। देखते–देखते हेमा दू लइकन के महतारी बन गइली। शशांक पहिलउठी के रहलन। पहिलउठी के लड़का भइला पर घरे हफ्ता भर बधाव बाजल आ मंगल गवाइल । आजओ एह पढ़ल–लिखल जमाना में ना जानी काहे पहिलउठी के लड़की भइला पर लोग के मुँह फूल के कुप्पा हो जाला। लइका होते सबकर चेहरा चमक जाला। पतोह के मान बढ़ जाला। शशांक पेट में रहलन त ससुरजी कबों–कबों घाघ के कहावत सुनावस–

> **नसकट खटिया, बहकट जोय**
> **जो पहिलउठी बिटिया होय**
> **घर रहे बउरहा भाय....**
> **घाघ कहे दुख कहाँ समाय**

मतलब पहिलउंठी के बिटिया दुख देबे वाली होली स। केतना सड़ल विचार बा। लइका लइकी में कवन फरक आ एहमे मेहरारू के कवन दोस बा। ऊ देवी दुर्गा के मनावत रहसु कि हे माता ।लाज तोहरे हाथ में बा। देखिहऽ सब कर हंसी–ठट्ठा के मसाला हम ना बनीं। देवी उनकर सुन लिहली आ शशांक भइले। उनका पर दुलार बढ़ गइल। चार बरिस का बाद सोनू भइलन। अब का पूछे के रहे। हेमा सबका आंखिन के पुतरी हो गइली। नितीन अइलन त हेमा के बाहि में भरि लिहलन ।साँचों तू कुल के उजागर क दिहलू। नितीन पटना में कदम कुआें में एगो मकान किराया पर लेके रहसु। एगो बैंक में ऊ कैशियर रहले। अच्छा वेतन मिले। बड़ा ठाठ–बाट से रहसु।

दशहरा का छुट्टी में नितीन आइल रहले। मेला में से बड़ा समान खरीद के ले आइल रहलन। हेमा कहली दूनो बेटा इस्कूल जात बाड़न स। गाँव के पढ़ाई त जनते बानी हम चाहत बानी कि रउरा कीहें हमहू चलती। ओहिजे नाँव लिखवा देती। देखत नइखीं लइका पढ़ाई के होड़ लागल बा। परदेशी बाबूजी के पतोह बक्सर रहि के लइका पढ़ावति बा एहिजा दूनो बेकति अक्सरूआ जिनगी बिता रहल बा। का करो लोग बचवन के जिनगी क सवाल बा। आज काल्हु त अंरेजी के जमाना बा। सभ ओही में पढ़ावत लिखावत बा ।हम काहे लइकन का भविष्य से खेलवाड़ करीं। हेमा के बात नितीन बड़ा गौर से सुनलन आ कहलन बात त तू ठीके कहत बाडू बाकिर हम ओह विचार के ना हई। हमार माईबाबू

बड़ा साध से हमके पालल पोसल आ जब उनकर सेवा के मोका आइल त हम तोहके शहर में बोला ले जाई आऊ लोग के एक गिलास पानी मोहाल हो जा? का ई चाहत बाड़ू ?"हमार ई कहे के मतलब नइखे। जवन कुछ होखी माई–वाबू का राय से होखी। बिना ओह लोग से पूछले हम कवनो काम करे के तेयार नइखीं।'हेमा कहली।'

'त हूँ पूछ ल' नितीन कहलन।

'देखीं हमार ना राउर पूछल ठीक होखी।ले जाये के रउरा बा।हम त हुक्मी हई जवन रउरा हुकुम देव तवन करव, 'हेमा कहली'।

'साँचो !' नितीन हेमा का आँख में शरारत भरल आँख डालत कहले। 'चली हटीं रउरा त हर बात में 'चुसक मसाले लउकेला।' हेमा तनी नोना के कहली। अगिला दिन माई बाबू का सोझा लइकन के पढ़ावे के बात आइल। एह बात पर सभ सहमत रहे बाकिर तय भइल कि गरमी का छुट्टी का बाद। हेमा लइकन का साथे पटना चल जइहें। गरमी क छुट्टी बितते हेमा लइकन का साथ पटना आ गइल रहली। नितीन दू कमरा का फ्लेट में रहसु। एगो में लइका सुतसु स दूसरा में नितीन अपने हेमा का साथे सुतसु। केहू आवे जाये त गेस्ट रूम भा ड्राइंगरूम (बैठक खाना) में सुता दिहल जाय। नितीन हेमा के लेके पटना घुमवलन। पटना शहर के गीतन में हेमा बहुत नाँव सुनले रहली ह।उनकर दादी अक्सर कजरी गावे–

भइले पटना शहर गुलजार
कचौड़ी गली भूल गइले बलमू

दादी के इयाद परते हेमा का होठ पर छनभर खातिर ई गीत आके लोप हो गइल। नितीन चाहस कि हेमा आधुनिक ढंग से रहसु बाकिर हेमा के गाँव के जवन संस्कार मिलल रहे ओके छोड़े में बड़ा संकोच होखे। नितीन एक दिन सलवार सूट खरीद ले अइलन।ऊ हेमा से पहिरे के आग्रह कइलन।हेमा ई कहत इनकार क दिहली कि एके हम पहिर ना सकी। रउरा पहिरवही के बा त नेट पर कढ़ाई के साड़ी ले आई।आज काल्हू त एक से एक साड़ी बाड़ी स।सलवार सूट पहिरला का बाद हमें लागेला कि ऊ लाज जवन स्त्री जाति के धन ह खत्म हो गइल। साड़ी में जहाँ कुल्हि अंग ढाक दिहल जाला सलवार सूट में ऊ उभार पर आ जाला।'

'हम एहके ना मान सकीं।'

ओह दिन सलवार–समीज के लेके दूनो बेकति में बाताबाती भइल रहे।बाद में हेमा मामला के सुलझावत कहली–राउर बात हम मान लेत बानी। लइका इस्कूल चल जालन स त हम कमरा में पहिर लेत बानी बाकिर बाहर ना पहिरब।'

लइका स्कूले गइलन स त हेमा सलवार सूट पहिर लेले रहलीं। नितीन के मरदानगी के बोखार उतर गइल रहे।ऊ हेमा के बाँहि में भर क ले ले रहलन आउर कहलन केतना नीक लागत बाड़ू। हेमा कमरा में लागल राम लछुमन जानकी के तस्वीर के इसारा करत कहली–'हऊ देखीं सीताजी साड़ी पहिरले बाड़ी त बाउर लागत बाड़ी ?' नितीन चुप हो गइल रहलन। हेमा सूट उतार के ध दिहली तहियने से ना पहिरली। नितीन चहलन हेमा ब्यूटी पार्लर में जाके सिर के बाल छोट करवा लेसु बाकिर हेमा एह पर तइयार ना भइली। एहू पर गरमा–गरमी भइल रहे। ओह दिन–रात के नितीन अइलन त ऊ शराब पियले रहलन। हेमा विरोध कइली। ओह दिन ऊ लइकन की लगे जाके सुत गइली। सबेरे नितीन बहुत नाराज रहलन। हेमा समुझवली 'रउरा ई का करत बानी। शराब हमनी का संस्कार में ना ह। ई रउरा के बरबाद क दी।रउरा ना बरबाद होखब त ऊ हमके बरबाद क दी।लइकन पर बड़ा खराब असर परी।रउरा गोड़े गिरत बानी एके छोड़ दीं।'

नितीन कहलन 'तू गाँव के मूरुख औरत का जनवू कि आज काल्हु के समाज कहाँ बढ़ि गईल बा।' हेमा कहली 'आपन परम्परा, संस्कृति, रीति–रिवाज छोड़लके रउरा आगे–आगे बढ़ल मानत बानी त मानी।हमरा नजर में त ई नीचे गिरल मानल जाई। आज समाज केतना नीचे गिर गइल बा।ई शराबे ह कि बेटी–बहिन के इज्जत जोगवल मोसकिल हो गइल बा। रउरा एह नशा के लत के छोड़ दी। रउरा से हमार दसो नोह जोर के निहोरा बा।' ''नितीन जोर से हँसलन आ कहलन'' हूँ हमार मेहरारू ना होके बुझात बा हमार मास्टर भइल बाड़ू।

अरे जवन करत बाड़ू तवन करा। ओकरा आगे मत बढ़ऽ। हम कमात बानी, जांगर वेठावत बानी, खून जरावत बानी साझ के थकान मेटावे खातिर तनी सा से लेत बानी कवन एह में बुराई बा ?

हेमा कहली 'रउरा खुद समझदार बानी। हम गाँव के मेहरारू रउरा के ढेर का समझाई। गाँव में बियाहल गइल जरूर बानी वाकिर हमहूँ जवन पढ़ले लिखले रहली, ओह में शराब के महिमा हम कबो ना पढ़ली। हम रउरा से सवाल जबाव का करब, चलीं खाना खाई आफिस के जाये के देर होत बा।' हेमा नितीन के डाइनिंग टेबल पर बइठा दिहली। ओह दिन एकरा बाद कवनो बात ना भइल। नितीन फेनु शराब पी के ना अइलन। हेमा समझली कि उनकर विरोध सफल हो गइल बा। आज नितीन बड़ा देर से घरे अइलन। करीब रात के आठ बजत रहुए ऊ सीधे अपना कमरा में चल गइलन। हेमा लइकन के खियावत रहुई। खइला का बाद ऊ खाना लेके गउवी त नितीन शराब का नशा में दुन्न रहुवन। ऊ बतउवन कि बाहर भोजन क लेले बाड़न। ऊ कहुवन–'तुम भी खाना खाकर आओ।' नितीन के आवाज लड़खड़ात रहुवे। पूरा कमरा शराब का दुर्गन्ध से भरल रहुए।

हेमा कमरा से बाहर आ गउवी। खाना खाके साफ सफाई करुवीं। लइकन का कमरा में गउवीं। दुनो सूत गइल रहुवन स। उन्हन के, लिहाफ ठीक से ओढ़ा के हेमा धीरे से नितीन का कमरा में अउवीं। नितीन मोबाइल पर कवनो वीडियो फिल्म देखत रहुवन। हेमा के देखते बाँह में भरि लिहुवन। कहुवन 'रानी ! आज एगो पिक्चर एहु मोबाइल पर तोहके देखावे के ले आइल बानी। एह में देखऽ कि दुनिया केतना आगे बढ़ गइल बा। आज तू कहाँ बाड़ू आज मन बड़ा मस्ती में बा। एह मूड के एही तरे रहे दीहऽ। एह में रामायण के परबचन मत करें लगिहऽ। बहुत दिन का बाद त मूड बनल बा। हेमा तू हमार जान हऊ आज चाहत बानी कि तूह देखा द हमके केतना पियार करत बाड़ू।' नितीन हेमा के बइठा के उनकरा सोझा मोबाइल क के वीडियो चला दिहलन। फिल्म में एगो मेहरारू आ मरद के वहशीपन रहे। ऊ मेहरारू ऊ करत रहे जवन हेमा का नजर में महाघृणित काम रहे। ऊ एह अश्लीलता के देख के काँप गइली। मेहरारू ना ई मेहरारू का नाँव पर कलंक बा, जवन अइसन घिन्नाये लायक काम करति बा। उनकर चित फरियाये लागल आ जाके 'वाशबेसिन' में कै क दिहली। कल्हि खाइल बाहर आ गइल। ऊ मुँह धोवली फेन नितीन का पासे गइली। ऊ कहली– 'ई रउरा का देखत बानी। अइसन कुल्हि देखला से सिवाय गंदगी के दिमाग में का भरी ?'

देखऽ रानी ! रामायण के पन्ना मत खोलऽ। हमरा नशा के रंगीन बना द। हमहूँ चाहत बानी कि अइसने कुछ कइल जाय भगवान कसम मजा आ जाई।' नितीन हेमा के अपना ओर खीचत कहलन। हेमा रोज त ना बाकिर आज प्रतिरोध कइली। जोर से झटक दिहली। कहली–'चलीं चुप मार के सूतीं। रउरा नीयर आदमी के ई शोभा नइखे देत।' तू ढेर लेक्चर देबू कि जवन कहतानी–तवन करबू ?' नितीन लाल–लाल आँखिन के गुरेरत कहलन। 'कबों ना अइसन करव। हम बजार के रण्डी ना हई, घरे क लक्ष्मी हई। मर्यादा के सीमा हम कबो ना लांघव।' हेमा तनी कड़ेर होके कहली। उनकर बात सुनके नितीन आगे बढ़के जोर से उनकर ब्लाउज खिंचलन जवन फाट के आधा हिस्सा उनकरा हाथ में चल गइल।

हेमा के छाती उघार हो गइल। ऊ उठ के खाड़ हो गइली आ कहली 'हम जात बानी लइकन का कमरा में सूतब, ऊ आगे बढ़ल चहली तबले नितीन उनकरा आगे जाके उनकर रास्ता रोक के अइसन धक्का दिहलन जवना से हेमा बेड पर गिर गइली। नितीन छउक के उनकरा ऊपर चढ़ गइलन। हेमा ऊ करे के तइयार ना रहली जवन नितीन चाहसु। उन्हें लागल कि आजु उनकर पति ना उनकरा देह पर राक्षस सवार बा जवन नोचत–चोथत बा। ऊ पूरा जोर लगा के प्रतिरोध कइली। नितीन खिनिस में बउरा गइलन। ऊ तीन चार थपरा हेमा के गाल पर जड़ दिहलन। हेमा संगे अब तक अइसन कुछो ना ऊ कइले रहले ह। हेमा कुछ ठंडा परली। नितीन ओके हेमा क समर्पण बूझि के फेनु आपन हरकत शुरू कइले। अचानक हेमा में

कहाँ से बल आइल ऊ दूनो गोड़ से नितीन क एतना जोर से झटकली कि ऊ हवा में उछललन आ कपारे का भरे फर्श पर गिर गइलन। ई कुल्हि पलक झपकते भइल। हेमा आखि मौर लिहली। कुछ देर शान्त रहली फेनु धीरे–धीरे आँख खोलि के देखली नितीन जमीन पर गिरल रहलन। उनकरा कपार से खून के धारा चलत फर्श पर फइल गइल रहे। खने भर में खिनिसाइल हेमा के मन में करुणा के धारा फूट पड़त। ऊ उठके नितीन के हिलावे डोलावे लगली। 'छोटका के पापा। उठीं जी। अरे का भइल।' ऊ गौर से देखली नशा में डूबल नितीन के परान सरीर छोड़ देले रहे। का होखे के, का हो गइल। उनकरा आँखि का सोझा अन्हार छा गइल। पुलिस आ के उन्हें पकड़ ले जाई। उनकरा के सजा हो जाई। लइका अनाथ हो जइहन स। भा... ना अइसन ना होखी। ऊ लइकन के अनाथ ना होखे दिहन। ऊ पूरा प्रयास करिहन। जरूरत पड़ी त झूठो बोलिहन जवन भइल ह ओह में उनकर दोस कवन बा। बाकिर उनकर नाँव पति–हन्ता हो गइल। हो गइल त हो जा। घर का गृहिणी आ बाजारू अउरत में फरक रहल हऽ। एह में हमरा सोझा कुछो ना आ सके। एतना त साहस हर मेहरारू में होखे के चाही। हम खेलवना ना हईं जेके जे जइसे चाहे खेल दे। हेमा के चेहरा पर आइल कुल घबड़ाहट खतम हो गइल। ऊ फोन उठा के पुलिस के खबर दिहली कि उनकरा पति के मौत हो गइल बा। मौत कइसे भइल उनकरा के नइखे मालूम। ऊ लइकन के साथे दोसरा बेड रूम में सुतल रहली ह।

हेमा फ्लेट का बालकोनी में खाड़ होके सड़क की ओर देखत रहली। दूर तक सड़क उदास लउके जइसे उनकरा उदासी में शामिल होखे। हेमा का मन में अन्हार अंजोर के लड़ाई चलत रहे। अन्हार कहे–'हूँ ठीक ना कइलू ह अपने हाथे आपन माँग धो दिहलू। अइसन मेहरारू ना होखे।' अंजोर कहे 'जवन कइलू ह ऊ ठीक कइलू ह। मेहरारू खेलवना ह का कि जइसे चाहऽ ओकरा साथे बेवहार करऽ। उहो हाड़–मांस के ह ओहू का पीरा बथ्था होले। ओके अपने नीयर समझे के चाही। आज आत्म समर्पण के मतलब रहल ह रोज उहे दोहरावल जाई। जवना को सोच ओकाई आवति वा ओके कवनो हालत में बरदास ना कइल जा सकत रहे। कुक्कुर बिलार ना घर के वियहती हईं। ओह में ऊ अपना रक्षा में जवन कइली ह नितीन के दंड देवे के कवनो मन्सा ना रहे शराब का नशा में ऊ बेसुध होके ओइसे गिर गइलन ह त उनकर का दोष?' हेमा एगो निश्चय पर पहुँच गइलि आगे जवन होखी देखल जाई सड़क पर पुलिस जीप आवति लउकल। ऊ कमरा में आ गइली। थोरकी देर में पुलिस उनकरा कमरा में दाखिल हो गइल। इंसपेक्टर के ऊ नितीन के कमरा का ओर इशारा क दिहली। हल्ला–गुल्ला सुनके लइको जाग गइलन स। ऊ कुछ ना समझ पवलन कि का हो गइल। पुलिस इंसपेक्टर आके पुछलस 'राउर शक केहू पर बा?'

हेमा कहली–'ना साहेब हमनी क केहू दुश्मन नइखे। रात देर पी के आइल रहुवन, ओही में लागत बा बेड से गिर गइलन ह। उनकर दशा देख के हम त लइकन का कमरा में सूतल रहली है। नींद टूटल ह त उनकर हाल जाने खातिर पल्ला हटाके देखलीं, त हमार होश उड़ गइल ह। हमार संसार उजड़ गइल दरोगा जी!' हेमा का आँख में आँसू आ गइल रहलन स। इंसपेक्टर धीरज बन्हवले। लाश सील क के पुलिस ले गइल। दूनो लइका आके पूछलन स–'माई ई का भइल ह।' हेमा दूनो के धके भोंकार छोड़ के रोवे लगली 'अरे माई हो माई....।'

– गिरजा शंकर राय गिरिजेश

❀❀❀

ललकरले बा भोजपुरी समाज
भ्रष्टाचार के होई विनाश!

भोजपुरी राज्य बनावल जाई
सबके काम दिआवल जाई!

कथा गइल बन में

प्रेमशीला शुक्ल जतने हिंदी के हई ओतने भोजपुरी के। ऊ हिंदी के एह हते हई कि भोजपुरी उनकर मातृभाषा ह। ऊ आपन मातृभाषा के आगे बढ़ि रचना–आलोचना के भाषा के रूप में अपनवली। भोजपुरी में कहानी लिखेली, भोजपुरी के कहानीकार हई। कहानी गढ़े आ गढ़ले के कहे में मन उनकर खूब रमल बा। जवन आ जवना तरे ऊ कहानी कहेली ओकरा प विचार कइला प बुझा जाला कि कथा कहे के उनकर जवन कला बा ओह में उनकर कथा सुनले के बहुते बड़हन जोगदान बा। ऊ हुँकारी भरत कथा सुनले बाड़ी आ हुँकारी भरावत कहानी पढ़वा लेवे में सफल बाड़ी, जैनेन्द्र कुमार अस। ऊ भोजपुरी के अपना ढंग के एगो पहिल महिला कहानीकार हई जे अपना कहानियन में मेहरारुन के जिनिगी के जटिल सवालन के बहुत थाह–थाह के पूरा ताना–बाना के भितरी से उठावत बाड़ी। ऊ खाली मेहरारुअने के कथा नइखी लिखले काहे कि अकेल अइसन कवनो कथा एह लोक के ना हो सकेला। मेहरारुअन के लेके लिखल कवनो कहानी भा उपन्यास भा नाटक भा कुछो खाली मेहरारुअने के ना होके पूरा समाज के होला। ऊ समूच समाज प होला। काहे कि कवनो आदमी होखे भा कवनो समुदाय, ओकर आदत, सोभाव, सुख–दुःख, संघर्ष, मान–मरजाद, जय–पराजय आ ओकर भाषा–भेस–भूसा तक सब समाज के भीतर घटित होला। ओकर वजह आ क्रिया–प्रतिक्रिया सब।

प्रेमशीला शुक्ल के कहानियन प बात जब चली त अइसन भला कइसे होई कि समकालीन भोजपुरी साहित्य (पत्रिका) के जिकिर ना होई, ठीक वइसही जड़से 1950 के बाद के महत्वपूर्ण कथाकार मार्कण्डेय के सोच 'कल्पना' (पत्रिका) के जिकिर होला। एह पत्रिका के प्रकाशन आ प्रेमशीला जी के भोजपुरी कहानी–लेखन दूनो भोजपुरी भाषा आ साहित्य खातिर एगो महत्वपूर्ण सम्पदा रहल। एह पत्रिका में छपल उनकर पहिल कहानी ह (पियासल पंडुक)। एकरा बाद (तपेसर), (जाए के बेरिया), (प्रेम कि बेर), (जनाना दीदी), के बात– ई कुल्हि कहानी एही पत्रिका में छपली स आ पढ़वइया लोग के ध्यान बखूबी अपना ओर खिंचली स। एहिजा ई कहे में कवनो संकोच नइखे कि ऊ एह पत्रिका के आपन खोज हई।

भारतीय समाज में मेहरारू घर–परिवार आ समाज में अनेक तरह के गंभीर रचनात्मक भूमिका में होली तब्बो उनकर हालत ठीक ना रहल हिंदी संरचना स्त्री आ दलित–पिछडा विरोधी बा। आर्थिक रूप से बहुत पिछडल बाड़ी कहीं भी भोजपुरी क्षेत्र आ समाज, ओकर पूरा के पूरा सामाजिक – सांस्कृतिक आजादी के पहिले से लेके आज तक एह क्षेत्र के हर जाति, समुदाय आ धरम–सम्प्रदाय के लोग आपन गाँव–घर से दूर कलकत्ता मा अउरो कहीं रोजी–रोजगार के तलाश में जात रहल बा आ बहुते खराब हालत में, अनेक तरह के कष्ट आ संकट से मुकाबिला करत आपन आ आपन परिवार के केहू तरे पेट पालत रहल बा। एक त भयावह गरीबी, परिवार के लोगन से विछोह आ संगे–संगे परदेस के कठिन अमानवीय परिस्थिति आ दूसर मोहग्रस्त सामंती नैतिकता। एकर मार सबसे बेसी घरे रहत ओह औरत के झेले के परत रहे जेकर पति परदेस गइल रहल रहें। (पियासल पंडुक) केहू चाहे त पढ़ ले। एगो औरत के हिया के हाहाकार चिर अंदाज में सुनल–महसूसल

जा सकेला। कबोकाल भा अकसरहा, सामंती नैतिकता के खोल में पुरुष आपन अक्खड़पन के बड़ा चतुराई से छुपा लेला आ आपन मनवाहक छिछोरपनो के। औरतन के पासे एह तरह के कवनो स्पेस एह सामंती संस्कृति के भीतर नइखे हासिल। प्रेमशीला जी एह बात के अपना कहानियन में बहुत सलीका से ले आइल बाड़ी। (पियासल पंडुक) आ (जाए के बेरिया) जइसन कहानी में जाति आ जेंडर के जटिल पेंच प एगो बहस के गुंजाइश लउकत बा। (जाए के बेरिया) कहल जा सकेला कि ठाकुर रामलखन आ कइन सुनरी के करुण प्रेमकथा ह। बाकी, ई पूरा कथा उदारवादी सामंती नैतिकता के जाति आ जेंडर के सवाल पर कवनो तर्कसंगत नवीय निष्कर्ष के तलाश के बजाय ओह सामंती ढाँचा के तरफदारी में मजबूरी के हवाले खेल जाए के वास्तव के अभिव्यक्ति ह। प्रेमशीला जी बहुत मद्धिम अंदाज में एह कथा के सिरिजले बाड़ी, जइसे चुल्हा के मधुर आँच में सुस्वादु भोजन बनेला। कहानी के आखिर में, सुनरी के माई के विलाप बा जाए के बेरिया दागा पवलू ए बछिया। आ एही विलाप के साथे कहानी पूरा होत विया। ई विलाप पढ़ेवाला के मन में देर ले गूँजेला। सुनरी के मुअला प पंडित, ठाकुर रामलखन के बियही तिरिया आ सग–सम्बन्धी सभे सुनरी के मुँहे आग देवे आ काम–किरिया करे से ठाकुर रामलखन के बरिज देत बा। सुनरी के घर के लोग आइल, ओकर घर के मेहरारू ओकर सिंगार करत बाड़ी स. ओकर भाग सराहत कि ''एहवात मरल दिया सुनरी''। सुनरी के माई आ घर के मेहरारुन के प्रतिक्रियन के बीचे रामलखन बाबू के देखल जरूरी बा। ऊ चूप बाड़न । उनका बुझाइल कि उनका 'भितरी के मैना के ठोर' केतू बान्हि दिहले बा। सवाल बा कि ई बान्ह केकर ह। त इहे ऊ बान्ह ह जवन ठाकुर से प्रेम आ संग–साथ के बादो सुनरी के ठाकुर के गिरही में प्रवेश से रोक देत बा। वियही के दरजा आ हक से महरूम राखत बा। रामलखन के बाप अपना मेहरारू से दूनो जना के संबंध के बारे में जवन निफिकिराह बात कहत बाड़न तवनो देखे के चाहीं। ऊ एह संबंध के कवनो नवा संबंध नइखन मानत, अइसन त ओहिजा होत आइल बा। कहानी में ई (बान्ह) बारम्बार आवत बा कई तरह से।

मेहनत–मजूरी करेवाली कोहाँइन सुनरी के 'वर्गान्तरित व्यक्तित्व' भी एह में बा। एकहरा पाठ से ई कहानी कबो नइखे खुल सकत। लागत बा कि एह में सुनरी के परिवार से कवनो प्रतिवाद नइखे। जवना ढंग से ई कहानी चलत बिया ओह में तीखा कुछो नइखे लागत। बाकी सोचे के जगह बा कि का सुनरी के घर के मेहरारुन के 'एहवात मुए' आ ओकर माई के 'दागा पावे' जस टिप्पणी के कुछ माने मतलब बा कि ना। एहवात मुअल कहनाम में ठाकुर परिवार से रिश्ता के उच्चार बा आ माई के विलाप में एह संबंध के सच्चाई के, सामंती संस्कृति के उदार फरेब के। भागि सराह आ रोआई दूनो मृत्यु से जुड़ल बा आ दूनो एक लेखा प्रतिवाद के दूगो स्तर ह। एह कहानी में ठाकुर रामलखन आ सुनरी के एगो छोट बेटियो बिया जवना के सवालन के जवाब ना ठाकुर के पास बा ना सुनरी के पास। ओकरा सवालन से बाबू साहब भितरिये हलकान बाड़न। एह हलकानी के समझल जरूरी बा। सुनरी के लाश के आरीपासी ऊ फूट–फूट रोअतिया, बाकी केहू ओकरा ओरी ध्यान नइखे देत। अपना रोआई के साथे ऊ अकेल बिया। वूझल जा सकेला कि केहू काहे नइखे ओकरा के चुप करावत। ना ठाकुर ना औरिये केहू। एह सम्बन्ध के जीयत वर्तमान के पेचीदा भविष्य के एह जगह से बूझल जा सकेला। 'पियासल पंडुक' में पुरुष प्रधान सामंती रीति–नीति आ दृष्टिकोण प एगो मेहरारू के बहुत संवेदनशील प्रतिक्रिया बा। बहरवाँसू पति के पत्नी के

प्रतिक्रिया परदेस से आइल पति के हरस–परस खातिर तरसत पत्नी के प्रतिक्रिया एगो मेहरारू के मन के भीतर के मारोड़। बाकी, ओकरा पारो मुक्ति के कवनो राह नइखे। ई बहुत बड़हन सचाई रहल वा हमनी के समाज ।'अहें तुई अइत' में आपन मन के बात खुल के कहे–सुने आ करे के अतृप्त चाहत वा जवन कि एगो मेहरारू के सराय के बाद बक्सा में मिलल ओकर चिष्ट्ठी से खुलत बा। सामंती–समाज में मेहरारुन के खुल के जिये के

कवनो स्पेस ना रहे। मन के बात मने में लिहले कतने पीढ़ी गुजर गइल। कहानी में उहे मन के बात खुलत बा एगो अफसोस के साथे। प्रेमशीला शुक्ल स्त्री शिक्षा के जबरदस्त पैरोकार बाड़ी। शिक्षा आ आर्थिक स्वावलम्बन के के बिना स्त्री–मुक्ति के सपना अधूरा बा। बदलत परिवेश में पड़े के बात बेटी के आपन बात ह। अब ऊ डट के आपन बात कहे आ अपना मुताबिक चले के फैसला करे के ओरी बढ़ रहल बाड़ी सा ऊ बूझ रहल बाड़ी स कि एहिजे से जिनगी के नया राह निकली। कहानी के भीतर से इहो बात खुलत बा कि पुरुष वर्चस्यो नया–नया ताल–पैंतरा रचे से बाज नइखे आवत।

'जाए के बेरिया', 'कुसुमावता कथा' आ 'तपेसर' में कामकाजी मेहरारू के भूमिका बा। दूगो में 'जाए के बेरिया' आ 'तपेसर' में ऊ जमींदार के हवेली में 'लउँड़ी' के आ 'कुसुमावता कथा' में कई घर में बर्तन माँजे आ झडू–पोंछा वाली 'दाई' के भूमिका में बाड़ी। एहिजा 'लउड़ी' आ 'दाई' के बीच के फरक जानल जरूरी बा। 'लउँही' पुरान सामंती संस्कृति के देशज कांसेप्ट ह आ (दाई) पूँजीवादी (शहरी) कल्चर के। लउड़ी' के तुलना में दाई के आपन मन मुताबिक काम करे आ छोड़े खातिर जादे स्पेस होला। कुछ कहहूँ आ सुनहुँ खातिर। तवे त 'कुसुमावता कथा' के कुसुमावता जे दाई के काम करेली, कथावाचिका से आपन दु:ख भरल दास्तान सुनावत बाड़ी। 'तपेसर' में तपेसर के मतारी लउँड़ी हई। ठाकुर साहेब के बखरी के आसरे गुजर–बसर करेवाली। उनकर मरदो बखरी के टहलुआ रहते बाकी का कि सामंती दबाव से आजिज आ सब छोड़छाड़ कतहूँ निकल गइल बाड़न। कहानी में एक तरफ महज इशारा काफी वा। एगो विरोध के तरफ इशारा। तपेसर के मतारी जतने हथजोरी करत रहेली, हवेली के जय–जयकार करत, कम उमिर के तपेसर में अतने तीखा प्रतिवाद भरल बा। ओकर आँख के चौकन्नापन देखि ठाकुर साहेब बेचैन हो उठत बाड़न।

आपन अंटी के चादर तपेसर के ओढ़ा के ओकरा के ढँका के बनावत चाहत बाड़न, अपना लायक बाकिर तपेसर के तन ढका जात वा चादर से मन ना। मन के भीतर कुछ उभार हो जात बा। देखे के बातया कि जाए के बेरिया' के जमीदार बाप रामलखनो अपने जनमावल बेटी के सवाल से हलकान बाड़न मतलब कि एह वर्ग के मूल परेशानी गरीब से उठे वाला सवालन से वा। जब कुँवर साहब के मोटवर गुलगुल गद्दा प मोका पा लोटत बा, त कुँवर के हाथे छड़ी से मार खाये के परत बा। मार खात तपेसर मालिक के सोझा एकदम निर्भीक बा। ऊ बेहकलइले 'आपन' के खोजे के बात करत बा। तपेसर के एह तेवर के देख के मालिक के बूझे में देरी नाहीं लागल कि बात अब बदल रहल बा। घरेलू हिंसा के सबसे बेसी मार लड़की आ मेहरारुन के झेले के परल बा। एह हिंसा के कवनो एगो रूप नइखे। आज के तारीख में एकर एक से एक भयावह रूप रोज–रोज देखे–सुने के मिल रहल बा। प्रेमशीला के नजर एहू समस्या के तरफ गइल बा। हिंसा परिवार के मर्यादित ढाँचा के भितरो घटित होत रहल बा। आ समाज के स्त्री के लेके जवन माइंड सेट बा ओह के चलते पुरुष से बेसी ऊ लइकी मेहरारू के झेले के परेला जे एह हिंसा से प्रभावित होला। प्रेमशीला के कथापात्र एह हिंसा के प्रतिकार के समझ राखेला। कुल–खनिदान आ परिवार के मोहक मर्यादित ढांचा के भीतर स्त्री के एडजस्टमेन्ट के हर कोशिशो ढाँचा के भितरी साँच के सोझा ला देला।

'जनाना दीदी' के सिधवा–सुन्नर–सुभेख बाकी अक्षम पति आपन अक्षमता के कारन उनका सोझा नरम रूप में पेश आवता, सुख खातिर उनका के अपने ओट में 'सुतंत्र' के छूट देत बा, निहोरा के शिल्प में। अक्षमता के बादो (ओट) के रूप में रहे के चाहत नइखे छोड़त। जनाना के अन्तर्द्वंद में एह शादी के औचित्य प सवाल के जगह मिलल बा। 'एगो रात एगो दिन' में एके परिवार के दूगो पीढ़ी के बीच के रहन–सहन आबात–बेहवार के बीच के अंतर के सहज चित्र बा। बाप–मतारी अपना नोकरी करेवाला बेटा–पतोह के शहरी निवास में आवत बा लोग आ एहिजा के माहौल के आदती ना भइला के कारन असहज महसूस करता लोग। आपुस में

बोलत–बतियावत बा लोग ऊ बतकही बहुत जीवंत बा। नया परिवेश आ जीवन–शैली के लेके ओह लोग में ना पुरापूरी नकार बा ना सेंकार। शहर आइल एह जोडी के बीच कुछ चूहलो चलत बा। एह चहल से एह उमिर के ओठ प मुस्की खिल उठत बा। एहिजा से ऊ लोग लवटि के जात नइखे जाए जाए होत जरूर बा। स्मृति में गाँचे रहत कुछ लोग के असहाय स्थितियो उभरत बा, जवन कि नकार–सॅकार के बीच संतुलन बनवले बा।

सामंती शोषण–उत्पीड़न आ ताल–पैंतरा के शिनाख्त के संगे संग ओकरा के लेके खीझ आ खिलाफत के लोकस्वर लोककथा के शिल्प में 'कथा गइल बन में' के विषय बा। कथा–कहनी के माने बतावत बात शुरू होत बा। कथा कहे आ सुने के माहौल बनत बा। दूगो कथावाचिका बाड़ी। आजी कथा के पहिलका पार्ट सुनावत बाड़ी आ सुनयना दुसरका। सामंती उत्पीड़न के प्रतिकार के प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति। लोककथा के अंत एही लाइन के साथे होला– 'कथा गइल वन में, सोचऽ अपना मन में।' प्रेमशीला शुक्ल के कहानियन में नया पीढ़ी के पात्र जे गरीब–उत्पीड़ित समुदाय के बाड़न, चाहे ऊ लइकी होखे भ लइका, बारम्बार आइल बाड़न। सामाजिक बदलाव में एह पीढ़ी के भूमिका के लेके ऊ गम्भीर बाड़ी। 'कथा गइल बन में' में एगो रेखियाउठान लइका बा जे राजा के अनुशासन के अस्वीकार करत बा आ सजा के रूप में फाँसी पावत बा। लोक जेकरा के नापसन करेला ओकरा से अनेक तरह से निपटेला। ओकर मजाक उड़ावे से लेके फाँसी प लटके तक। इनका कहानियन में सामंती संस्कृति के उलट–पुलट आलोचना आ ओकर प्रतिरोध बा। पूरापूरी जीवंत लोक मौजूद बा। कबो नगीच से त कबो दूर से लोकगीत के सुर लहरी सुनाई देत बुझाला। भोजपुर के टिपिकल शब्द जम के आइल बाड़न स, कहानी के विषय के जरूरी हिस्सा अस भोजपुरी कहानी के ई बौधिक स्त्री–स्वर बहुत सार्थक, महत्वपूर्ण आ गम्भीर बा।

– बलभद्र

भोजपुरी गीत

मन सीहरावन लागे, अमवा के छउँवा,
बड़ा नीक लागे, बलम तोर गउँवा।

तुलसी के चऊरा बा सबके अंगनवा,
हरियर लउकेला खेत खरिहनवा।
चलत डगरिया बहकी जाला पउँवा,
बड़ा नीक लागे, बलम तोर गउँवा।।

पुरुआ बयार बहे दरद जगावेला
पीहू पीहू पपीहा अगिया लगावेला
भोरे–भोरे महकेला महुआ के ठउँवा
बड़ा नीक लागे, बलम तोर गउँवा।।

– योगेन्द्र पांण्डेय

जगल

आज के दर्पण

दर्द छाती के जे अँखियन में सजवले होई।
प्रेम का गाँव में ऊ आगे लगवले होई।।
भर गइल होई मुहब्बत के गगरिया अचके।
जब केहू यादे का पनघट से उठौले होई।।
प्रीत के रीते मुहब्बत के चलन झलकत बा।
नाम हमरो केहू उनुका से बतवले होई।।
आ रहल बा जे गमक यादे का कान्हे चढ़के।
केहू केसर नू कहीं जिनगी के छुपवले होई।।
तहरा लिलरा से जे जौहर लहू टपकत बा।
होई अपने केहू, पत्थर जे चलवले होई।।

– डॉ. जौहर साफियाबादी

परम्परा-आंदोलन

अंधविश्वास क समाजीकरण

ई ओ समय के बात हवे जब हमनी अपना हाई स्कूल जाए खातिर पांच किलोमीटर पर अवस्थित एक कस्बानुमा बडहन गांव में रोज पैदल जाईल करीं। ई गांव एक बौद्ध कालीन प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान के रूप में लोरिया नाम से जानल जाला। बहुत प्राचीन काल में यही जा से बौद्ध भिक्षु लोग आउरी बौद्ध धर्म के प्रचारक गण बौद्ध धर्म के प्रचार करेला नेपाल ,तिब्बत, चीन जाईल करें। अशोक स्तंभ नंदनगढ़ (एक बौद्ध चैत्य आउर आउर बौद्ध केंद्र के प्रधान के निवास) आउर वीशियों छोट बड गढ़ जवना के स्थानीय लोग अपने भाषा में भीसा कहेला ।लौरिया प्राचीन इतिहास के अपना गोद में संरक्षित रख ले वा। ई सब प्राचीन पुरातत्व रूपी धरोहर बौद्ध कालीन इतिहास के गौरव गाथा के निदर्शन हवे ।गौरवमय ऐतिहासिक धरोहर के ईहवा रहला के बावजूद लौरिया आज सरकार के अवहेना आ उपेक्षा के शिकार बा।

ये इलाका के निवासी अत्यन्त सरल आउरी धर्मभीरु हौवन।येतही के लोग अशोक स्तंभ के लौर बाबा कहला। प्राचीन काल से अगहन के अन्हारी तेरस के मेला लागेला। पहिले ई मेला पशु मेला आ फैंसी मेला के रूप में लागल करें। आज समाज से बैल विलुक्ति के कगार पर बा येह से अब खाली फैन्सी मेला लागेला आ महिनवन चलेला। येह इलाका के गांव के स्त्री पुरुष लौर बाबा के एक देवता के रूप में मानेला आ बतासा, लड्डू ,पूरी, लपसी इत्यादि चढ़ा के आपन श्रद्धा निवेदन करेला। बहुत लोग कौनो मनौती यदि मानले रहेलन त पखाउज आउरी हुर्का के नाच करा के लौर बाबा के प्रसन्न करे के कोशिश करेला ।सुनने में आवेला की बहुत लोग के मनौती वाला मन्नत पुरा भी होला।

सम्राट अशोक द्वारा स्थापित ए स्तंभ के सर्वशीर्ष पर बाघ अवस्थित बा ।बाघ आ स्तंभ के बीच में कमल के फूल निर्मित बा।स्तंभ में नीचे पाली (मागधी प्राकृत) भाषा में ब्राह्मी लिपि में बौद्ध धर्म के उपदेश अंकित बा ।ए लिपि के देखके आनंद मार्ग प्रचारक संघ के संस्थापक व अध्यक्ष श्री प्रभात रंजन सरकार बतवनी कि ई लिपि लोरिया रीति में लिखल ब्राह्मी लिपि हवे।येही लिपि में लुंबिनी में भी बौद्ध धर्म के उपदेश उकेरल गैल बा ।जवना समय में ए लिपि के स्तंभ पर अंकित कैल गईल ओ समय लुंबिनी भी चंपारण के अंग रहे। सम्राट अशोक के शासनकाल के समय गोरखपुर देवरिया बस्ती भी चंपारण के ही अंतर्गत रहे।

ईस्ट इंडिया कंपनी के एफ प्रिंसेप नाम के एक कर्मचारी ये लिपि के पठनौद्धार कैलन, उनका स्मृति में उनकरा नाम पर कलिकाता में हुगली नदी पर एक घाट निर्माण भइल बा। गर्मी के मौसम में हमनी लगभग पांच बजे भोर में घर से लौरिया अवस्थित स्कूल में मार्निंग क्लास में समय से पहुंचे खातिर जरूर निकल जाई।हमनी जवना सड़क से लौरिया जाई ऊ एक कच्चा सड़क रहे। ओ समय तक ऊ सड़क पक्की सड़क न भइल रहे। ओही समय ये पुरान आउरी जिला मुख्यालय से ए इलाका के जोड़े वाला एकमात्र सड़क के पक्काकारण के काम में सरकार के पीडब्ल्यूडी विभाग हाथ लगवले रहे। सड़क के दोनों ओर से माटी काट के सड़क भरल जात रहे जवना कारण सड़क के रास्ते चले में काफी

असुविधा होखे । यही कारण हमनीं गांव से खुडारी रास्ता (खेत होके) से लौरिया दौड़त, उधम मचावत गैल आईल करीं। सड़क के पक्काकरण के नियत से सड़क के दुनु किनारे पर बड़ा–बड़ा बॉलडर पत्थर के शीला गीरावल गैल रहे हमनीं जवना रास्ता से लौरिया जाईं वो रास्ता में एक जंगली बैल के गाछ रहे। ओ गाछ के नीचे माटी के मुंड जैसन गोल बनाकर गांव के लोग भगवती माई के स्थान मान के पूजा करें। लोग कहे की भगवती माई काफी जागता हयी ।ये ही से ओ बेल के फल के कोई भय से ना छुए आ ना खाये के केहु के साहस रहे। हम स्वभाव से तनिक ढीठ (निडर) कीसिम के विद्यार्थी रहनी। हम रोज दु चार बेल अपना झोला में रख लीं आ टिफिन में अथवा स्कूल से वापस आवे के समय रास्ता में बेल खाईं। रास्ता में बुढीगंडक में हाथ धोईं आ पानी पीअल करीं। हमारा स्कूल जाए वाला साथी सब बेल खैला के शिकायत हमारा पिताजी से एक बार एक बार कैल लोग लेकिन हमार पिताजी ओ लोग के शिकायत सुन भर लेहनी हमरा से एकरा बारे में कभी कुछ ना कहानी आ ना पुछनी।

एक दिन हम दु जन साथी स्कूल से घर लौटते समय दुगो बड़ा बड़ा पत्थर के बॉलडर उठा के अपना–अपना कान्हा पर ढोके घरे ले अइनी जा। हमार साथी अपना पिताजी के भय से अपना घरे आपन पत्थर ना ले जा के हमारा घरे लेआ के रख देहलन। हम वो दुनु बॉलडर के अपना आंगन में गलथरी में रख देहनी। हमार आंगन माटी के कच्चा रहे। हमार माई ओ पत्थनर पर बर्तन माजे धोए लगली । लगभग एक बरस ऊ दुनु पत्थर हमरा आंगन के गलथरी में रहल आ हमार माई ओपर वर्तन धोवल मजाल के काम कैली। एक दिन रात में हम ओ दुनु बड़ा–बड़ा पत्थर के माटी से निकाल के अच्छा तरह साफ कर के घर के सामने अवस्थित पीपल के पेड़ के जड़ के समीप ले जा के रख देहनी। ए पीपल के गाछ के नीचे एक माटी के गोलाकार देवस्थान के रूप में बनाके ग्राम वासी पहिले से बरम बाबा के नाम से पूजा करेला लोग। हमरा ओतही ये दुनु पत्थर के धैला के दूसरे दिन प्रातः से ही ग्राम वासी लोग ये दुनु पत्थर के भी स्नान करा के सिंदूर, अच्छत, फुल, नैवेद्य चढ़ाके पूजा अर्चना शुरु कर देहलन ।ओ पत्थरन के पूजा के सिलसिला आज भी पूर्ववत चल रहल बा। लोग कहेला भगवान शिवाजी स्वयं बरम बाबा के लगे आ के पूजा करा रहल बानी आउरी ग्रामवासी के कल्याण कर रहल बानी।

हमरा आज भी ई समझ में ना आईल कि ई कैसन आस्था बा जवना में अंधविश्वास के चरम रूप देखाई दे रहल बा ।ये अज्ञान के अन्यतम पराकाष्ठा का ना कहल जाई? ये सामाजिक कृत्य के हम 'अन्धविश्वास के सामाजिक करण' नाम दे रहल बानी।

– आचार्य प्रतापादित्य

❀❀❀

आजादी क चीर हरन

हर दुर्योधन की भरी सभा में,
द्रोपदी क चीर खिंचाईल। सब
लोग बइठल देंखे तमाशा केहू
अगवाँ न आईल ।
श्री कृस्न जी चीर बढ़व लें
द्रोपदी क लाज
बचवलें ।दुर्योधन की जमात क
लोग बारी–बारी सत्ता के
हथियावत, नरेट ले भ्रष्टाचार
में डूबल, बाने राज–काज
चलावत, जनता शोषण की
चक्की में पिसति बा, आजादी
क चीर खींचल जाति बा अब
कहवाँ बाने श्री कृस्न जी,
जे आजादी क लाज बचइहें।।

– जगत नारायण वर्मा

भोजपुरी भाषा : उपेक्षा, संवैधानिक मान्यता आउर अमृत काल में अपेक्षा

– श्री नरसिंह

भोजपुरी एगो समृद्ध व जीवंत भाषा ह, जेके मुख्य रूप से बिहार आउर उत्तर प्रदेश के कई भाग में बोलल जाला, इ भाषा भारत के एगो विशाल भूखण्ड जवन उत्तर में बूढी गण्डक नारायणी से दक्षिण में विन्ध्य पर्वत तक, पश्चिम में प्रयागराज से पूरब में सोन तक फइलल बा। ए पवित्र भूमि के भोजपुर प्रदेश (काशी राज) के नाम से जानल जाला ।

2 .ए क्षेत्र के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश के सत्रह जिला देवरिया, गोरखपुर, कुशीनगर, महराजगंज, बस्ती, सिद्धार्थनगर, वाराणसी, मिर्जापुर, सोनभद्र, गाजीपुर, बलिया, जौनपुर, आजमगढ़, मऊ, भदोही, संतकबीरनगर, चन्दौली तथा बिहार के नौ जिला–भोजपुर, बक्सर, रोहतास, कैमूर, छपरा, सीवान, गोपालगंज, पूर्वी चमपारण, पश्चिम चम्पारण शामिल बा।

3. भोजपुर क्षेत्र के लगभग 12 करोड लोगन के एक मात्र भाषा भोजपुरी ह।

4. भोजपुरी, भाषा एक समृद्ध भाषा ह, आउर संवैधानिक दर्जा ला निर्धारित सब शर्त के पूरा करे ले। इ कवनो कृत्रिम भाषा ना ह, बल्कि हिंदी व उर्दू आउर अन्य भाषा के तरह जवन भारतीय संविधान के आठवीं अनुसूची में दर्ज कइल गईल बा, आपन सांस्कृतिक आउर सामाजिक पहचान रख ले बाड़ी , तथापि, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही एके उचित संवैधानिक मान्यता नईखे मिलल। निर्विवाद सत्य इ बा कि कवनो भाषा या वस्तु के महत्व ओकरे व्यापक उपयोग आउर सामाजिक स्वीकार्यता से निर्धारित होला ।यदि कवनो भाषा ,लोगन के शिक्षा, प्रशासन व सामाजिक जीवन में अपनावल जाला , त ओकर सांस्कृतिक आउर सामाजिक मूल्य बढ़ी जाला। एकरे बावजूद भोजपुरी के साथ अइसन व्यवहार ना भइल। जहाँ अन्य भाषा, जेकर बोले वालन के संख्या कम रहे, उनके संविधान क आठवीं अनुसूची में स्थान मिलल, वही भोजपुरी के दरकिनार कर दिहल गइल।ए संदर्भ में वैश्य युगीन मानसिकता भी स्पष्ट रूप से देखल जा सके ला । प्रत्येक युग के आपन गुणधर्म होला, विशेषता होले . वैश्य युग जवन आज चल रहल बा, के भी आपन विशेषता बा, गुणधर्म बा. जनमानस ए विशेषता से गहराई से प्रभावित रहेला वैश्य युग में जनमानस शिक्षा आउर अन्य कार्य के केवल धन व लाभ के दृष्टिकोण से आंकेला । संस्कृत में कहल गइल बा

**''यस्यास्ति वित्त स नरः कुलीनः,
स पंडितः स श्रुतवान् गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः,
सर्वे गुनाः कांचनमाश्रयन्ति।।''**

अर्थात, जेकरे पास धन बा,उहे कुलीन व विद्वान मानल जाला, गुण व योग्यता भी धन के आधार पर मापल जाला स ए दृष्टिकोण में यदि कवनो वस्तु आ कार्य धन उपार्जन के माध्यम नइखे , त ओकर मूल्य आउर सम्मान कम आंकल जाला ।भोजपुरी भाषा के साथ भी इहे स्थिति बा एके केवल सांस्कृतिक दृष्टि से देखल गइल, लेकिन व्यावहारिक लाभ व धन के अभाव में एकर महत्व कम आंकल गइल। हालांकि कुछ विद्यालय आउर महाविद्यालय में भोजपुरी पढ़ावल जाला , व नई शिक्षा नीति 2020 में भी मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा के अनुशंसा कइल गईल बा, फिर भी लोग एकर उपयोगिता मूल्य नइखे देखत। एकरें विपरीत, मैथिली भाषा के संवैधानिक मान्यता मिलला के कारण उहां के लोगन में भाषा के प्रति सम्मान आउर ओकर व्यावहारिक मूल्य स्पष्ट

रूप से दिखाई दे रहल बा । आज जब हम अमृत काल मना रहल बानी जा, तब भाषा के महत्व पर ध्यान देहल अउरी आवश्यक बा। भोजपुरी, जवन भारत के कई राज्य के मातृभाषा व सांस्कृतिक धरोहर ह, आज भी संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल नयखे। इ केवल औपचारिक उपेक्षा ना ह, बल्कि संविधान के समानता आउर न्याय के सिद्धांत जइसे अनुच्छेद 14 में कहल गइल बा "सब कुछ कानून की दृष्टि में बराबर है" के मूलभाव के प्रतिकूल बा। यदि एक भाषा के, जवना के लाखों लोग बोल रहल बाड़े आउर अपनवले बाड़न , संविधानिक मान्यता ना मिलला से, इ प्रश्न उठेता कि समानता आउर न्याय के मूल्य कहाँ गइल? इ केवल भाषा के प्रश्न नइखे , बल्कि सामाजिक सांस्कृतिक अधिकार व पहचान के भी प्रश्न बा। अमृत काल में जब हम विकास, शिक्षा व संस्कृति के जश्न मना रहल बानी, तब इ अत्यंत महत्वपूर्ण बा कि भाषा के प्रति समान व्यवहार सुनिश्चित कइल जाव। भोजपुरी के साथ भइल उपेक्षा स्पष्ट करेता कि भाषाई उपेक्षा व संवैधानिक अधिकार में असमानता अभी भी व्याप्त बा। भाषा केवल संवाद के माध्यम ना ह , इ संस्कृति, इतिहास आउर सामाजिक पहचान के धरोहर ह। इहाँ भाषा से तात्पर्य मातृभाषा से बा।

मातृभाषा उ भाषा ह जेकरे माध्यम से हमनी अपना भावना के सबसे स्वतंत्र, सहज आउर स्वाभाविक ढंग से अभिव्यक्त कर सके ली जइसे हमनी अपना माइ से संवाद करत समय करे ली ।
भाषा के सामाजिक–आर्थिक प्रगति व सांस्कृतिक विकास के बीच गहरा आउर अविभाज्य संबंध बा। जवने प्रकार भाषा मनुष्य के अंतर्निहित भाव आउर विचार क वाहक ह, वोही तरह से उ ओकरे प्राणशक्ति से भी गहराई से जुड़ल बा। कवनो व्यक्ति के अपने मातृभाषा में जेतना स्वतंत्रता व आत्मीयता से अपना भावना के व्यक्त करे के क्षमता होला , वोतना कवनो अन्य भाषा में ना होला। यदि कवनो व्यक्ति या समुदाय पर मातृभाषा के अतिरिक्त कवनो अन्य भाषा में लगातार संवाद करे के विवशता थोपल जाए, त उनके प्राणशक्ति धीरे–धीरे क्षीण हो जाई।इ स्थिति वो व्यक्ति आउर पूरे समुदाय के मानसिक संकट में धकेल देला। परिणामस्वरूप उनमें हीन भावना घर करे लागेला, जवन मानसिक दुर्बलता के मूल कारण ह।जेकर भाषा दबा दीहल जाला , उनके नैतिक शक्ति, कार्य–उत्साह आउर प्रतिरोध के क्षमता नष्ट हो जाला । अंततः उनमें पराजित मानसिकता विकसित होला , जेकरा कारण थोड़े समय में उनके प्राणशक्ति लगभग मृतप्राय हो जाला । अतः भाषा के दमन मानव–मन पर घातक प्रभाव डालेला ।इ दमन केवल संस्कृति के ही हनन ना करेला, बल्कि आर्थिक विकास के भी रोक देला । जवन समुदाय के भाषा दबा दीहल जाता, उ ना कबो सिर ऊँचा क के खड़ा हो पावेला आउर ना ही शोषण के चक्र से मुक्त हो पावेला ।उ सदैव आर्थिक रूप से पिछड़ल रहे ला आउर शोषण के जाल में फँसल रहेला ।

दुर्भाग्यवश, संपूर्ण विश्व, भारत सहित, ये त्रासदी से ग्रस्त बा। यही से अब कवनो भी परिस्थिति में भाषा के आउर अवदमन ना होखे के चाही। मातृभाषा के संरक्षण आउर संवर्धन ही कवनो भी समाज के सांस्कृतिक अस्मिता व आर्थिक प्रगति के प्रथम शर्त ह। अमृत काल में भोजपुरी भाषा का विकास भारत के आजादी से 75 वर्ष तक के काल खण्ड के अमृत काल कहल जाता एह काल खण्ड में भोजपुरी भाषा के विकास पर चर्चा के क्रम बतावल आवश्यक बा कि भोजपुरी संस्कृत मातृकुल क भाषा ह. एकरे भीतर भाव अभिव्यक्ति क अद्‌भुत सामर्थ्य बा. विश्व क बरियार, मधुर, सरल आ तरल भाषा क संस्कृति केतना समृद्ध बा की सात समुन्दर पार जायियो के ना बिलाईल। भोजपुरी भाषा क अतीत गौरव शाली. रहल बा. सातवीं शताब्दी से आजादी के दिन तक तमाम संघर्ष के बादो आपन अस्तित्व बचा के रखले बा। जबकी विश्व क सैकड़ो भाषा काल के गाल मे समा गईली सन इहे भोजपुरी भाषा के सामर्थ्य क बडहन प्रमाण बा ।इ भोजपुरीयन क मातृभाषा के साथ–साथे संस्कृति, अस्मिता, आ पहिचान ह. इनकरे रन्ध्र– रन्ध्र मे बा। आजदी के बाद भोजपुरिया भाई बहिन के आशा ही ना पूरा विश्वास रहे की स्वतंत्र भारत में भोजपुरी भाषा के संवैधानिक दर्जा भी मिली आ भोजपुरी राज भी. पर

आशा पर पानी फेर दीहल लोग, इतिहास एह बात क गवाह बा की स्वतंत्रता के लडाई मे, भारत के संमृद्ध बनावला में भोजपुरी लोगन क सबसे बडा योगदान बा भोजपुरी जइसन स्वतंत्र, पूर्ण आ समृद्ध भाषा के उपभाषा. बोली कहल जाता.इ भोजपुरी क्षेत्र, आ भोजपुरियन के सीधे अपमान हवे। भोजपुरी भाषा के चार गो उपभाषा बाड़ीसन – काशिका, डुमरावी, चम्पारणी आ बस्तिया। सबसे बडा दुर्भाग्य बा की भोजपुरी क्षेत्र के साहित्यकार लोग अपनी महतारी भाषा भूला के दोसरा के सवारे सजावे मे लागि गईल.अइसन कवनो सांस्कृतिक प्रक्षेत्र मे ना पावल जाला। भोजपुरी प्रक्षेत्र. के लोग अपनी मातृभाषा के आदर.नईखे करत.इ बात सही बा ।

भाषा बा त संस्कृति बा, भाषा गईल त. कुच्छो नाही बची। सब किछु के. बाद भी भोजपुरी भाषा आपन अस्तित्व बचा के अन्तराष्ट्रीय पहिचान बनवले बा। भोजपुरी के उन्नायक लोग अपनी दम खम की साथे भोजपुरी के विकास खातिर प्रयास रत आ संघर्ष कर रहल बा लोग.आशा बा की नया इतिहास रचाई ।अमृत काल मे भोजपुरी भाषा के विकास पर दृष्टि....समाज में अईसन अवधारणा बनल रहे की भोजपुरी में काव्य ही लिखल जा सकेला. ई काव्य प्रधान भाषा ह। परन्तु एह मिथक के तूरी के आगे बढि चलल बा भोजपुरी। भोजपुरी भाषा मे काव्येतर गद्य साहित्य क विकाश तेजी से हो रहल बा। भोजपुरी प्रकाशन के सौ बरिस नाव के किताब के मुताबिक 1882 से 1992 तक 500 से अधिक भोजपुरी में किताब के प्रकाशन भईल. जवना में 76 कथा साहित्य, 82 नाटक, व 50 निबंध बा 1982 से 2001 तक लगभग दुगुना हो गईल आज पाच हजार से भी अधिक किताबन क प्रकाशन हो गइल बा। आज भोजपुरी भाषा मे गद्य के सगरो विधा मे साहित्य सृजन क होड लगल बा. जईसे निबंध, नाटक, कहानी, संस्मरण, उपन्यास, कथा, आदि खडी बोली समानान्तर भोजपुरी भाषा खड़ी बा हिन्दी के समानान्तर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर चुनौती दे रहल बा भारत के कई विश्व विद्यालय मे भोजपुरी क अध्ययन शुरू हो गईल बा यथा वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय आरा, जयप्रकाश नारायण विश्वविद्यालय छपरा, हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी, दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय गोरखपुर, मुजफ्फरपुर विश्वविद्यालय. आज सैकड़ो छात्र भोजपुरी में शोध कर रहल बाने, केतना के पी. एच. डी. क उपाधि भी मिल गईल बा भोजपुरी क वैश्विक पहिचान बा, मारिशस मे राष्ट्रीय भाषा क दर्जा, फीजी में आधिकारिक भाषा के रूप मे मान्यता, नेपाल के दो राज्य के राजभाषा के रुपमे सम्मान मिलल बा. पत्रकारिता के क्षेत्र में अद्भुत विकाश भईल बा। आज भोजपुरी क्षेत्र के हर जिला भोजपुरी क पत्रिका कवनो न कवनो रूप भे प्रकाशित हो रहल बा मिडिया आ सिनेमा जगत मे भोजपुरी आपन ताकत क एहसास करवले बा।

भोजपुरी सिनेमा क पहिलका फिलिम गंगा मईया तोहे पियरी चढईबे, भोजपुरी भाषा के शीर्ष पर बईठा दीहलस. भोजपुरी फिलिमन क ताता लाग गईल. भोजपुरी भाषा क व्याकरण, शव्दकोष क प्रकाशन भईल. एह तरह से भोजपुरी भाषा क आशावादी भविष्य बा. मानव विकाश क विस्तार जईसे जईसे हो रहल बा भोजपुरी भाषा क भी विकास हो रहल बा. भोजपुरी भाषा गांव से शहर की ओर आपन पाव पसार रहल बा. मजदूर किसान के स्तर बढला से भोजपुरी क स्तर बढ रहल बा. भोजपुरी में विश्व के भाषा क शव्द आत्मसात करे के सामर्थ्य बा.एही कारण एकर भाव प्रकाशनी क्षमता शाक्ति काफी अधिक बा. विदेशज शब्द अईसे घुल मिलि गईल बा की पते ना चलेला की इ भोजपुरी के. ना हउए सन जईसे अचार, चाभी, झरोखा,.भोजपुरी भाषा के सामने कुछ चुनौती भी खडा बा. भोजपुरी के संवैधानिक दर्जा, गांव –गांव में अंग्रेजी स्कूलन क विस्तार, जवना से भोजपुरी के प्रति शंका आ अविश्वास पनप रहल बा. बीच मे एगो अईसन समय आईल रहे की सिनेमा वाला लोग पईसा कमाये खातिर खटिया खडा क दिहले अश्लीलता परोसि के.आज एह सब त्रासदी से भोजपुरी उबर रहल बा. भोजपुरिया अपनी मातृभाषा, संस्कृति के संरक्षण खातिर नव चेतना के साथ आगे आ रहल बा. अतः भोजपुरी भाषा के भविष्य उज्ज्वल बा।

भाषा : भोजपुरी

विश्व में अनेक भाषा अउरी बोली बाटे लेकिन ध्वनि के आधार पर भाषाविद लोग भाषा परिवार के वर्गीकरण कइले बाड़न ।एकरा में सबसे अधिका वैज्ञानिक वर्गीकरण भारोपी–भाषा परिवार के नाम से जानल जाला ।एहमें आर्य भाषा परिवार सबसे पुरान बा। आर्य भाषा परिवार के काल खंड के आधार पर मध्यकालीन आर्य भाषा परिवार के क्रमागत विकास प्रक्रिया में वैदिक संस्कृति, लौकिक संस्कृति, पालि,प्राकृत, अपभ्रंश अउरी हिन्दी के स्वीकार कइल गइल बा ।मध्यकाल के आर्य भाषा में पालि आ प्राकृत के परवर्ती विकास मागधी अउरी अर्द्ध मागधी भाषाई रुप में भइल बाटे ।मागधी भाषा क्षेत्रीय बोलियन के विभाजन पं राहुल सांकृत्यायन जी अर्द्धमागधी,मगही, मल्ली,कोशली, कशिका इत्यादि रुप में स्वीकार कइले बानी जवन भोजपुरी भाषा क्षेत्र के अन्तर्गत नइखे ।भोजपुरी के विस्तार के कारन भोजपुरी नाम अधिक प्रचलित होखे लागल ।भोजपुरी भाषा के मुख्य स्रोत त वैदिक भाषा ही हऽ। ईशोपनिषद में भुंजीय शब्द के मूल धातु भुंज हऽ। एकरा में भोजन,भोज्य (भोज), भुजिया, भूजा, भड़भूजा इत्यादि अनेकानेक शब्दन के क्रमिक विकास जवना क्षेत्रन में भइल उहे भोजपुरी क्षेत्र कहल गइल बाटे। इहो भी मानल गइल बाटे कि हमनी के भोजपुरी लगभग ग्यारह–बारह सौ बरिस पुरानी भाषा हऽ।

सातवीं–आठवीं शताब्दी के लगभग – लगभग भोजपुरी सहित पूरा आधुनिक भारतीय आर्य भाषा के जनम हवुए क्षेत्रीय अपभ्रंश शौरसेनी, मागधी, अर्धमागधी,ब्राचड़,खस से क्रमशः पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, पहाड़ी इत्यादि भाषाई वर्ग जन्मल। अपभ्रंश के मागधी भाषा से बिहारी समूह के तीन क्षेत्रीय भाषा निकलल बाटे। भोजपुरी, मैथिली, मगही– बंगला, उड़िया अउरी असमिया के सगे बहिन हई तथा दूसर आधुनिक भाषा के चचेरी बहिन। अब भोजपुरी,मैथिली, मगही में भोजपुरी के विस्तार के विस्तार सबसे अधिका भइल बाटे भलहीं अभी तक मान्यता नइखे मिलल ।एह तीनों के नाम बिहारी, गियर्सन द्वारा दिहल गइल रहल। ग्रियर्सन के बातन से स्पष्ट बा कि भोजपुरी शब्द के भाषा के रुप में लिखित साक्ष्य रैमन महोदय के रहल। रैमन महोदय १७८९ में भोजपुरी शब्द भाषा के अर्थ में प्रयोग कइले रहीं। एही तरह से ग्रियर्सन, बीम्स, हार्नली, अउरी अधिकतर विद्वान भोजपुरी शब्द के प्रयोग कइले बाड़न , ओहिजुगे रैमन महोदय अउरी सुनीति कुमार चटर्जी भोजपुरिये शब्द का प्रयोग कइले बानी। भोजपुरी शब्द बिहार के शाहाबाद जिला के भोजपुर नामक स्थान के आधार पर प्रचलित बाटे। बंगाल के एशियाटिक सोसाइटी के १७८१ ईस्वी में प्रकाशित जर्नल में अंग्रेज विद्वान लिखले बाड़न कि अकबर के राज्यकाल में बक्सर के निगिचहीं भोजपुर के राजा दलपत सम्राट (अकबर) से पराजित होके बंदी बना लिहल गइलन अउरी बाद में अर्थ दंड के द्वारा मुक्त भइलन। तब दूसरा बेरी उ फिर विद्रोह कर दिहले अउरी उनकर क्रांति अनवरत चलते रहल । परिणामस्वरूप भोजपुर लूटा गइल उनके उत्तराधिकारी प्रताप के शाहजहां फांसी दे दिहलन। ब्लाकमैन ने त आइने अकबरी के अंग्रेजी अनुवाद कइलन जेवना में भोजपुर के राजा दलपत के उज्जैनिह कहल गइल बाटे। उहंवा उल्लेख बाटे कि उज्जैनी के भोजवंश के राजा के राजधानी भोजपुर रहल जवन मालवा आकर बस गइलन। उज्जैन से अइला के कारन ई राजा उज्जैनी भोज कहइलन। आज भी एह राजा लोग के पुरान महल नवरतन के भग्नावशेष भोजपुर

में विद्यमान बा। लेकिन अब पुराना भोजपुर के महत्व समापन के कगार पर हवुए यद्यपि भोजपुर के पास में ही डुमरांव में उज्जैनी भोज के उत्तराधिकारी आजुवो निवास करत बाड़न । पास के गांव बड़का अउरी छोटका भोजपुर आजुवो मौजूद बाटे। भोजपुरी साहित्य धारा के आगे ले जाये के काम गोरखनाथ जी, कबीर जी बखूबी कइले हवुवन । जइसे गोरखनाथ जी की एगो बानगी देखीं....

गुरु कीजै गरिला, निगुरा ना रहिला।
गुर बिन गयान न पायेला रे भाईला।।
अब कबीरदास जी का देखीं..
बोली हमारी पूरब की, हमें लखे नहीं कोय
हमको तो सोई लखौ, जो धुर पूरब का होय।।

इसमें पूरब का अभिप्राय भोजपुरी क्षेत्र की भाषा भोजपुरी से ही है । भोजपुरी, हिन्दी प्रदेश जैसे बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ, झारखंड में सबसे अधिका बोले जाये वाली भाषा ह। एह भाषा के बोले वाला लोगन के संख्या लगभग 20 करोड़ बा। अतः समझल जा सकता कि हिन्दी के बाद अगर सबसे अधिका बोलल जाये वाली भाषा भोजपुरी ही बाटे। भोजपुरी गांव गिरांव, दिल से दिल के भाषा हवुए। भोजपुरी में सूक्ष्म से सूक्ष्म संप्रेषण के क्षमता बाटे। हमनी के आत्मीय भाव के मिसिरी अस मीठ भाषा भोजपुरी में पीढ़ी दर पीढ़ी के लोकगाथा,खेत–खरिहान,परिवार, घर, समाज के गांव के सोंधी मिट्टी के खुसबू के चासनी में सराबोर करे के अपार क्षमता बाटे। इहवां तक कि हमनी के स्वतंत्रता के लड़ाई में भी सम्पर्क भाषा के रुप में सम्पूर्ण भारतीय पैनोरमा के जाग्रत अउरी जाग्रत करे के शंखनाद करे वाली हमनी के आपन मातारी भाषा भोजपुरी ही रहल। भोजपुरी एगो अइसन देसी भाषा ह जवन खुद ही मिठास ह अउरी इनकरा में पुरहर लालित्य भरल बाटे। एकर प्रभाव व विस्तार खाली भारतीय परिसीमा तक सीमित नइखे अपितु एकर विस्तार दूसरा देशन यथा मारीशस, फिजी, सूरीनाम, ट्रीनीडाड, टोबैको, गुआना आदि तक बाटे। भोजपुरी लोकभाषा के रूप में आम जनमानस के कण्ठाहार हवुए । कुछ विशेष रचनाकारन में भोजपुरी के भारतेन्दु चाहे शेक्सपियर भिखारी ठाकुर, महेन्द्र मिसिर, हीरा डोम,बिसराम, रघुबीर नारायण, मनोरंजन प्रसाद सिंह जइसन अउरी बहुत नाम बाटे। भोजपुरी के मान्यता अभी तक ना मिलल ?हमनी के बहुत नीमन से जानत बानी कि आपन देश १५ अगस्त सन १९४७के आजाद भइल रहल। साथ ही हमनी के अपने बंटवारा सहित अउरी तमाम प्रकार के असुविधापूर्ण स्थिति से गुजरे के परल रहल। ओह समय हमनी के उ सोचिये ना पवलीं जा कि हमनी के अदूरदर्शिता रहल या कि जानकारिये ना रहे ।एह तमाम किन्तु परन्तु से होकर के आपन भोजपुरी भाषा खातिर सोचबे ना कइले रहनीं स जवन भारत के अन्य भाषा–भाषी पहिलहीं से ही सोचिके तइयारी में बइठल रहलें । सिर्फ आजादी पाई के अपने से आपन पीठ खूबे थपथपावत रहि गइनीं ।दूसरा ओरी भाषायी बाजी केहू अउरे मारि ले गइल।

अभी भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता के बात दिमागे ना रहल लेकिन हमनी के एगो राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी के राष्ट्र भाषा तक ना बनवा सकनीं जा तब हिन्दी भी विंध्य के ओह पार के दक्षिणी भारत के आगे इचिको ना टिकल अउरी देखीं तुष्टिकरण के तहत पहिले बेर एकहीं संगे सन १९५४ में तीन आदमी के भारत रत्न दियाइल उहो हिन्दी क्षेत्र के एको ना रहलन.....आ मजे के बात ई रहल कि ओह में अइसन आदमी के भी दिहल गइल रहल जवन आदमी हिन्दी के विरोध खातिर कवनो हद तक जाय खातिर तइयार रहल ।सोचीं ओह क्षेत्रीय भाषा– भाषी लोगन के दूरदर्शी विचार धारा के बारे में...जवन आन्दोलन खातिर अभी तक एगो राष्ट्रीय स्तर के आन्दोलन के सामूहिक रुप रेखा तक ना बना पावल कि हिन्दी राष्ट्रभाषा के आपन सही जगह ले सको। ओहितरे भोजपुरी के अनगिनत संगठन बनल बाटे आ लगातार बनि रहल बाटे लेकिन सबकर महत्वाकांक्षा इहे बाटे कि जेवन भी बाड़न उहे बाड़न दूसर केतनो कुछ नीमन करी ओकरा के पहिले त मनबे ना करिहन आ बुझा जाई कि मानी ना आगे जा रहल बाटे तब लंगी मारि के कहीं जरुर ढ़ाहे के

सफल चाहे असफल प्रयास करिहन। भारत के स्वतंत्र होखला के बाद राज्यन के भाषाई आधार पर पुनर्गठन के बात लगातार उठत रहल तब देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु जी राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 के तहत एगो आयोग के नियुक्ति कइलें जवना के नेतृत्व एस फजल अली करत रहलन अउरी साथ में दूगो अन्य सदस्य भी रहलन जेकर नाम रहल....

1 – एस फजल अली, अध्यक्ष

2 –एम पणिक्कर, सदस्य

3 –एच एन कुंजरु ,सदस्य

एही आयोग के तहत भाषाई आधार पर भारत देश के पहिला राज्य आंध्र प्रदेश बनल। रुतब ओह समय में या तो हमनी के घोड़ा बेचि के सुतल रहिंजा चाहे जानकारिये ना रहे।जे ई सब जानत रहल उ दूसर भाषा के लोग रहल..सब भाषा–भाषी रहल लेकिन भोजपुरी वाला कहीं ना लउकलन ।ई बात भी हो सकेला कि अपने भोजपुरी के ही लोग भोजपुरी भाषा के साथ छल कइले होखसु। कुछ ना कुछ त गड़बड़झाला जरुर रहल होई ।हमार कहे के मतलब ई बाटे कि हमनी के पहिला सबसे भारी चूक त उहंवे हो गइल जवन ना होखल चाहत रहल। खैर ओकरा बाद भी हमनी के ओतना प्रखर ना हो सकनीं जा जेतना,तमिल,तेलगू, पंजाबी, उड़िया,मराठी, बंगाला,कन्नड़,मलयालम वाला रहलें ।ऐहूसे भी पीछे रहि गइनीं स। जवन लोग कुछ सोचत रहल कि उनका के राजभाषा हिन्दी से संतुष्टि मिल जाई कि चलऽ हिन्दी भी ठीक बा अउरी एकर प्रमुख वजह ई रहल कि लगभग सभ हिन्दी वाला लोग ही भोजपुरिया भी रहलन जवन आज भी देखल जा सकत बा। गौर करे के बात ई बाटे कि एगो गैर हिन्दुस्तानी जवन अंग्रेज रहलन उनकरा भोजपुरी के बारे में शोध करे के सूझल आ कइलन भी ।एहिसे उनकर नाम आजुवो चल रहल बाटे ,हालांकि अंग्रेज त पूरा देश पर जोर–जुलुम, लूट–खसोट, अत्याचार माने बहुत कुछ कइले रहलन ।लेकिन ई काम अपना फायदा खातिर कइलन कि काहें खातिर कइलन ई उहे जानत होइहन। हं एतना जरुर कइले बाड़न कि भोजपुरी खातिर आजुवो उनकर लिखल किताब खरीद के भोजपुरिया लोग पढ़ रहल बाड़न । कुल मिलाके इहे कहल जा सकता कि खासकर भोजपुरी खातिर त बहुत बड़हन काम कर गइल बाड़न ।ब्रिटिश भारत के बहुभाषाविद जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन (१८५१–१९४१) जवन अंग्रेज रहलन आ ओह जमाना के इंडियन सिविल सर्विस के कर्मचारी, बहुभाषाविद और आधुनिक भारत में भाषाई सर्वेक्षण करे वाला पहिला भाषाविद रहलन। ग्रियर्सन साहब १८७द्व के लगभग आई.सी.एस. के एगो अधिकारी रुप में भारत आइल रहलन ।अपना पुस्तक में ९५२ कवियन के जिक्र भी कइले बाड़न ।आज भी भारत में भाषाविद के रुप में ग्रियर्सन साहब के नाम लिहल जाता । ग्रियर्सन लिंग्विष्टिक सर्वे आफ इंडिया के आविर्भावक के रुप में प्रसिद्ध बाड़न।

अब हम बात करतानी संविधान में शामिल कइल गइल भाषा के बारे में त ई जानल समीचीन प्रतीत होत बा कि हमनी के मूल संविधान में मात्र १४ भाषा के ही समावेस कइल गइल रहे लेकिन जइसे – जइसे दबाव समूह प्रभावी होत गइल ओह दबाव से बचे खातिर के उनकर भाषा के शामिल कइल गइल। जइसे सन १९६७ ईस्वी में एगो भाषा सिंधी के भाषा के सूची में जोड़ दियाइल ।फिर १९९२ में तीन गो अउरी भाषा के कोंकणी,मणिपुरी,नेपाली के जोड़ल गइल। एकबेर फिर से सन २००४ में एकही साथे चार गो भाषा जवना में बोडो,डोगरी, मैथिली, संथाली के शामिल कइल गइल । कुल मिलाके संविधान के आठवीं अनुसूची में अभी २२ गो भाषा शामिल बाटे।

सबसे अचरज के बात त ई बाटे कि नया शामिल सब मतलब आठों भाषा–भाषी लोगन के जनसंख्या जोड़ भी दिहल जाव तबो सब पर भारी भोजपुरी के जनसंख्या बाटे....लेकिन हैरत के संगे–संगे केतना दुर्भाग्य के बात बाटे कि भोजपुरी कहीं दूर–दूर तक नजर नइखे लउकत ,अभी मान्यता के त कहीं नावे–निसान नइखे। हं एगो बात त जरुरे बाटे कि भोजपुरी के चुनाव के समय जरुर स्तेमाल कइल जाला। चुनाव खत्म होखते फिर उहे ढ़ाक के तीन पात वाली बात चरितार्थ हो जाला। कहल जाला कि अग्र सोची सदा सुखी : लेकिन हमनी के त भोजपुरी

के बारे में कबो सोचबे ना कइनीं ।अउर त अउर जवन हिन्दी वाला अगुवा रहलन उनके ई लागत रहल होई चाहे अबहियों भी हिन्दी वाला लोगन के भोजपुरी के प्रति एगो डर लेखा बनल रहेला कि भोजपुरी के मान्यता मिल जाई तब उनकरा अस्तित्व पर संकट आ सकता या उ लोग महत्वहीन हो जइहन ।अरे कुछवू ना त दूसर भाषा के होके भोजपुरी के भी मुख्य पद पर बहुत लोग आजुवो जवन बइठ बाड़न .. ..त भोजपुरी के मान्यता अगर मिल जाई त उनकर बड़का लाभ के पद खत्म हो जाई तब सोचल जाव अइसन लोग कबो चाही कि भोजपुरी के मान्यता मिले ।कदापि ना चहिहन।

भोजपुरी के मान्यता अभी तक ना मिलल ई बहुत दुर्भाग्यपूर्ण बा। एकर अनगिनत कारन बाटे लेकिन प्रखर रुप से ओह चंद बहुरुपिया भांडन के सामाजिक रुप से सार्वजनिक रुप से लिखाये के चाहीं कि एकनी के चेहरा से दूसरका चेहरा के उजागर कइल जा सके। बहुत से अइसन भी तथाकथित स्वघोषित स्वयंभू भोजपुरिया लम्बरदार बाड़न जवन हिन्दी के हिमायती हवुवन अउरी भोजपुरी के चोला ओढ़ि के भोजपुरी के घेरिके अइसे कुंडली मारिके बइठल बाड़न कि दूसर नवोदित भोजपुरी प्रेमी कुछ बेहतर ना कर पावे ।कवनो भाषा से हमनी के कवनो विरोध नइखे लेकिन छद्म भोजपुरियन के बारे में जानल भी अति आवश्यक बाटे।कुछ अइसनो भी भोजपुरिया लोग बाड़न जवन महोत्सव के नाम सिर्फ और सिर्फ भंड़ैती कर के निजी फायदा खातिर भोजपुरी के गढ़हा में ढ़केले के काम कर रहल बाड़न ।कुछ लोगन के वजह से ही आम जनमानस के नजर में भोजपुरी के प्रति सिर्फ अपसंस्कृति हो गइल बाटे आ भोजपुरी के एगो मजाक बना दिहले बाड़ेसन ।ई सब देखी–सुनि के भोजपुरी के प्रति अरुचि पैदा करवा रहल बाड़न। अब समय आ गइल बाटे कि अइसन लोगन पर जवन भोजपुरी भाषा हमनी के मातारि के नुकसान पहुंचा रहल बा चाहे अपसंस्कृति फइला रहल बाटे ओइसन लोगन पर शिकंजा कसल जरुरी हो गइल बाटे ।हमनी के भारत अंग्रेजन के अधीनता में लमहर दुख के दंस सहले बाटे। अंग्रेज मुठ्ठी भर व्यापार करे नाम पर अइलन तब उनका दिमाग में ई ना रहल होई कि भारत पर अधिकारे हो जाई। लेकिन इहंवा के लोगन के आपसी कलह के फायदा उठा लिहलन। ओकरा पहिले दसवीं सताब्दी से ही संक्रमण काल चलत रहल तब गुलाम वंस से लेके अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर के बाद अंग्रेज कब्जिया लिहलन। करोड़न लोग ताकते रही गइल। एगो अंग्रेज लिखले भी बाड़न कि जब हमनी के जीत मिलल तब भारत अइसन देश में अपना हार पर भी हमनी के तरफ से खड़ा होके ताली बजावत रहलन।

कहे के मतलब ई बाटे कि एक बेर फिर से हमनी के मिल के एकजुट होके लड़े के परी जइसे अंग्रेजन के खिलाफ लड़ाई भइल रहे ।अइसे ना होई कि केहू बैरिस्टर के मुख्तार के पद रुपी कवनो पुरस्कार प्रलोभन लेके आन्दोलन के खा जाव ।ई तबे हो सकेला जब भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद,अशफाक, चापेकर बंधु, सुभाष चंद्र बोस, अइसन लड़ाका रहसु...हालांकि कवनो काम होखे चाहे आन्दोलन लियो टॉलस्टॉय आ महात्मा गांधी जी के सत्य–अहिंसा रुपी सत्याग्रह से ही होई।कवनो हिंसा के समर्थन ना कइल जा सकेला। बहुत लोग बाड़न जवन कि भोजपुरी के सिपाही ना एगो सेवक बाड़न त हमनी के धरम बनता कि भोजपुरी के नेंव के सामने ले आवल जाव ।जे शाहंशाह बनि के एयर कंडीसन में बइठि के जवन सभकर समीक्षा कर रहल बाटे उ पहिले आपने समीक्षा करो। एहिजा ओइसन के जरुरत नइखे, जरुरत एगो भोजपुरी के सच्चा सेवक के बाटे। हर गांव से मात्र पांच गो सच्चा भोजपुरिया सेवक समूचा भोजपुरी क्षेत्र से मिल जासु फिर मान्यता मिले से केहू ना रोकि पाई। जवन भी मान्यता खातिर सेवा सर्त होखेला उ सब भोजपुरी लगे बाटे। व्याकरण ,लिपि (लिपिकैथी,देवनागरी), संस्मरण, कविता, कहानी, उपन्यास, गजल का नइखे। ओकरा बाद हम कहतानी कि जब हमनी के देशवे में एगो राज्य में दूगो राज्य बनावल जात बाटे तब एगही के राजधानी में सब भवन वगैरह रहेला त का दूसरका राज्य के राजधानी, भवन नइखे बनत ?

? बिलकुल बनता...तब ओइसहीं मान्यता मिल जाई सब कुछ सम्भव बाटे। कई गो विश्वविद्यालयन में भोजपुरी के पढ़ाई शोध तक हो रहल बाटे। हम सन २०२२ में भोजपुरी में दूगो किताब लिखनी जवना में पहिलका किताब समूचा भारत के पहिला किताब बाटे जवना में १४४ गो पेज बाटे एकर नाम बाटे भोजपुरी के मान्यता देंई ए सरकार सबसे बड़ बात ई बाटे कि ऐह किताब में पूरा कविता भोजपुरी के मान्यता से ही सम्बंधित बाटे। अब दूसरका किताब ''अब गंवुओं में शहर आ गइल'' एहू में १४३ गो पेज आ सब कविता गांव–शहर पर ही बाटे।

लेकिन एह किताब के बारे काहें लिखिहन ना लिखी केहू..लिखि दिहन त उनकर महत्व ना घटि जाई। हम कहतानी कि हमार बहुत नीमन कविता ना हो सकेला लेकिन सीधे प्रश्न एगो किताब के माध्यम से सरकार से त हमहीं न कइले बानी...तबो हमार किताब के समीक्षा ना हो सकेला। हम कहतानी जहिया भोजपुरी मठाधीशी से मुक्त हो जाई तबो एकर मान्यता मिल जाई। भोजपुरी के संविधान के आठवीं अनुसूची में अगर सामिल कर लिहल जाई तब एकर अनेकन फायदा होई। सबसे पहिले त प्रत्येक स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालयों में भोजपुरी के पढ़ाई होखे लागी तब सरकारी के साथे–साथे प्राइवेट नौकरी भी बढ़ जाई । जइसे भोजपुरी के पढ़ाई होखे लागी त लाखन के संख्या में नव युवकन के नौकरी मिली। कापी–किताब, कलम वगैरह के दूकान बढ़ जाई अउरी लोग सामान कीने लगिहें फिर कंपनी बढ़ि जाई तब नित नया रोजगार बढ़े लागी। अउरी जवन अश्लीलता फइल रहल बाटे ओहपर अब सरकार स्वतंत्र नियम बनाके एगो कानून के दायरा में लिया दिही। सेंसर बोर्ड गठित हो जाई।सबसे बड़ बात बाटे कि जवन भोजपुरी आ भोजपुरिया के अधिकार बाटे उ मिले लागी। मान–सम्मान भी भोजपुरिया लोगन के बढ़ि जाई। अब परोक्ष या अपरोक्ष रुप से बहुत लमहर फायदा होई जवन पूरा बतावल भी एतना जल्दी संभव ना हो सकेला।

– राम बहादुर राय
भरौली,बलिया,उत्तर प्रदेश

❀❀❀

परिणाम

पनिघट पर टूटल घड़ा जवन
कबहूँ जल से भरि के लोगन क
प्यास बुझावत रहलें, आजु पैर
से रौंदल जात बाने। दुर्भाग्य
समय क फेर ही एक कारन बा।
काहेंकि कबहूँ बाला की हाथन
से सीने से सटि के सिर पर
पहुँचला की पहिले, कपोलन पर
कुछ बूँद छलकावत
रहलें परन्तु हाय !
भागि रूठि गईल घड़ा फूटि
गईल, दिल टूटि गईल लूटि
गईल जिनिगी क बहार, छिना
गईल इच्छा क दुलार ।
एक दिन–हमार जनम भईल
धूप में तपलीं आगि में पकलीं
कुछ दिन प्यास बुझावत रहलीं
खाली होके भरि जात रहलीं
एक दिन–प्रमदा क पैर
फिसलल उ नीचे गिरली, घड़ा
फूटि गईल, जिवन क सपना
टूटि गईल। अब नया घड़ा जल
ले आवे लें। कुछ बूँद छलकावे
ले, लोगन क प्यास बुझावें लें।
लेकिन उनके ई ध्यान नइखे कि
उनक पूर्वज इहाँ शहीद भईल
बाने।
गिरि पर चढ़ि के इतरा मत।
नीचे भी देख टुकड़न से बात
कर, उनकी दुःख दरद के बूझ,
जवन इनकर हस्र भईल इहे
काल्हि तुहार होई, सबकर
परिणाम एक, एक राह से आना
एक राह से जाना ई संसार
कबहूँ न अपना, अपना ह, कबहूँ
न तुहार अपना ह बस सपना ह।
बस सपना ह।

– जे. एन. वर्मा

'ई कइसन ठाट बनवले बाड़, ए मोती'

आज भोजपुरी साहित्य के 'मोतीश, श्रेय मोती बी.ए. जी के 104वीं जयंती ह। मोती बी.ए. जी के जनम देवरिया जनपद के बरेजी गांव में भइल रहे। पढ़ाई– लिखाई काशी हिंदू विश्वविद्यालय से भइल। आ बनारस में जवन साहित्यिक माहौल मिलल ऊ 'पत्रकार' मोती बी.ए. के भारतीय सिनेमा में भोजपुरी के प्रवेश करावे वाला पहिला गीतकार बनावे में मदद कइल।मोती बी.ए.जी के पहचान खाली पत्रकारिता, गीतकार, साहित्यकार तक सीमित कइल उहां के साथे अन्याय होई। ऊहाँ के व्यक्तित्व के विशालता, व्यापकता के कवनो सीमा नइखे। एगो सुयोग्य शिक्षक, अनुवादक, निबंधकार, अभिनेता, किसान के रूप भी एही में समाहित बा। ऊहाँ के एगो मुक्तक बा–

'ई कइसन ठाट बनवले बाड़, ए मोती
कवन रोजगार उठवले बाड़, ए मोती
बिद्ध करवा के सजी देंहि उहो हँसि हँसि क
उनके अंगे जो लगवले बाड़, ए मोती'

आजादी के लड़ाई, अंगड़ाई ले रहे। अंग्रेजन के खिलाफ पूरे देश में माहौल गरम रहे। ओही दौर में मोती जी भोजपुरी भाषा में क्रांतिकारी गीत रच के आपन आपन भूमिका निभावत रहीं–

'भोजपुरियन के हे भइया का समझेला
खुलि के आवा अखाड़ा लड़ा दिहे स
तोहरी चरखा पढ़वले में का धईल बा
तोहके सगरी पहाड़ा पढ़ा दिहे स'

अइसन क्रांतिकारी गतिविधियन से कई बार अंग्रेजी सरकार मोती जी के गिरफ्तार कइलस। जेल भेजलस। मोती बी.ए. होखे के मतलब मोटा–मोटी इहे समझीं कि ऊहाँ के एगो व्यक्ति ना अपने आप संस्थान रहनी। ऊहां मंच के शायद पहिला कवि होखब, जेकरा गीत पऽ पीछे बइठल लोग कोरस करत होखे।सिनेमा आ आकाशवाणी में भोजपुरी के दर्ज करावे में ऊहाँ के अहम भूमिका रहल बा। ऊहाँ के गीत कब लोकगीत बन के रच में बस गइलें, इ आजो लोग के पता नइखे। तुलसी विवाह आ मोती बी.ए.जी के गीत एक दूसरे के पूरक बन गइले।जइसे आजु शारदा सिन्हा जी के गीत आ छठ पर्व एक दूसरे में रच–बस गइल बा। ऊहाँ के एगो उस्ताद के रूप में काव्य सृजन खातिर नया कवियन जइसे दूधनाथ शर्मा, श्याम, विचित्रजी, कवि समोसा, कवि अनुरागी, कवि भालचंद्र जइसन लोग के तैयार कइनी।

करीब साढ़े छव दशक के अपना साहित्यिक यात्रा में ऊहाँ के 80 से ऊपर फिल्म में सैकड़ों गीत लिखनी, हिंदी में 20, भोजपुरी में 8, अंग्रेजी में 3 आ उर्दू में 3 पुस्तक लिखनी।सैकड़ों कवि सम्मेलन में अपना जौहर देखवनी। जानकार लोग तऽ इंहा तक कहेला कि कलकत्ता के कवि सम्मेलन में ऊहाँ के ऊपर मोहर लुटावल गइल रहे। मेघदूत जइसन महाकाव्य के भोजपुरी में अनुदित करनी, लिंकन नाटक के भोजपुरी में अनुवाद कहनी। ओहिजे जापानी हाइकू, अंग्रेजी के सॉनेट से भोजपुरी के पहिला संवाद करावे आ भोजपुरी में ओह के शामिल करे के पहिला प्रयास ऊंहे के रहे।

ऊहाँ के एगो गीत 'महुआबारी' खूबे मशहूर भइल रहे।मोती बी.ए.जी जवना मंच पऽ काव्य पाठ खाातिर जायीं, ओहिजा अनिवार्य रूप से एह 'महुआबारी' के पाठ होखे। श्रोता से ले के मंच पर बइठल कवि लोग के भी इहे डिमांड रहे।मोती बी.ए. जी के साथे कई मंच पर मौजूद रहल कवि लोग एह बात के तस्दीक करेला। जुगानी भाई से ले के, द्विवेदी जी, आचार्य मुकेश जी से हम कई बेर एह 'महुआबारी' के प्रशंसा सुनलें बानी।उनकर लिखल गीत 'असो आइल महुआ बारी में बहार सजनी, आ सेमर के फूल, जनमानस में खूबे लोकप्रिय भइल

रहे। समूचा पूर्वांचल में लोक कलाकार, एह गीतन के आदर के साथे गवलें। 'महुआबारी' भोजपुरी के कालजयी रचना ह। 'महुआबारी' मानव जीवन के एगो आदर्श रूपक बा–

असों आइल महुआ बारी में बहार, सजनी।
कोंचवाँ मातल भुइयां छूवे,
महुआ रसे रसे चूवे
जब से बहे भिनुसारे के बयारि, सजनी।
असों आइल महुआ बारी में...

पहिले हरकां पछुआ बहलि –झारि गिरवलसि पतवा,
गहना–बीखो छोरि के मुंड़वलसि सगरे मँथवा,
महुआ कुछू नाहीं कहले– जइसन परल,ओइसन सहलें,
तबले झांके लागल पुरुवा दुआरि, सजनी।
असो आइल महुआ बारी में...

एइसन नसा झोंकलिस कि गदाये लागल पुलुई,
पोरे–पोरे मधू से– भराये लागल से कुरुई,
महुआ एइसन ले रेंगरइलें, जरी पुलुई ले कोंचइलें,
लागल डाढ़ी–डाढ़ी, डोलिया कहांर, सजनी
असो आइल महुआ बारी में...

गड्डी लागल रब्बी के– लदाइल खरीहनवाँ,
दंबरी खातिर ढहले बाड़े डंठवा, किसनवा।
रंस के मातल महुआ डोले, फुलवा खिरकी से मुँह खोले, घरवां छोड़े के हो गइलिया तयार, सजनी
असो आइल महुआ बारी में...

होत मुन्हारे डलिया–दउरी लेके, गइली सखियाँ
लोढ़े लगली फुलवा जुड़ावे लगली अँखियाँ
महुआ टप–टप फूल चुवावें, लड़के सेल्हा ले ले धावें,
अब त लागि गइल दूसरे बजार, सजनी
असो आइल महुआ बारी मे...

कोंचवा के दूधवा गोदना, गोदावेली
से केहू जानी महुआ के लपसी, बनावेली
केहू भेजि दिहल देसावर – केहू, घरे सरावल चाउर
लागल चढ़े उतरे नसा आ खुमार, सजनी
असो आइल महुआ बारी में...

सैया खातिर बारी धनियां महुअरि पकावेली
केहू बनिहारे खातिर – तावा पर ततावे ली
महुआ बैल प्रेम से खावें, गाड़ी खींचे जोत बनावें
ई गरीबवन के किस–मिस अनार, सजनी
असों आइल महुआ बारी में...

ओखरी में मूड़ी डरलें – मूसर से कुटइलें,
लाटा बनिके बाहर अइलें हाथ–हाथें भइलें
केतना कइले कुरुवानी ! केतना कहीं ई कहानी
बहे अंखिया से लोहुवा के धार, सजनी
असो आइल महुआ बारी में..

दुनिया खातिर त्यागी भइल – जोगी रूप बनवलें,
आपन सम्पति दूनू हाथे सबके लुटवलें
जेतना होला ओतना देलें– बदला कुछू नाहीं लेलें,
करो के कलउ में एइसन उपकार, सजनी
असो आइल महुआ बारी में...

नरम नरम हरिअर हरिअर ओढ़ चदरिया,
फेरु से महुआ दुलहा भइलें बन्हले, पगरिया
जेइसे दिहलें ओइसे पवलें
कवि जी, कविता में ई गवलें
ए संसार में न चलेला उधार, सजनी
असों आइल महुआ बारी में...

जवने हाथे देवऽ पंचे ओ ही हाथ पइबऽ,
जवन जीनिस बोइबऽ तू ओही के ओसइब,
केहू काहें पछताला, केहू काहें घबराला!
एइसन जीनिगी में मिली ना सुतार, सजनी
असो आइल महुमा बारी में...

कोंचवाँ मातल भुइयां छूवे महुआ रस रसें चूवे,

जब से बऽहे भिनुसारे के– बयारि,

सजनी असो आइल महुआ बारी में बहार सजनी३

– मोती बी.ए.

महुआ के केंद्र रखि के मोती बी.ए. जी पूरा जीवन–दर्शन के एह गीत के माध्यम से रखि दिहले बानी। मोती बी.ए. जी, महुआ के गुण के बखान करत– एह के किशमिश बतवले बानी। इ ग्रामीण परिवेश में महुआ के महत्त्व के रेखांकित करत बा। महुआ के चर्चा खाली भोजपुरिये नाहिं बलुक दोसरो प्रदेश के लोक साहित्य में मिलेला। महुआ, आदिवासी आ गंवई खानपान में आजो रचल–बसल बा।

इ गीत धरोहर बा कम से पच्चास गो अइसन शब्द एह गीत में मिली, जवन हाल–फिलहाल प्रचलन में नइखे। लोग भूला, बिसार दिहले बा। मशहूर साहित्यकार जुगानी भाई के मोती बी.ए. जी से आत्मीय संबंध रहल बा। आकाशवाणी से ले के कई मंचन पर ऊहाँ के साथे काव्यपाठ कइले बानी। जुगानी भाई के लगे मोती जी से जुड़ल खूब संस्मरण बा। ऊहाँ से एक बेर हम पूछनी कि रउआ मोती जी के कइसे याद करब, तो ऊहाँ के बतवनी– 1973 में हम किरन मिश्र के साथे बंबई में चित्रगुप्त जी से मिलनी। हमरा खातिर इ आश्चर्य के बात रहे कि परिचय होते चित्रगुप्त जी सबसे पहिले हमरा से मोती बी.ए. के सलामती के बारे में पूछलन। भोजपुरी माटी के मूल स्वभाव गीताई ह। एह बानगी मोती जी एह गजल में देखल जा सकत बा–

हमरे मन में दुका भइल बाटे
चोर कवनो लुका गइल बाटे

कुछ चोरइबो करी त का पाई
दर्द से दिल भरल पुरल बाटे

आँखि के लोरि गिर रहल ढर ढर
फूल कवनो कहीं झरल बाटे

सुधा ढरकि गइल त का बिगड़ल
हमके पीए के जब गरल बाटे

दर्द दिल के मिटे के जब नइखे
चोर झुठहू लगल – बझल बाटे

मोती बीए के एगो किताब बा– 'सेमर के फूल'। एह में भोजपुरी क्षेत्र के वरनन एतना सटीक भइल बा जइसे केमरा में फोटो खींचल होखे। एह में एगो रचना बा 'निझरि गइलें अमवाँ'। एह रचना के तनि देखल जाव–

निझरि गइलें अमवाँ
आइ हो रामा,
निझरि गइलें अमवाँ

ताके पतइया, डॅहके टहनियाँ
कुहुके कोयलिया त निकसे परनवाँ
आइ हो रामा,
निझरि गइलें अमवाँ

सोने के मोजरि, रूपे के टिकोरा
आन्ही के जोगवल, दइब के निहोरा,

एक दिन ऊ आइल ई सगरी बिलाइल
फूटि गइल एइसन कि फूटे करमवाँ
आइ हो रामा,
निझरि गइलें अमवाँ

डाढ़ी में झूलत रहल लटकेना–
सेन्दुरिया, नौरंगिया, पियरका, फुलेना,
वेसरि आ भुलनी, झुमकवा आ हरवा
एक दिन ऊ आइल छोराइल गहनवाँ
आइ हो रामा,
निझरि गइलें अमवाँ

कोमल बदन जब लागल गदाये
सिलवट पर नूने की सँगे पिसाये,
काँचे उमरिया के वैरी बेयरिया
बहुतन के असमय छोड़वलसि जहनवाँ
आइ हो रामा,
निझरि गइलें अमवाँ...

इ लमहर कविता बा। पर, आम के एगो मेटाफर बना के मोती बीए जी दार्शनिक तत्व आ जीवन प्रसंग के बतावे, समझाबे आ बुझावे के कोशिश कइले बानी। इ ऊहाँ के चिंतन के दायरा के बतावे खातिर काफी बा। ऊहाँ के एगो मुक्तक साथे हम एह लेख के समापन करत बानी–

'चले नइखे देत जब एको डेंग फेमिली
कविता में का करी मेटाफर या सिमिली
जियला में कवनो सवाद जब नाहीं बा
त का केहू आम जानो, का जानो इमिली'

भोजपुरी के विलक्षण गीतकार मोती जी के स्मृतियन के बेर–बेर नमन करत बानी।

– डॉ. देवेन्द्र

भोजपुरी रेजिमेंट के निर्माण कइल जाव!

समाचार

‘प्रउत जन-जन तक’

‘प्रउत जन-जन तक’ के उद्घोष के साथ ३ कार्यकर्त्ता सम्मेलन के शुरूआत का दू साल के रोडमैप आ संगठन की मजबूती पर जोर

पटना। प्राउटिस्ट सर्व समाज समिति (PSS) की देख रेख में प्रउत भवन में आयोजित 18–19–20 फरवरी 2026 के तीन दिन के कार्यकर्त्ता सम्मेलन ‘‘प्रउत जनजन तक’’ की उद्घोष के साथ शुरू भइल। एकर उद्घाटन PU के जनरल सेक्रेटरी आचार्य नाभातीता नंद अवधूत जी आ PSS अध्यक्ष प्रधुम्न नारायण सिंह संयुक्त सचिव से कइली। के उपाध्यक्ष रणधीर देव, आचार्य शिवानंद दानी, महासचिव कालू राम सिंह, सरोज पटनायक, विधि सचिव प्रभुनाथ , वित्त सचित मनोज जैन, महिला सचिव, शारदादीदी, आंदोलन सचिव प्रवीण कुमार सिंह, पंचशाखा सचिव आचार्य विनीत देव, पटना के भुक्ति प्रधान आचार्य विनोद–देव, PU के, केन्द्रीय सचिव, आचार्य पुन्येवानंद, मगही, भोजपुरी, अंगिका, आमरा बंगाली, उत्कल, छत्तीसगढ़ी, बघेली, अवधी, नागपुरी, विदर्भ, डोगरी, हरियाणवी सहित ढेरो समाज से आइल महासचिव अउर कार्यकर्त्ता लोगन के गरिमामयी उपस्थिति कार्यक्रम के खास बना वत रहे । प्रउत ‘‘प्रगतिशील उपयोग, तत्व’’ के व्यापक प्रचार प्रसार के, उत्साह की साथ सामूहिक संकल्प लिहल गइल । वैज्ञानिक विकास के नया आयाम की साथे दोसरा ग्रह पर जाये के खातिर बेताब मानव आज मानव गरिमा के रौंद रहल बा, एह पर चिता प्रकट करत मानवीय मौल नीति आ नव्यमानवतावाद के जरिये वर्तमान सामाजिक आर्थिक, नैतिक आ पर्यावरणीय संकटन के समाधान खातिर प्रउत दर्शन प्रासंगिक बा। एकरे माध्यम से न्याययुक्त शोषणमुक्त समतामूलक समाज समग्रता के समेटते, बनावल जा सकत बा। कार्यक्रम की पहिला दिने दूनू सतन में आर्थिक संरचना से ले के नेतृत्व के विभित्र पहलू पर

विस्तार से चर्चा की बाद कई एक प्रस्ताव पारित भइल ।दूसरा दिने पहिला सत्र में संगठन के व्यापक विस्तार आ ठोस मजबूती खातिर दू साल के रोड मैप, नीति आ भावी कार्यक्रम के स्थायित्व देबे बदे प्रस्तुत भइल।एह रोड मैप की अनुसार कार्यक्रम की निरंतरता तथा सफलता के समीक्षा आ नीति तथा योजना के अनुरूप संगठन के मजबूती पर विस्तार से चर्चा भइल ताकि समाज के हर वर्ग तक प्रउत के प्रभावी रूप से पहुँचावल जा सके ।एह अवसर पर दूसरा सत्र में भोजपुरी समाज, मगही समाज, अंगिका, छत्तीसगढ़ी, मिथिला, उत्कल, कौशल, बघेली, विदर्भ, डोगरी आदि समाजन के महासचिव आपन प्रगति रिपोर्ट पेश कइलें आ अपना–अपना समाज के घोषणा पत्र, पेपर–पत्रिका, कार्यालय, खाता आदि के जानकारी दिहलें।हर समाज की ओर से संगठन की मजबूती के केन्द्र में राखि के अणामी 2 साल खातिर समय बद्ध कार्यक्रम के घोषणा भइल, आ सब लोग जनजागरण अभियान, प्रशिक्षण कार्यक्रम आ संगठन विस्तार खातिर सहकारिता पर जोर देत कार्ययोजना पर सहमति व्यक्त कइलें । वातावरण बेहद प्रेरणादायक, अनुशासित का उद्देश्य परक रहल।

समाचार

शत प्रतिशत रोजगार आ आर्थिक समानता के ले के प्राउटिस्ट सर्व समाज के धरना

पटना। प्राउटिस्ट सर्व समाज समिति के तत्वाधान में सामाजिक समरसता आ आर्थिक न्याय खातिर गर्दनीबाग में एक दिन के धरना–प्रदर्शन कइल गइल। एह अवसर पर देश भर में विद्यमान 44 सामाजिक–आर्थिक इकाइयन में अधिकांश समाजन के कार्यकर्त्ता, सामाजिक प्रतिनिधि, बुद्धिजीवी आ जुवा वर्ग के एगो नया उमंग के साथ सामाजिक आर्थिक न्याय खातिर आर्थिक लोकतंत्र के मांग उठल। जे पटना के पत्र–प्रतिनिधि आ आम लोगन खातिर कौतूहल के विषय रहल। एह मौका पर अपना सम्बोधन में पीएसएस के अध्यक्ष प्रद्युम्न नारायण सिंह सामाजिक न्याय पर विस्तार से चर्चा करत कहलीं कि जब तक हर नागरिक के वक्त के अनुरूप जीवन के हर मूलभूत जरूरत पूरा नइखे होत तब तक सामाजिक–न्याय के बात बेमानी बा ।शोषण आ अन्याय के खात्मा खातिर आर्थिक लोकतंत्र के वकालत करत कहलीं कि जब तक हर युवा के रोजगार, हर किसान के आत्म निर्भरता, हर मजदूर के गरिमापूर्ण जीवन, हर बुद्धिजीवी के चिंतन के स्वतंत्रता ना मिली आ पूंजीवाद पर नकेल ना लागी तबले इ खयाली पोलाव रहि जाई ।उहाँ का दुनिया में बेशुमार सम्पदा आ वैज्ञानिक विकास के नया–नया आयाम के बावजूद गरीबी, भूखमरी, अशिक्षा, वैमनस्यता, आ वर्चस्व खातिर लडाई जइसन असंवेदनशीलता के आड़े हाथ लेत विकल्प के रूप में पूँजीवाद आ साम्यवाद के ढहत ठिला पर प्रउत व्यवस्था के भव्य महल सबका खातिर समान रूप से खड़ा करे खातिर समाज आंदोलन के उद्घोष कइलीं। एही क्रम में महासचिव श्री कालूराम सिंह कहली कि पूंजीवादी तंत्र अपसंस्कृति आ घोर भोगवादी सोच के जरिये घर–घर में वैमनस्यता आ विभाजन के इबारत लिख रहल।जनता के वोट देके आपन प्रतिनिधि चुनला पर सवाल खड़ा करत कहलीं कि विधायक, सांसद पार्टीन के प्रतिनिधि बाड़े ना कि जनता के । आ पार्टी पूँजी पती के ।एह तरे राजनैतिक लोकतंत्र के हकीकत बतावत उहाँ का आर्थिक लोकतंत्र के जोरदार वकालत कइलीं। धरना की बाद एगो प्रतिनिधिमंडल राष्ट्रपति के सम्बोधित ज्ञापन दिहल जवना में शत प्रतिशत रोजगार के संवैधानिक गारंटी, कृषि के उद्योग के दरजा, आयकर के खात्मा अमीरी रेखा निर्धारण के जरिये संसाधनन के न्याय पूर्ण वितरण तथा सम्मानजनक जीवन खातिर जनहितकारी आर्थिक व्यवस्था लागू करे क मांग कइल गइल। धरना सभा के सम्बोधित करे वाला लोगन में मुख्य रूप से आचार्य रणधीर देव, आचार्य शिवानंद दानी दूनू उपाध्यक्ष, सरोज पटनायक, मनोज जैन, विनीत देव आचार्य, आचार्य विनोद देव, युगल किशोर, रोहतास सिंह, प्रभुनाथ सिंह यादव, रवीन्द्रनाथ यादव, राजीव, कमलेश, शारदा दीदी, विश्वजीत, बब्बन विद्रोही आदि रहें।संचालन प्रवीण कुमार कईलें ।

समाचार

उपभोग सभ्यता के थका देला, उपयोग गरिमा देला

छपरा ।प्रउत यूनिवर्सल (PU) के तत्वाधान में आयोजित पाँच दिवसीय उपयोग प्रशिक्षण शिविर (UTC) दिनांक 15–19 दिसम्बर के दौरान इ बात उभर के सामने आइल कि उपभोग सभ्यता के दम घोंट के थका देला जबकि उपयोग के प्रउत नीति नव्य मानवता के भित्ति पर संतुलन की साथे गरिमामय भविष्य–संजो आ सहेज के प्राणवान बना देले। एह अवसर पर अपना सम्बोधन में दिल्ली सेक्टर के CS आचार्य पुण्येषानंद अवधूत प्रउत के उपयोग नीति के चर्चा करत कहलीं कि उपयोग में भी योग बा, एकर आधार अध्यात्म आधारित भक्ति बा ।एकरा के सही अर्थ में ना बुझला से दुनिया के दुर्दशा हो रहल बा। दुनिया में तमाम ससाधनन के प्रचुरता बा, कमी नइखे ।कमी बा त सही नीति के ।आज की दुनिया के उपभोग वादी नीति के ठीक विपरीत उपयोग के नीति अपनावे के होई जहाँ नैतिकता, तर्कसंगतता, मानवीय मूल्यबोध के स्थापित करे खातिर प्रकृति, संसाधन, धन, बुद्धि, शक्ति के अधिकतम आ न्यायसंगत उपयोग बिना अपव्यय आ शोषण के सम्भव बा ।

एह मौका पर ग्लोबल फेडरेशन सचिव आचार्य कृपा मयानंद अवधूत उपयोग आ उपभोग के तुलनात्मक चर्चा करत कहली हर मनई की न्यूनतम आवश्यकता की गारंटी के बाद उपभोग में जवन अपव्यय के महिमा बा ओके खतम करे के पड़ी आ जरूरत के अनुसार उपयोग होखे के चाही। उहाँ का कहली कि लालच में आके संसाधन की दोहन के बदले विवेक आ नैतिकता के परिचय देत संसाधनन के अधिकतम उपयोग आ संरक्षण होखे के चाही। उहाँ का दावा की साथ कहली कि जमीन, जल, ऊर्जा, उद्योग, मानव प्रतिभा सबकर अधिकतम उपयोग के जरिये सामाजिक अपराध के तत्काल रोकल जा सकत बा। फेडरेशन सचिन दिल्ली सेक्टर आचार्य प्रियतोषानंद अवधूत आत्म निर्भर सामाजिक आर्थिक इकाइयन के जरिये विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था के वकालत करत कहली कि सेवा भावी, शोषण रहित नैतिक सद्विप्र नेतृत्व से ही उपयोग के नीति सफल हो सकत बा। आज की वैश्विक चुनौती के समाधान खातिर उपयोग नीति के चर्चा करत भाषण कला में माहिर बुद्धिजीवी संघ सचिव आचार्य सत्यव्रतानंद जी गरीबी के दूर करे खातिर न्यूनतम आवश्यकता की गारंटी के साथे रोजगार के सृजन, रोजगार खातिर श्रम आ बुद्धि के अधिकतम उपयोग पर्यावरण संकट खातिर जरूरत आधारित उत्पादन, अंधा धुंध उपभोग पर रोक, आर्थिक असमानता खत्म करे खातिर अतिसंचय नियंतत्र आ सहकारिता के वेवस्था तथा मानसिक असंतोष दूर करे खातिर भोग नाही, उद्देश्य परक जीवन के ललक पर विस्तार से चर्चा कइली । उपयोग के साक्षात प्रतिमूर्ति वयोवृद्ध युवा उमंग DLO भागलपुर आचार्य कृपानद अवधूत जी हर समाज से आइल प्रतिभागी लोगन के समय, क्षमता के उपयोग खातिर विशेष रूप से सजग आ सचेष्ट रहलीं। एह क्रम में पांचजन्य, प्रभात फेरी, सूक्ष्म व्यायाम, आसन, कौशिकी तांडव, कक्षा, प्रदर्शन, ओरेटरी समेत हर दिनचर्या के व्यवस्थित रूप देबे में UPSF के राष्ट्रीय सचिव जिज्ञासुदेव के साथ इहां के अग्रणी भूमिका रहे। उपयोग प्रशिक्षण शिविर 'यूटीसी' भोजपुरी क्षेत्र में भइल। इ हमनी खातिर सौभाग्य के बात बा। समापन समारोह में धन्यवाद ज्ञापन के समय हरेकृष्ण गांधी आ कुंदन सिंह संयुक्त रूप से कहलें ।ये मौका पर सैंकड़न के संख्या में लगभग हर समाज से आइल प्राउंटिस्ट लोगन में मुख्य रूप से आचार्य विनोद जी, आचार्य विनीत जी, रविकर देव, कमलेश जी, प्रवीण कुमार सिंह, रवीन्द्र यादव, बब्बन विद्रोही, जय प्रकाश जी, सुरेश कुमार, नंदकिशोर, कु. रंजना, ओमप्रकाश देव आदि रहे ।

भोजपुरी राज्य बनावल जाई, भ्रष्टाचार मिटावल जाई।
रोटी, कपड़ा, घर, दवाई - शिक्षा, काम, दियावल जाई॥

भोजपुर प्रदेश
काशीराज

प्रगतिशील भोजपुरी समाज (केन्द्रीय) द्वारा प्रस्तावित

प्रगतिशील भोजपुरी समाज का ओर से जनहित में जारी

RNI No.- 9928/65

ANDSLITE

Solar LED Home Lighting I Solar LED Lantern I LED Bulbs I LED Torches

ADD SUN TO your LIFE

Andslite is dedicated to brighten up your lives. For years, we've been creating effective ways to harness solar energy to provide you cost-effective electricity. Another effort in this course are Andslite provide quality and economical products.

UNIQUE FEATURES

- Energy efficient lighting products
- Strong ABS body & PC glass
- High power focused torch lights for long distance coverage
- Long backup rechargeable Study lights
- Solar lanterns and emergency lights for lighting homes & offices, ets.
- More than 50 LTD lighting products with 1 year warranty*

Manufactures of :

- **LED** Solar Home Lights and Lanterns
- **LED** Study Ligts
- **LED** Torch Lights & Head Lights
- **LEDAC** Bulbs & USB Laptop Light
- **Solar** Modules (3 Wp to 300 Wp)

ANDSLITE

AN ISO 9001-2008 CERTIFIED COMPANY

Scan to watch our fiim

Registered Office : 103, 2nd Floor, FIF, Patparganj Industrial Area, Delhi - 110092, INDIA I Tel.: + 91-11-22156913 I Fax : +91-11-42141253
Manufacturing Unit : Plot No. 1D-47, 48, 49, 50, 51, Sector - 7, IIE, SIDCUL, Haridwar - 249403 (UK), INDIA
Tel : +91-1334-239231, +91-9997739011 I Fax : +91-1334-239823
Mob -1334-239231, +91-9997739011 I Fax : +91-1334-239823
www.andslite.com I andslite.led@gmail.com I Call : 1800 11 6913 (Toll Free)

Like Us on Facebook
facebook.com/AndslitePvtLtd